मुद्रक :

मेहता फाइन आर्ट प्रेस

२०, वालमुकुन्द मक्कर रोड

(बडाबाजार पोस्टओफिसके सामने)

कलकत्ता-७

प्राप्तिस्थान :

श्री श्वे. स्था. गुजराती जैन संघ

२०, पोलोक स्ट्रीट,

कलकत्ता—१

दो शब्द

'आमार सोनेर वङ्गाल' हमारा स्वर्णिम वङ्गाल कह कर वङ्गाल के निवासी अपनी मातृभूमि के प्रति जो गौरव व सम्मान व्यक्त करते हैं, वह वङ्गभूमि के सर्वथा उपयुक्त है। अपने सहज प्राकृतिक सौंदर्य, चतुर्दिक व्याप्त हरितिमा, पद्मपूरित सरोवरों और शीतल मन्द-समीरण से यह भूमि किस मनुष्य को विमुग्ध नहीं करती। वङ्गाल की रमणीय भूमि में आकर एक बार मनुष्य अपने को सौभाग्यशाली तो अवश्य समझेगा। यह प्रदेश मात्र प्रकृति की क्रीड़ास्थली ही नही, वरन् साहित्य, संगीत व कला का मुख्य केन्द्र है और समस्त भारतका प्रतिनिधित्व करता है। 'जन-मन-गण अधिनायक हे भारत भाग्य विधाता' की जब मधुर स्वरलहरी उठती है तो वंगाल के एक महापुरुष कवीन्द्र रवीन्द्र की स्मृति हो उठती है और वंगाली का स्वाभाविक भाषा-माधुर्य भी हृदय को स्पंदित कर देता है।

वंगाल प्राचीन काल में वैदिक-जैन व बौद्ध संस्कृति का मुख्य केन्द्र था। ढाई सहस्र वर्ष पहले श्रमण भगवान् महावीर ने बारह वर्ष पर्यन्त इस भूमि में घोर तप किया था। जिसकी स्मृति में तत्कालीन जनता ने यहां एक नगर का नाम वर्द्धमान रखा था जो आज भी विद्यमान है तथा वर्द्धमान जीले के रूप में प्रसिद्ध है। पूर्व वर्द्धमान और उसके आस-

मुद्रक :

मेहता फाइन आर्ट प्रेस

२०, बालमुकुन्द मक्कर रोड.

(बड़ाबाजार पोस्टऑफिसके सामने)

कलकत्ता-७

प्राप्तिस्थान :

श्री श्वे. स्था. गुजराती जैन संघ

२०, पोलोक स्ट्रीट,

कलकत्ता—१

दो शब्द

आमार सोनेर बङ्गाल' हमारा स्वर्णिम बङ्गाल कह कर बङ्गाल के निवासी अपनी मातृभूमिके प्रति जो गौरव व सम्मान व्यक्त करते हैं, वह बङ्गभूमि के सर्वथा उपयुक्त है। अपने सहज प्राकृतिक सौंदर्य, चतुर्दिक व्याप्त हरितिमा, पद्मपूरित सरोवरों और शीतल मन्द-समीरण से यह भूमि किस मनुष्य को विमुग्ध नहीं करती। बङ्गाल की रमणीय भूमि में आकर एक वार मनुष्य अपने को सौभाग्यशाली तो अवश्य समझेगा। यह प्रदेश मात्र प्रकृति की क्रीड़ास्थली ही नहीं, वरन् साहित्य, संगीत व कला का मुख्य केन्द्र है और समस्त भारतका प्रतिनिधित्व करता है। 'जन-मन-गण अधिनायक हे भारत भाग्य विधाता' की जब मधुर स्वरलहरी उठती है तो बंगाल के एक महापुरुष कवीन्द्र रवीन्द्र की स्मृति हो उठती है और बंगाली का स्वाभाविक भाषा-माधुर्य भी हृदय को स्पंदित कर देता है।

बंगाल प्राचीन काल में वैदिक-जैन व बौद्ध संस्कृति का मुख्य केन्द्र था। ढाई सहस्र वर्ष पहले श्रमण भगवान् महावीर ने बारह वर्ष पर्यन्त इस भूमि में घोर तप किया था। जिसकी स्मृति में तत्कालीन जनता ने यहां एक नगर का नाम वर्द्धमान रखा था जो आज भी विद्यमान है तथा वर्द्धमान जीले के रूप में प्रसिद्ध है। पूर्व वर्द्धमान और उसके आस-

पास के प्रदेश को राढ़-भूमि कहते थे। जैनागमों में इसका अनेक स्थानों पर वर्णन है। यहां जैनधर्म का प्रचार भगवान पार्श्वनाथ के भी पूर्व था। महावीर के बहुत काल पश्चात् भी यहां जैनधर्म का अच्छा प्रचार था। लोग मद्य-मांस का प्रयोग नही करते थे। परन्तु कालान्तर मे परिस्थितियां बदली और इस प्रान्त में जैनधर्म का ह्रास हो गया। सराक जाति जो बङ्गाल की एक आदिवासी ज़ाति है, आज भी बंगाल में जैन-धर्मकी प्राचीनताको प्रमाणित करती है। सराक आज भी पार्श्व-नाथ भगवान को मानते तथा पूजते है तथा निरामिष भोजी है।

यद्यपि बंगाल में जैनधर्मावलम्बी न रहे थे परन्तु अनेक जैनीय तीर्थ बंगभूमि के आसपास ही थे अतः जैन यात्री प्रायः यहा यात्रार्थ आते थे अतः सम्पर्क बना ही रहता था।

प्रायः तीनसौ वर्ष पूर्व प्रसङ्गवश नबाबी प्रसिद्ध राजधानी मुर्शिदाबादमें नागोर व किशनगढ़के ओसवाल परिवार आये और कालांतर में यही बस गये। शनैः शनैः इन्होंने उन्नति की और इस प्रात के मुख्य श्रीमान् गिने जाने लगे।

श्री मानकचंदजी गेलड़ा, जगत सेठ, महताव सिंहजी, राय सेठ धनपति सिंहजी व लक्ष्मीपत सिंहजी दुगड़ आदि मारवाडी ओसवाल सज्जनों ने यहां जैनधर्म का बहुत प्रचार किया।

अंग्रेजी शासनकाल में अंग्रेजों ने कलकत्ता महानगर बसाया। कालांतर में यह नगर व्यवसाय का मुख्य केन्द्र हो

गया और यहा व्यापारिक उन्नति होती ही गई। अतः मारवाड, गुजरात, काठियावाड, यु० पी०, सी० पी० व पञ्जाब आदि से हजारों लोग व्यापारार्थ आये और बसते गये। इससे जैनधर्म की जाहोजलाली बढ़ती गई। अपनी २ मान्यतानुसार इन लोगों ने अनेक श्वेताम्बर, दिगम्बर मन्दिर, दादाबाडियां व उपाश्रय आदि निर्माण कराये। श्री बद्रीदासजी जौहारी द्वारा निर्मापित शीतलनाथ भगवान का जिनालय कलकत्ते के दर्शनीय स्थानों में से एक है और प्रतिदिन हजारों जैनेतर दर्शनादि का लाभ लेते हैं।

जब जैन लोग यहाँ बस गये और मार्गवर्ती उतनी कठिनाइयां भी नहीं रही तो जैन साधुओं का आगमन भी होने लगा। परिणामस्वरूप उस प्रदेश में जहाँ जैनधर्म लुप्त सा था, पुनः विकसित होता गया।

प० मुनि श्री प्रतापमलजी म० व शा० वि० हीरालालजी म० आदि मुनिगण घोर पाद विहारी हैं। आज तक मार्गवर्ती कठिनाइयां तथा अपरिचित क्षेत्र उनकी जनकल्याण की भावना को नही रोक सके। अपरिचित क्षेत्रों में विहार करना इनकी साध रही है तथा कठिनाइयाँ झेलना जीवन का लक्ष्य। इसी जनकल्याण की भावना ने इन्हें बगाल जैसे प्रदेश में विहार करने के लिये प्रेरित किया। जैन साधु का जीवन कितना कठिन है, यह तो वही जान सकता है जो जैन साधुओं के आचार-विचार से परिचित हो। पैसा न रखना, सचित्त पदार्थ

पास के प्रदेश को राढ़-भूमि कहते थे। जैनागमों में इसका अनेक स्थानों पर वर्णन है। यहां जैनधर्म का प्रचार भगवान पार्श्वनाथ के भी पूर्व था। महावीर के बहुत काल पश्चात् भी यहां जैनधर्म का अच्छा प्रचार था। लोग मद्य-मांस का प्रयोग नही करते थे। परन्तु कालान्तर में परिस्थितियां बदली और इस प्रान्त में जैनधर्म का ह्रास हो गया। सराक जाति जो बङ्गाल की एक आदिवासी ज़ाति है, आज भी बंगाल में जैन-धर्मकी प्राचीनताको प्रमाणित करती है। सराक आज भी पार्श्व-नाथ भगवान को मानते तथा पूजते है तथा निरामिष भोजी है।

यद्यपि बंगाल में जैनधर्मावलम्बी न रहे थे परन्तु अनेक जैनीय तीर्थ बंगभूमि के आसपास ही थे अतः जैन यात्री प्रायः यहां यात्रार्थ आते थे अतः सम्पर्क बना ही रहता था।

प्रायः तीनसौ वर्ष पूर्व प्रसङ्गवश नबाबी प्रसिद्ध राजधानी मुर्शिदाबादमें नागोर व किशनगढ़के ओसवाल परिवार आये और कालांतर में यही बस गये। शनैः शनैः इन्होंने उन्नति की और इस प्रांत के मुख्य श्रीमान् गिने जाने लगे।

श्री मानकचंदजी गेलडा, जगत सेठ, महताव सिहजी, राय सेठ धनपति सिंहजी व लक्ष्मीपत सिहजी दुगड आदि मारवाडी ओसवाल सज्जनों ने यहां जैनधर्म का बहुत प्रचार किया।

अंग्रेजी शासनकाल में अंग्रेजों ने कलकत्ता महानगर बसाया। कालांतर में यह नगर व्यवसाय का मुख्य केन्द्र हो

गया और यहा व्यापारिक उन्नति होती ही गई। अतः मारवाड, गुजरात, काठियावाड, यु० पी०, सी० पी० व पञ्जाब आदि से हजारों लोग व्यापारार्थ आये और बसते गये। इससे जैनधर्म की जाहोजलाली बढ़ती गई। अपनी २ मान्यतानुसार इन लोगों ने अनेक श्वेताम्बर, दिगम्बर मन्दिर, दादाबाडिया व उपाश्रय आदि निर्माण कराये। श्री बद्रीदासज़ी जौहारी द्वारा निर्मापित शीतलनाथ भगवान का जिनालय कलकत्ते के दर्शनीय स्थानों में से एक है और प्रतिदिन हजारों जैनेतर दर्शनादि का लाभ लेते है।

जब जैन लोग यहाँ बस गये और मार्गवर्ती उतनी कठिनाइयाँ भी नहीं रही तो जैन साधुओं का आगमन भी होने लगा। परिणामस्वरूप उस प्रदेश में जहाँ जैनधर्म लुप्त सा था, पुनः विकसित होता गया।

प० मुनि श्री प्रतापमलजी म० व शा० वि० हीरालालजी म० आदि मुनिगण घोर पाद विहारी हैं। आज तक मार्गवर्ती कठिनाइयाँ तथा अपरिचित क्षेत्र उनकी जनकल्याण की भावना को नहीं रोक सके। अपरिचित क्षेत्रों में विहार करना इनकी साध रही है तथा कठिनाइयाँ झेलना जीवन का लक्ष्य। इसी जनकल्याण की भावना ने इन्हें बगाल जैसे प्रदेश में विहार करने के लिये प्रेरित किया। जैन साधु का जीवन कितना कठिन है, यह तो वही जान सकता है जो जैन साधुओं के आचार-विचार से परिचित हो। पैसा न रखना, सचित्त पदार्थ

न खाना, किसी के निमंत्रण पर आहारार्थ न जाना आदि नियमों की कसौटी तो अपरिचित क्षेत्र ही होता है अत सचमुच ये मुनिगण अभिनन्दनीय है ; क्योंकि बंगाल तक आने में इन्होंने अनेक परिषह सहन किये हैं। अनेक रात्रियां वृक्षों के नीचे भूखे पेट ही व्यतीत की है। प्रस्तुत पुस्तक के पढ़ने मात्र से इनके इस तपोमय जीवन की झलक प्राप्त हो सकेगी।

इन मुनियों के आगमन से बंगाल मे अत्यन्त धर्म-जागृति हुई। कलकत्ता जैसा व्यावसायिक नगर जहाँ व्यक्ति मशीन की तरह काम मे लगा रहता है तथा जहाँ भोग और विलास के सर्व साधन उपलब्ध है, वहां तप-त्याग की मन्दाकिनी प्रवाहित होना सचमुच आश्चर्य का विषय है।

'जादू वही जो सर पर चढ़ कर बोले' —व्यक्तित्व वही जिसकी कीमत जन-जन करें। आपके सम्पर्क में यहाँ सहस्रों व्यक्ति आये और प्रभावित हुए। राज्यपाल और मंत्री, विद्वान व राजनीतिज्ञ सबों ने आपके त्यागमय जीवन के प्रति श्रद्धांजलियां अर्पित की है।

कलकत्ता, झरिया, सैंथिया टाटानगर आदि में जो धर्मोद्योत हुआ तथा जा जनहितकारी कार्य हुए, वे सदा स्मरण रहेंगे।

कलकत्ता
१५-६-५५
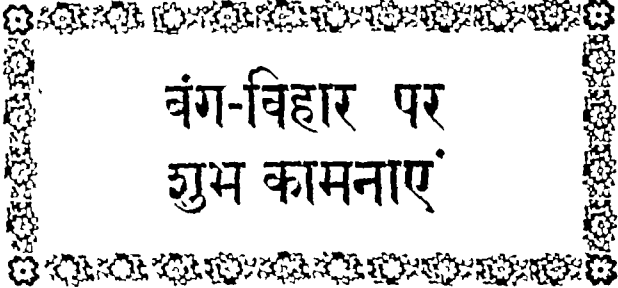
मदन कुमार मेहता

बंग - विहार

निम्न महानुभावोंने पुस्तक-प्रकाशन में आर्थिक योग देकर जो सहयोग प्रदान किया है; एतदर्थ हम आभारी हैं।

(१)	श्री सेठ	विमलप्रसादजी जैन	खरखरी कोल्यारी	३०१)
(२)	,,	भैरूदानजी तोलारामजी चोथरा,	रामपुरहाट	२०१)
(३)	,,	कानजी पानाचंद	कलकत्ता	१०१)
(४)	,,	केशवजी शवचंद	,,	१०१)
(५)	,,	मणिलाल नरसिंहदास घेलाणी	,,	१०१)
(६)	,,	गोविन्दरामजी भीखमचंदजी भंसाली	,,	१०१)
(७)	,,	मूलचंदजी लुनिया	,,	१०२)
(८)	,,	जतनमलजी केशरीमलजी बच्छावत	,,	१०१)
(९)	,,	धूलचंदजी सेठिया	,,	१०१)
(१०)	,,	गिरधरभाई हंसराज कामाणी	,,	५१)
(११)	,,	प्रभुदास भाणजी	,,	५१)
(१२)	,,	जगजीवन शिवलाल देसाई	,,	५१)
(१३)	,,	रतीलाल घेलाणी	,,	५१)
(१४)	,,	डूँगरमल भँवरलाल दशाणी	,,	५१)
(१५)	श्रीमती	रंभाबाई, मातुश्री सेठ लालचंदजी पारख,	सैंथिया	५१)

—प्रकाशक

बंग-विहार पर शुभ कामनाएं

(१)

श्रमणसंघ के प्रधानाचार्य पूज्य श्री आत्मारामजी म०, लुधियाना

मंत्री, श्री जैन वर्द्धमान पुस्तकालय,

सैंथिया (बंगाल)

आपका प्रकाशित पत्रक मिला। ७ मार्च को "विश्व-शान्ति समारोह" के उपलक्ष में मनाये गये आयोजन में जो प्रस्ताव पास किये गये, उन्हें पढ़ कर महति प्रसन्नता हुई।

आपके यहां धर्म-ध्यान का ठाठ लग रहा है, पढ़ कर प्रसन्नता होती है।

१५-३-५४ गुजरमल प्यारेलाल जैन

(२)

श्रमणसंघके प्रधानमंत्री श्री आनन्द ऋषि जी म०, रोहिट (मारवाड)

मंत्री, श्री श्वे० स्था० जैन संघ,

कलकत्ता

आपका पत्र मिला। मुनिश्रियों के विराजने से अनेक प्रकार के त्याग तप-नियम के साथ-साथ सामाजिक, धार्मिक, सराहनीय कार्य हुए यह पढ़ कर सन्तोष हुआ।

बंगाल देश में धर्म-ध्यान का अच्छा प्रसार हुआ यह पढ़कर प्रसन्नता हुई।

१५-२-५३

(३)

स्था० मंत्री मुनि श्री किस्तूर चन्द जी म , जावरा

मानद मंत्री, मगनलाल प्रागजी,

झरिया।

बंगाल बिहार में इस प्रकार के ठोस धर्म प्रचार पर तथा दीक्षा महोत्सव पर मेरी हार्दिक शुभ कामना है।

मंत्री, सुजान मल मेहता।

(४)

सहमंत्री मुनि श्री प्यारचन्द जी म०, वक्ता मुनि श्री नाथूलाल जी म०, ललित वक्ता मुनि श्री रामलाल जी म०, साहित्यरत्न पं० मुनि श्री केवलचन्द्र जी म०, सा० र० मोहन मुनि जी म०, सा० र० सोहन मुनि जी म० सा० र० विमल मुनि जी म०

महावीर भवन, इन्दौर

३१-१-५५

श्रीमान् जे० पी० पुजारा,

खड़गपुर (बंगाल)

आपके वहां विराजित मुनिवरों को यहां विराजित सर्व मुनि याद कर वन्दन्-नमन् सुख शान्ति पूछते है और आपके प्रभाव पूर्ण प्रचार की प्रशंसा करते है।

भंवर लाल धाकड, कोषाध्यक्ष।

(५)

कविवर्य मुनि श्री अमरचन्दजी म०,

जैन भवन, लोहा मण्डी, आगरा।

सेठ देव चन्द अमोलक चन्द,

कतरासगढ़।

मुनिश्रियों ने कठोर विहार करके जो धर्म प्रचार किया है वह सदा के लिये अभिनन्दनीय रहेगा। सभी संतों ने इस पर बहुत-बहुत प्रसन्नता प्रगट की है।

१-६-५४

रामधन "विशारद"

पू० मुनि श्री प्रतापमलजी म० सा०

का

संक्षिप्त जीवन परिचय

शरद्‌की आश्विन कृष्णा ७ सं० १९६५ की रात्रि महा-पुण्यशालिनी तथा धन्य बन गई, जिस दिन इस पृथ्वीतल पर एक दिव्य विभूतिने जन्म लिया, जिसने आत्मोत्थान तथा जन-जीवनके कल्याणके लिये समस्त सांसारिक प्रिय स्वजनों तथा सुखोंका त्याग कर अपनेको उत्सर्ग कर दिया। वह विभूति आज भी पण्डित मुनि श्री प्रतापमलजी म० सा० के रूप में विद्यमान है और जिससे सहस्रों व्यक्ति सदैव प्रेरणा, निर्देश व प्रकाश प्राप्त करते है तथा जिसकी सौम्य मूर्ति जन-जन के हृदयपटल पर अंकित है।

पूज्य मुनिश्री प्रतापमलजी म० सा० का जन्म अरावलीकी उपत्यकामें बसे हुए वीर-भूमि मेवाड़के सुप्रसिद्ध नगर देवगढ में हुआ। आपके पूज्य पिता का नाम श्री सेठ मोती-रामजी गान्धी तथा माताका नाम [illegible] था। [illegible]

प्रतापको भी उसी मेवाड़की पावन धूलिमें लोटनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है, जहाँका कण-कण स्वदेश-प्रेम, त्याग और बलिदानकी अमर' गाथाओंसे भरा हुआ है। जहाँ प्रणवीर प्रताप, देशभक्त भामाशाह और अनेक आत्म-साधक महापुरुष हुए हैं। जहाँके वीर-वीराङ्गनाओंकी अमर गाथायें गा-गा कर हम आज भी इठलाते तथा गर्वसे इतराते है। अतः बालक प्रतापका भी धर्मवीर होना उसी वीरभूमिका महा-प्रसाद है। लाकोक्ति प्रसिद्ध है "जहाँ कर्मवीर उत्पन्न होते है, वहाँ धर्मवीर उत्पन्न होते है" अतः जैनधर्मको गौरवशाली बनानेवाले अनेक महाप्रभावक आचार्यों तथा मुनियोंकी यह भूमि जन्मभूमि रही हुई है।

बाल्य-जीवन

मुनि श्री प्रतापमलजी म० सा० का बाल्य-जीवन अधिक सुखमय नहीं रहा। छः वर्षकी अल्पावस्थामे ही ये माताकी ममता व स्नेहसे वंचित कर दिये गये थे। लघु वयमें माताका स्नेहमय हाथ उठ जाना कितना कष्टप्रद है; यह वही अनुभव कर सकता है, जो भुक्तभोगी हो। परिस्थितियाँ ही व्यक्तिके जीवन-निर्माणमें सहायक होती है अतः मातृवियोग ही बालकके वैराग्यकी पृष्ठभूमि बन गया। ऐसा लगता है—संसारकी सबसे प्रबल ममतासे छुटकारा दिलाकर स्वयं दैवने ही आपके वैराग्यकी पृष्ठभूमि तैयार की थी। माताके देहावसानसे बालक प्रताप खोया-खोया-सा रहने लगा। जीवन

और मरणके प्रति उसकी जिज्ञासा जाग उठी। वह सोचता था माँ मरकर कहाँ गई हैं, व्यक्ति मरता क्यों है? क्या मेरी माँ मुझे फिर नहीं मिलेगी, आदमी न मरे इसका भी क्या उपाय हो सकता है? अबोध बालकको खोया-खोया देखकर पिताका हृदय भी ममतासे चित्कार कर उठता। बालकको माँकी छाया मिले और घरमें पीछे कोई सम्हाल कर सके, इस दृष्टिसे उन्होंने दूसरा विवाह करनेका निश्चय किया।

एक दिन ग्रामानुग्राम विहार करते हुए जैन दिवाकर श्री चोथमलजी म० सा० देवगढ़ पधारे। उन्होंने सेठ मोड़ीरामजी को दूसरा विवाह करनेसे रोका और इच्छा प्रकट की कि तुम सभी पिता पुत्र "बालक प्रताप तथा अन्य दो भाई" दीक्षा लेकर जैनधर्मका प्रचार करो तथा आत्म-कल्याण करो। धर्मपरायण आज्ञाकारी गृहस्थ गांधीजीने महाराज श्री को आज्ञाका यथावत् पालन करनेका आश्वासन दिया और तत्काल चतुर्थ व्रत धारण करते हुए कहा—मेरे छोटे पुत्र प्रतापके समझदार हो जानेपर हम सभी दीक्षा ले लेंगे। उपस्थित जनसमुदाय भी उनकी इस आकस्मिक घोषणाको सुनकर चकित, विस्मित तथा आश्चर्यान्वित रह गया और धन्य धन्य शब्दसे सभामण्डप गूँज उठा। जो व्यक्ति एक दिनके पूर्व मौड बाधकर विवाह करनेकी सोच रहा था, वही दूसरे दिन भगवती दीक्षा ग्रहण करनेकी घोषणा कर दे; सचमुच यह चमत्कार तथा आश्चर्यका ही विषय है।

मनुष्य सोचता कुछ और है और होता कुछ और है। दैवको यह घोषणा स्वीकृत नही थी। संवत् १९७४ के भीषण प्लेगमें ६ वर्षीय बालक प्रतापको निःसहाय तथा अकेला छोड़कर उसके पूज्य पिताश्री तथा दोनों भाई चल बसे।

बालक प्रतापके लिये यह घटना वज्रपात-सी हुई और परिणामस्वरूप जीवनकी दिशा ही बदल गई।

शिक्षा व व्यवसाय

पिताके अवसानसे प्रतापकी शिक्षाका क्रम रुक गया। बुद्धि तिक्ष्ण थी। पढ़नेमें भी वह अपनी कक्षामें अगुआ था, परन्तु आजीविकाका सवाल था। अतः बालकको अपनी पढ़ाई छोड़कर व्यवसायमे लगना पड़ा। नव वर्षका बालक एक दूकान चला ले, यह भी एक आश्चर्यका विषय था। अन्य पारिवारिक लोगोंपर आधारित न रहकर स्वाभिमानपूर्वक जीने के लिये इस प्रकारका साहस एक वीरवृत्तिका परिचायक है। इसी वीरवृत्तिने प्रतापको ऊँचा उठाया तथा पूजनीय बना दिया। प्रताप अपने छोटे-से व्यवसायमें सफल हुआ तथा सुख-शान्तिपूर्वक उसकी आजीविकाका कार्य चलाने लगा।

वैराग्य

पिताके अवसानसे प्रतापके कोमल हृदयको बड़ी चोट पहुँची। मातृवियोगके समय जीवन-मरणके प्रति जो

से भर गया। उन्होंने "शुभस्य शीघ्रम्" "समयं गोयम मापमायए" के अनुसार प्रतिक्रमण सिखाना प्रारम्भ कर दिया। फोड़ेकी विशेष व्याधिसे उन्हें वहाँ डेढ़ मास तक वही विराजना पड़ा था। महाराज श्रीके इतने लम्बे समय तक वहाँ विराजनेसे आपकी वैराग्य भावना और अधिक प्रबल हो गई एवं समस्त आरम्भ व परिग्रह छोड़कर मुनियोंकी सेवा तथा ज्ञान-ध्यान में लग गये। कुछ समय पश्चात् पूज्य श्री नन्दलालजी म० सा० ने देवगढ़से विहार किया। प्रताप स्वयं ही विहार में उनके साथ हो गया। पारिवारिक बन्धुओंने बहुत समझाया-बुझाया परन्तु वेगवती नदीकी धाराकी तरह मनस्वी प्रताप को कोई नही लौटा सका।

दीक्षा का दृढ़ संकल्प

प्रतापकी इस वैराग्य-भावनासे उसके पारिवारिक बन्धु आश्चर्यान्वित थे। वे उसका विवाह कर उसको सांसारिक बन्धनमें बांधना चाहते थे। मोह-राग उन्हें इसके लिये प्रेरित कर रहा था। अतः वे प्रतापको घर लानेके उपाय सोचने लगे। एक दिन वे किसी तरह एक स्थानसे पुनः घर लौटा लाये। प्रताप घर लौट तो अवश्य आया परन्तु मन नहीं लगा। वह घरपर ही साधुकी तरह जीवन व्यतीत करने लगा। पारिवारिक जन अपनी मनोकामना पूरी न होते देख कर निराश थे।

अभिग्रह

एक बार प्रताप राणकपुरके सुप्रसिद्ध मन्दिरकी यात्राके

लिये निकला। देवगढ़से राणकपुर पर्वत-मार्गसे बहुत निकट है अतः एक घोड़ेपर बैठकर वह जा रहा था। मार्गमें घोड़ा बिगड़ गया और वह धड़ामसे नीचे गिर पड़ा। उसका हाथ टूट गया। मार्गवर्ती पथिकोंने घर पहुँचा दिया। हाथका उपचार किया गया परन्तु कोई भी इलाज कारगर नही हुआ। व्यथासे प्रताप पीडित था। एक दिन अकस्मात् मन-ही-मन उसने अभिग्रह किया—"यदि सात दिनकी अवधिमें मेरा हाथ ठीक हो जायगा तो मैं दीक्षा ग्रहण कर लूँगा। उसने अपनी यह प्रतिज्ञा घरवालोंको भी सुना दी।

संयोगवश अभिग्रहके साथ ही टूटी हड्डियोंके जोडनेमें चतुर एक हकीम उधर आ निकला। व्यथासे कराहते हुए बालकको देख कर बोला—इसका हाथ अभी ठीक कर देता हूँ। उसने पाँच-छः दिनके उपचारमें हाथ ठीक कर दिया। लम्बे समय तक इलाज करवानेपर भी जो हाथ ठीक नही हो सका था, वह धर्म-प्रसादसे शीघ्र ही ठीक हो गया। यह अभिग्रहका ही परिणाम था। अतः भाई-बन्धुओंने भी विशेष आग्रह न कर आज्ञा प्रदान कर दी।

एक दिन पं० मुनि श्री हर्षचन्द्जी म० सा० देवगढ़ पधारे। उन्होंने आपकी वैराग्य भावनाको परखा और अपने संकल्प पर दृढ रहनेके लिये प्रोत्साहित किया। साथ-साथ उन्होंने अपने पास रहकर ज्ञानाभ्यास करनेके लिये भी कहा। उनका

चातुर्मास लहसानी था। वैरागी प्रताप वही पहुँच गया और अभ्यास करने लगा।

पं० मुनि श्री नन्दलालजी म० सा० का संवत् १९७९ का चातुर्मास मन्दसौर था। वैरागी प्रताप मुनि श्रीकी सेवामें मन्दसौर पहुँचा। अकस्मात आपको देखकर मुनि श्री विस्मित हुए। आप द्वारा यथार्थ स्थिति जानकर उन्हें अत्यन्त प्रसन्नता हुई। मनुष्य - रत्नोंके पारखी उस जौहरीने हीरेको पहचान ही रखा था। अतः ६५ दिनके पूर्वाभ्यासके बाद ही मार्गशीर्ष शुक्ला, १५ संवत् १९७९ को शुभ वेलामें अत्यन्त समारोहके साथ भगवती दीक्षा प्रदान की। दीक्षा लेनेके समय पू० पं० मुनि श्री हीरालाल म० सा० तथा उनके पूज्य पिताजी भी वैराग्य अवस्थासे पू० मुनि श्री नन्दलालजी म० सा० की सेवा में उपस्थित थे। मन्दसौर श्री संघने अपनेको कृतकृत्य समझा।

अध्ययन

दीक्षोपरांत ही आपने जैनागमों तथा जैन साहित्यका अध्ययन प्रारम्भ किया। शीघ्र ही दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, सूत्रकृताङ्ग, आचाराङ्ग और स्थाणांग सूत्रोंके शब्दार्थ कण्ठस्थ कर लिये। अन्य सूत्रोंका भी गहरा अध्ययन किया। संवत् १९८८ में आपकी अभिलाषा संस्कृत पढ़नेकी हुई। बिना संस्कृत पढ़े अनेक तलस्पर्शी बातें समझमें नहीं आ सकती थी। सौभाग्यसे उस वर्षका आपका चातुर्मास इन्दौर था। आपके प्रभावशाली व्याख्यानोंसे राजाबहादुर, राज्यभूषण श्रीयुत सेठ

कन्हैयालालजी भंडारी बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने एक संस्कृतअध्यापक आपके अध्ययनार्थ रख दिया। शनैः शनैः आपने व्याकरण मध्यमा तथा साहित्य शास्त्री का अध्ययन कर लिया और एक अच्छे विद्वान, वक्ता और मनीषी होगये।

विहार और धर्म-प्रचार

योग्य शिष्य की गुरु को सदैव चाह रहती है। प्रतापमलजी के विनय और वैयावृत्य को देखकर पूज्य मुनि श्री नन्दलालजी म० सा० बहुत प्रभावित थे अतः वे उन्हें अपने साथ ही रखते थे। जब तक वे जीवित रहे तबतक विना किसी खास प्रयोजन से उन्हें अलग न रखा। एक महा प्रभावक मुनि के सानिध्य में रहने से आपका भी विकास हुआ। आप अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों के सम्पर्क में आये और बहुत कुछ सीखने को मिला। परिणामतः व्यावहारिक जीवन में भी पारंगत हो गये।

शिक्षा व व्यवहार-पटुता से आप को धर्म-प्रचार में बहुत सफलता प्राप्त हुई। दक्षिण हैदराबाद से पंजाब तक सौराष्ट्र काठियावाड से बंगाल तक का परिभ्रमण बिना विशिष्ट व्यक्तित्व के संभव नहीं। जहां २ आप गये वहां २ अनेक धर्म-कार्य हुए। जनतामें जागृति हुई। अनेक सभा-संस्थाओं का निर्माण हुआ और शतशः व्यक्तियों ने हिंसामय जीवन का परित्याग कर अहिंसाव्रत ग्रहण किया। अनेकों ने सप्त कुव्यसनों का परित्याग किया और अनेक मांसाहारी शाकाहारी बन गये।

आपके सम्पर्क में अनेक गवर्नर, मंत्री, जागीरदार, राजकीय

अधिकारी आये और सबों ने आप के त्यागमय जीवन की मुक्त-कंठ से प्रशंसा की है।

दीक्षा-गुरु

अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यों के साथ आपने एक बहुत ही महत्त्व-पूर्ण कार्य किया है, वह है दीक्षागुरुत्व ! आज तक आप तीन मुनियों को दीक्षित कर चुके हैं। मुनि श्री बसन्तीलाल जी की दीक्षा माघ शुक्ला १३, संवत् १९९९ में रतलाम में, मुनि श्री राजेन्द्रकुमारजी की दीक्षा वैशाख शुक्ला १५ संवत् २००८ में खंडेला में (जयपुर) और तृतीय मुनि श्री रमेशचन्द्रजी (श्री रतन-लालजी) की दीक्षा झरिया में हुई। आप सभी मुनि गुरु-चरणों में ही रह कर धर्म-प्रचार कर रहे हैं।

व्यक्तित्व

मुनि श्री के व्यक्तित्व जीवन के संबंध में जितना भी लिखा जाय, थोड़ा है। आप में उदारता, गुणग्राहकता, मिलन-सारिता, धैर्य और विवेक के साथ परिस्थितियोंको समझने की शक्ति; निरभिमानता, समता आदि गुण कूट-कूट कर भरे हुए हैं। विरोधी भी आपके पास आकर अपनी विरोध भावना भूल जाता है। निश्छल प्रेम की धारा में आप्लावित हो वह ईर्ष्या और द्वेष को वहीं विसर्जन कर देता है।

गौर वर्ण, विस्तृत ललाट, समुन्नत नासिका, आजानु बाहु, करुणापूरित विशाल नैत्र और सतत मुख पर खेलती हुई मुस्क

राहट, आपका यह बाह्य, वैभव अपरिचित व्यक्ति को भी बिना प्रभावित किये नहीं रह सकता। संयम और तप की आप एक जीवन्त मूर्ति के सदृश दिखाई देते हैं।

सारा संसार ही आप के लिये एक कुटुम्ब है। प्रत्येक व्यक्ति के प्रति आप का व्यवहार बहुत सरल एवं उदारतापूर्ण होता है।

अयं निजः परो वेत्ति, गणना लघुचेतसां
उदार चित्तानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्,

की आप साक्षात् मूर्ति हैं।

गुणग्राहकता आपकी सबसे बड़ी विशेषता रही है। चाहे बाल हो या वृद्ध, उसकी गुणज्ञता आप सहर्ष स्वीकार करते हैं। मिलनसार भी आप अपने ढग के अनोखे ही हैं। जहां भी आप जाते हैं वहा अपनत्व का वातावरण बना लेते है। जिन व्यक्तियों तक साधारण व्यक्तियों की पहुंच ही नहीं होती, वे व्यक्ति भी आपके पास पहुंच कर नतमस्तक हो जाते हैं और अपना अहोभाग्य समझते हैं।

सेवा आपका महान् गुण है। यह आपका जन्मजात गुण है। तीन शिष्यों के गुरु होने पर आज भी उसी रूप में विद्यमान हैं। आपके सेवा-गुण से प्रसन्न होकर पू० नन्दलालजी म० सा० सदैव अपने साथ ही रखते थे। जब २ वृद्ध मुनियों को सेवा-सुश्रुषा की आवश्यकता होती तब २ आप याद किये जाते थे। पूज्य श्री मन्नालालजी म० सा० तपस्वी बालचंदजी श्री खूबचंदजी म० सा० प्रसिद्ध वक्ता चोथमलजी

म० सा०, तपस्वी मोतीलालजी म० सा०, तपस्वी हजारीमलजी म० सा०, तपस्वी छोटेलालजी म० सा० तपस्वी छब्बालालजी म० सा० आदि की आपने मुक्तहृदय से सेवायें की है। तपस्वियों की सेवा एक अति कठिन कार्य है परन्तु आप उसमें सफल हुए है; इसीसे आपके इस महान गुण के प्रति अनुमान लगाया जा सकता है।

आप मेधावी, गहन दृष्टि तथा प्रभावशाली वक्ता है। पेचीली समस्याओं को भी आप सरलता से हल कर लेते है। साधारण मुनिपद पर प्रतिष्ठित रहने पर भी आपकी प्रत्येक सामाजिक या साधु-व्यवस्था संबंधी कार्य मे सम्मति ली जाती रही है।

समन्वय आप का महान् गुण है। सबके साथ हिलमिल कर चलने की आप की सदैव इच्छा बनी रहती है। प्रतिष्ठित जैनाचार्यों तथा मुनियों ने आपका मुक्तकंठ से प्रशंसा की है।

आप दिन प्रतिदिन शासन की अधिकाधिक सेवा करें तथा चिरायु हों, यही शुभकामना है।

चातुर्मास

मुनि श्री प्रतापमलजी म०सा० के आज तक के चातुर्मासों की सूची नीचे दी जाती है। प्रस्तुत सूची से उनके पाद-विहार तथा जनकल्याणका लेखाजोखा हो सकेगा।

संवत् १९८०	ब्यावर
„ १९८१	जावरा
„ १९८२	मन्दसौर

सम्वत् १९८३	रतलाम
,, १९८४—८५	जावरा
,, १९८६—८७	रतलाम
,, १९८८	इन्दौर
,, १९८९—९२	रतलाम
, १९९३-	जावरा
,, १९९४	जलगांव
,, १९९५	हैदराबाद (दक्षिण)
,, १९९६	रतलाम
,, १९९७	दिल्ली
,, १९९८	सादड़ी (मारवाड़)
,, १९९९	ब्यावर
,, २०००	जावरा
,, २००१	शिवपुरी
,, २००२	कानपुर
,, २००३	मदनगंज (किशनगढ़)
,, २००४	इन्दौर
,, २००५	अहमदाबाद
,, २००६	पालनपुर
,, २००७	चकाणी (कोटा)
,, २००८	देहली
,, २००९	कानपुर
,, २०१०	कलकत्ता
,, २०११	सैंथिया

शास्त्रविशारद पं० मुनिश्री हीरालालजी म० सा० का संक्षिप्त जीवन-परिचय

मालवकी पुण्यमयी वसुन्धरा अत्यन्त गौरवशालिनी है। धन-धान्य तथा ऐश्वर्य-सम्पन्न होनेके साथ २ अनादिकालसे यह नर रत्नोंकी खान रही है। जो व्यक्ति एक वार मालवकी पुण्य भूमिके दर्शन कर लेता है, वह कभी भी इसकी छविको नहीं भूल सकता। दूर दूर तक फैले हुए हरितिमायुक्त मैदान, कलकल ध्वनिसे प्रवाहित सरितायें और शस्यश्यामल भूमि दर्शकको प्रभावित किये विना नहीं रहती। कहा गया है—मालव वह पुण्यभूमि है जहाँ कभी अकालके दर्शन नहीं होते, मालव वह पुण्यभूमि है जहां भूखा और प्यासा कोई व्यक्ति नहीं सोता, मालव वह पुण्यभूमि है, जहां अकालपीड़ितों और मरुभूमिके निवासियोंको शरण मिलती है। ऐसी पुण्यभूमिके दर्शन कर कौन धन्य न होगा।

भारतीय इतिहासके चमकते हुए अनेक स्वर्णिम पृष्ठ मालवीय नर-रत्नोंकी गौरव-गाथाओंसे भरे हुए हैं। भारतीय वाङ्मय और साहित्य तो इसके अमर कवियों, लेखकों और

शास्त्रविशारद पं० मुनिश्री हीरालालजी म० सा० का संक्षिप्त जीवन-परिचय

मालवकी पुण्यमयी वसुन्धरा अत्यन्त गौरवशालिनी है। धन-धान्य तथा ऐश्वर्य-सम्पन्न होनेके साथ २ अनादिकालसे यह नर रत्नोंकी खान रही है। जो व्यक्ति एक वार मालवकी पुण्य भूमिके दर्शन कर लेता है, वह कभी भी इसकी छविको नहीं भूल सकतो। दूर दूर तक फैले हुए हरितिमायुक्त मैदान, कलकल ध्वनिसे प्रवाहित सरितायें और शस्यश्यामल भूमि दर्शकको प्रभावित किये विना नही रहती। कहा गया है—मालव वह पुण्यभूमि है जहाँ कभी अकालके दर्शन नहीं होते, मालव वह पुण्यभूमि है जहां भूखा और प्यासा कोई व्यक्ति नहीं सोता, मालव वह पुण्यभूमि है, जहां अकालपीडितों और मरुभूमिके निवासियोंको शरण मिलती है। ऐसी पुण्यभूमिके दर्शन कर कौन धन्य न होगा।

भारतीय इतिहासके चमकते हुए अनेक स्वर्णिम पृष्ठ माल-वीय नर-रत्नोंकी गौरव-गाथाओंसे भरे हुए है। भारतीय वाङ्मय और साहित्य तो इसके अमर कवियों, लेखकों और

दार्शनिकोंसे धन्य और उपकृत है। यहां एक ओर बड़े २ सम्राट हुए हैं तो दूसरी ओर रस-मंदाकिनी प्रवाहित करनेवाले कालीदास व भारवीके सदृश अमर कवि। एक ओर अनेक धनी और देशसेवक हुए है तो दूसरी ओर वैभव और ऐश्वर्यको लात मारकर साधना पथके पथिक अनेक संत व आचार्य।

युग २ से मालव जैनधर्मका भी प्रधान केन्द्र रहता आया है। जैनागमोंमें उज्जयनी और मालवाके इतर नगरोंका विस्तृत वर्णन है। निर्वद्य जीवन व्यतीत करनेके लिये यहां सर्व सुविधायें उपलब्ध हैं अतः साधुवृन्द भी यहां बराबर विहार करते रहे हैं। जिस प्रान्त या नगरमें साधु विचरण करते हों, वहांके मनुष्योंके हृदय सात्विक व सरल होते है। अतः मालवीय स्वभावतः सरल, सुसंकृत व धर्मभीरु है।

जन्म

संवत् १९६४, पौष शुक्ला प्रतिपदा, शनिवारके पुण्य दिवस मालव भूमि किसी अप्रत्याशित सुखद संवादसे विहस उठी। मंगल-गानसे भूमिका कण-कण मुखरित हो उठा। क्योंकि आज उसकी कुक्षिसे एक ऐसे नररत्नने जन्म लिया था जिसने जीवनकी ध्येय-सिद्धिके लिये सब कुछ उत्सर्ग कर दिया। शास्त्रविशारद पं० मुनिश्री हीरालालजीके रूपमें वह रत्न आज भी विद्यमान है तथा जनसेवामें रत है। सहस्रों व्यक्ति जिनसे सदैव प्रेरणा व साहस प्राप्त करते है।

जन्म कुण्डली

८
९
७
५
६ के र बु
१० चं, शु
४ गु
११ श
१
३ रा-
१२ मं
२
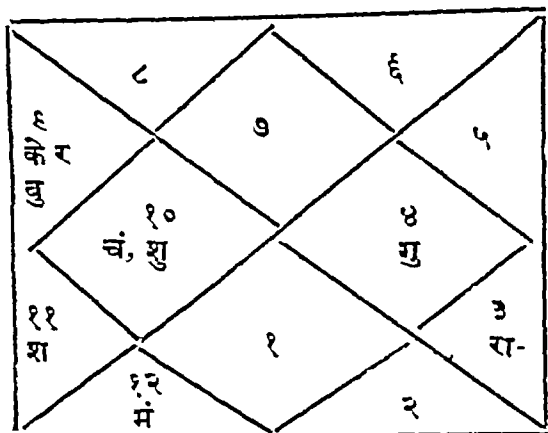
[संवत् १९६४ पौष मास शुक्ल पक्षे तिथि प्रतिपदा शनिवासरे घ. ४१।४६ पुर्वापाढ़ा नक्षत्रे घटी १६।५३ व्याघात योग घ ४३।८ किस्तुघन कर्णे घ १४।४१ सूर्योदयात् इस्ट घ ४८।१६ सूर्य ८।२० तद्द समये तुला लग्ने ६।२२ उत्तरापाढा तृतीयचर्णे शुभ वालकस्य जन्म नाम जगदीशचन्द्र, जिनेन्द्र कुमार, जन्म नाम, राशि मकर, स्वामी शनि, मुशावर्ग, मनुष्यगण, नकुलयोनि, अंत्यनाड़ी ।]

पं० मुनिश्री हीरालालजी म० सा० का जन्म मालवके सुप्रसिद्ध नगर मन्दसौरमें हुआ । आपके पिताका नाम लक्ष्मीचन्दजी दुगड़ तथा माताका नाम हगाम कुँवर वाई था । आपके पिता मह श्री ताराचंदजी दुगड़ मन्दसौरके प्रमुख एवं प्रतिष्ठित पुरुप थे । श्री लक्ष्मीचन्दजी वहुत ही सात्विक, सरल तथा धर्मनिष्ठ थे । उनकी धर्मपत्नी श्री हगामकुँवर वाई भी वहुत धार्मिक थी । संतान पर माता-पिताके संस्कारोंका वहुत प्रभाव पड़ता है । अतः नवजात शिशु पर भी उन संस्कारोंका पूर्ण प्रभाव

पड़ा। आरंभसे ही बालक सरल, सात्त्विक तथा मेधावी दृष्टि-गोचर होने लगा।

मानव-जीवनके निर्माणमें परिस्थितियाँ बहुत बड़ी कारण होती हैं। सुख-दुखात्मक घटनायें व्यक्तिके जीवन-प्रवाहको बदल देती हैं तथा उसे उत्थान या पतनके किसी भी मार्गकी ओर ले जाती हैं। विषम परिस्थितियोंमें भी जीवनको समुन्नत करना तथा अपना मार्ग निश्चित कर लेना होनहार पुरुषोंका ही कार्य होता है, अन्यथा अधिकांश जन पथभ्रष्ट होकर अपना सर्वस्व खो बैठते हैं।

बालक हीरालालके जीवन-निर्माणमें भी परिस्थितियोंका बहुत बडा हाथ रहा। संवत् १९७१ में सात वर्षकी लघु अवस्था में ही माताका स्नेहमय हाथ सदैवके लिये उठ गया। ज्येष्ठ भगिनी कंचन बाईका स्वर्गवास भी १९६४ में हो चुका था। भाई पन्नालालजी देहावसान भी १९७४ में हो गया। अपने परिजनोंकी ये दुखद मृत्युयें लघु बालकके मस्तिष्कमें प्रश्न बन गईं। जीवन और मरणके प्रति एक जिज्ञासा जाग उठी। व्यक्ति मरता क्यों है? मरकर कहाँ जाता है? क्या इसी तरह मैं भी मर जाऊँगा? आदि विचार उठने लगे। शनैः शनैः ये विचार ही वैराग्यकी पृष्ठभूमि बन गये! बालकको खोया २ देखकर पिता का स्नेहमय हृदय द्रवित हो उठता। हीरालाल उनकी अब इकलौती ही संतान रह गया था अतः उन्होंने अपने हृदयका समस्त प्यार ही ऊँडेल दिया। पर यह प्यार भी उनकी मानसिक

स्थितिमें कोई परिवर्तन न ला सका।

माँ और मौसीका प्यार एक होता है। माँ की गोद न सही, मौसीकी गोद तो है, यह सोचकर आपकी मौसी कजौड़ी बाई बालक हीरालालको अपने पास ले गई। मातृवत् प्रेम पाकर भी बालकका हृदय पूर्ववत् ही आकुलित रहता था। जीवन व मरणकी वह जिज्ञासा अभी तक उपशान्त नहीं हुई।

शिक्षा

बालक हीरालाल प्रारंभसे ही अत्यन्त मेधावी, तथा तीक्ष्ण बुद्धि था। अतः बहुत शीघ्र ही उसने हिन्दी, महाजनी व अंग्रेजी आदिका अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। ग्यारह वर्षकी लघु वयमें वह कठिनसे कठिन गणितके प्रश्नोंको मुखाग्र ही हल कर लिया करता था। एक व्यापारीके पुत्रको और क्या चाहिये ? "जिह्वा पर यदि गणित है तो वह एक कुशल व्यापारी भी है" यह बात आज भी व्यावहारिक जीवनमें साकार देखी जाती है।

आपकी प्रतिभा तथा बाह्य शारीरिक वैभवने सेठ ताराचंदजी दुगड व सेठ बहादुरमलजी दुगडका ध्यान आपकी ओर खींचा। उनके कोई संतान न थी। धन था पर संतानके अभाव में वह भी काटने दौडता था। उन्होंने बालक हीरालालको अपने यहाँ दत्तक लेनेकी इच्छा आपके पिताश्रीके सम्मुख व्यक्त की। पिता बालकके हृदयको जानते थे। उन्होंने कहा मेरी ओरसे कोई मनाई नहीं परन्तु आप पहले हीराकी अनुमति ले लीजिए। सेठजीने मन ही मन सोचा— वह क्या मना करेगा—

हमारी ऊँची हवेली व वैभवको देखकर स्वयं ही हाँ भर लेगा। उन्होंने हीरालालको बुलवाया तथा स्नेहके साथ अपनी इच्छा अभिव्यक्त की। सेठ ताराचन्दजीकी बात सुनकर हीरालालने कहा—मैंने तो अपने जीवनका दूसरा ही मार्ग निर्द्धारित कर रखा है। मैं तो वर्ष दो वर्षमें ही संसारके बंधनोंको तोड़कर साधु-जीवन अंगीकार करूंगा। आप किसी अन्य भाई-बंधुको गोद लेनेकी सोचिये! सेठजी अवाक् तथा विस्फरित नैत्र रह गये। उनके आश्चर्यका पार नहीं रहा। जिस धनके लिये भाई, भाईका विद्वेषी हो जाता है, जिस धनके लोभमे गिरकर मनुष्य भयंकर दुष्कार्य कर बैठता है, उसी धनके प्राप्त होनेपर भी यदि कोई मिट्टीके ढेलेकी तरह फेंक दे तो आश्चर्य न हो तो क्या हो! सेठ ताराचदजीने पुनः आशासे कहा—यह कोई जल्दीका प्रश्न नहीं है; इस संबंधमें जरा शान्तचित्तसे सोचना। मैं तो तुम्हें अपना पुत्र मान ही चुका हूँ।

अर्थका यह मोहक पाश बालक हीरालालको न बांध सका। इस घटनाने अपनी ध्येय सिद्धिके लिये उसे अधीर कर दिया।

लक्ष्मीचंदजीको आजतक इस स्थितिका पता न था। स्त्री, पुत्र-पुत्रीकी असामयिक मृत्युयें उन्हें सदा व्यथित करती थीं परन्तु संसारसे अभी आसक्ति हटी न थी। उन्होंने हाथसे निकलते हुए कबूतरको पकड़नेके लिये मोहक जाल फेका। वह जाल जिसमें आबद्ध होकर बिरला ही निकल सकता है। उन्होंने हीरालालका विवाह कर देनेका निश्चय किया।

योग्य कन्या उनकी दृष्टिमें थी। कन्याका पिता भी हीरालाल जैसे सर्वांग सुन्दर तथा सुयोग्य वरको देखकर प्रसन्न थे। बातचीतको साकार रूप देनेके लिये वे उनकी जन्मकुंडली देख रहे थे। योगकी बात है। ठीक उसी समय परम प्रतापी नन्दलालजी म० सा० आहारार्थ आ निकले। कुंडली देखते हुए देखकर उन्होंने अकस्मात पूछ लिया—यह किसकी कुंडली है। कुंडलीको देखते हुए कन्याके पिताने कहा—महाराज इस कुंडली वाले व्यक्तिके साथ मैं कन्याका विवाह तो करना चाहता हूं परन्तु कुंडली देखने पर ऐसा लगता है कि इसके विवाहका योग नहीं परन्तु प्रवज्याका योग है। यह एक सुप्रसिद्ध प्रभावक साधु होगा। लक्ष्मीचंदजी असमंजसमें पड गये। हीरालालकी भावना तो उन्हें ज्ञात ही थी। वे चिन्ताग्रस्त हो गये।

दीक्षा

"समय आनेपर ही वृक्ष फूलते व फलते हैं। समय आनेपर ही व्यक्तिकी मनोकामनायें पूर्ण होती हैं" बालक हीरालालकी भावना भी समय आने पर ही पूर्ण हो सकती थी। अतः वह भी समयकी प्रतीक्षामें था।

पुत्रकी प्रवृत्ति तथा भावनाको देखकर पिताके हृदयमें भी परिवर्तन हुआ। उन्होंने भी मन ही मन पुत्रके साथ ही दीक्षित होनेका निश्चय किया। उन्होंने संसारमें बहुत देखा तथा अनु-

भव किया था अतः कोई आकांक्षा भी न थी। पुत्र-मोहने उन्हें जीवनकी वास्तविकताका ज्ञान करा दिया था।

संवत् १९७९ मे वादीमानमर्दक पंडित मुनिश्री नन्दलालजी म० सा० का चातुर्मास मन्दसौर हुआ। उनके चातुर्माससे बालक हीरालालके भावोंमें और अधिक रंग आ गया। उनके प्रभावशाली व्याख्यानोंने संसारका वास्तविक ज्ञान करा दिया। उसका चिर व्याकुल प्राण अब एक तृप्तिका अनुभव करने लगा। एक कविके शब्दोंमें:—

आज शिशु साधकको अनजान,
मिल गया जीवनका कुछ ज्ञान

* * *

सांध्य क्षितिजके क्षणिक रंगोंने
कह दिये भेद भरे संदेश
नव जलधरने जल बरसा कर
बतलाया वास्तविक छबि देश,
चमक चपल चपलाने घन-अंक,
कहा प्रणयका रहस्य विचित्र
रो असीम अनन्द वनपथने
खींच दिया तृष्णाका चलचित्र
आज शिशु साधकके चिरव्याकुल प्राण
पा गये जीवनका वर ज्ञान

* * *

मृग तृष्णा है जगका वैभव
कांचन देह पुरीप की खान,
जल सीकरसा अस्थिर जीवन
यौवन-अंत जरा विष पान

* * *

आज शिशु साधकको अनजान
मिल गया जीवनका सद्ज्ञान

मन्दसौर चातुर्मासमें देवगढ निवासी प्रतापमलजी (वर्तमानमें पंडित मुनिश्री प्रतापमलजी म० सा०) दीक्षाकी भावनासे गुरु-चरणोंमें आये थे। अपने ही समवयस्क व्यक्तिमें इतनी वलवती भावना देखकर वालक हीरालालकी भावना और अधिक दृढ़ हुई।

पू० मुनिश्री नन्दलालजी म० ने देखा कि वालक हीरालाल और उसके पिता श्री लक्ष्मीचन्दजीकी वैराग्य-भावना दृढ़ एवं शुद्ध है तो उन्होंने उन्हें शीघ्र ही दीक्षित करनेकी घोषणा की तथा अपने निकट रखकर आवश्यकीय धर्माभ्यास प्रारंभ करवा दिया।

संवत् १९७९ माघ सुदी ३ शनिवारको रामपुरामें पूज्य मुनिश्री नन्दलालजी म० सा० ने पिता-पुत्रको भगवती दीक्षा प्रदान की। मुनिश्री नन्दलालजी म० सा० के शिष्य लक्ष्मीचन्दजी हुए और लक्ष्मीचन्दजीके शिष्य हीरालालजी घोषित किये गये। इस अवसर पर पं० मुनिश्री देवीलालजी म० सा०, शास्त्रज्ञ मुनि

श्री खूबचन्दजी म० सा० आदि १७ साधु और प्रवर्तनी प्यारांजी आदि ७ सतियां उपस्थित थीं। दीक्षा-महोत्सवमें सम्मिलित होनेके लिये बाहरसे हजारों श्रद्धालु व्यक्ति पधारे थे। सबमें अत्यन्त उत्साह था और वे नव दीक्षित मुनिवरोंकी त्याग व वैराग्य-भावनाकी शत शत कंठोंसे प्रशंसा कर रहे थे। रामपुरा श्रीसंघने भी अति उत्साहके साथ दीक्षा महोत्सव मनाया।

शास्त्राभ्यास

दीक्षित होनेके साथ ही पूज्य पं० नन्दलालजी म० सा० ने बाल मुनि हीरालालजीकी बुद्धिकी तीव्रता देखकर शास्त्राभ्यास की योग्य व्यवस्था की। उन्होंने शास्त्रज्ञ पं० खूबचन्दजी म० सा० को सौंप दिया। योग्य एवं जिज्ञासु शिष्यको पाकर पू० खूबचन्दजीने भी अपना सारा शास्त्रीय ज्ञान उँडेल दिया। आपने शीघ्र ही आचारांग, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, सुख-विपाक आदिका अध्ययन कर लिया। शनैः शनैः यह अध्ययन-क्रम बढ़ता ही गया और कुछ ही वर्षोंमें भगवती, प्रज्ञापना आदि बत्तीसही सूत्रोंका आपने अभ्यास कर लिया। अनेक शास्त्र आपको कंठस्थ हो गये। वर्तमानमें आपके शास्त्रीय ज्ञानको देखकर अनेक मुनिवर आपको शास्त्रविशारदके नामसे संज्ञित करते है।

विहार व धर्म-प्रचार

जैन साधुकी सबसे बड़ी विशेषता यही है कि वे सतत विहारी होते है। एक स्थान पर चातुर्मासके अतिरिक्त वे मर्या-

दित दिनोंके अतिरिक्त विना कारण नहीं ठहर सकते अतः पाद-विहार करते हुए वे देशके एक कोनेसे दूसरे कोनेमें पहुँच जाते हैं। सहस्रों व्यक्ति सम्पर्कमें आते हैं। दुनिया प्रत्यक्षतः देखने व समझनेको मिलती है अतः धर्म-प्रचारके साथ उनका वाह्य ज्ञान भी खूब अभिवर्द्धित होता है।

मुनि हीरालालजी भी घोर पाद-विहारी है। आपने मेवाड़, मध्यभारत, मारवाड़, जयपुर, पंजाव, सौराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, हैदरावाद (दक्षिण), यु० पी०, विहार और वंगाल आदि भारतके प्रायः सर्व प्रमुख प्रान्तोंमें विहार किया है। विहार-कालमें सहस्रों व्यक्ति आपके उदात्त जीवनके सम्पर्कमें आये, सहस्रों आपके ओजस्वी व्याख्यानोंसे प्रभावित हुए और सहस्रों ने अनेक त्याग-प्रत्याख्यान किये है। आपने राजा-महाराजाओं, जमींदारों और जागीरदारों, राजकीय कर्मचारियों और नेताओं को उपदेश दिया है। परिणामस्वरूप अनेक समाज-सुधार, जातीय सुधार तथा राष्ट्रोत्थानके कार्य हुए हैं।

सम्पादक व लेखक

मुनिश्री हीरालालजी म० सा० एक शास्त्राभ्यासी संत होनेके साथ एक अच्छे संग्राहक व सम्पादक भी हैं। आपने पूज्य श्री खूबचन्दजी म० की विविध कविताओंको संग्रहित करके "खूब कवितावली" के नामसे एक सुन्दर व आकर्षक संग्रह किया है जो सन्मति ज्ञानपीठ, आगरा द्वारा प्रकाशित है। आपकी सद्य प्रकाशित हीरक हारके दोनों भाग तो गागरमें सागर हैं। छोटे

२ दृष्टान्तोंमें जीवनका अनुभव उँडेला हुआ है। पुरानी कथायें भी नवीन रूपमें प्रसूत हुई हैं।

व्यक्तित्व

गौर वर्ण, आजानु बाहु, सुगठित दीर्घ शरीर, भव्य ललाट, उन्नत नासिका व विशाल नेत्र, शरीरका यह बाह्य वैभव आनेवाले प्रत्येक व्यक्तिको विना प्रभावित किये नहीं रहता। मुखपर खेलती हुई स्वाभाविक स्मिति रेखायें बरबस आपकी ओर ध्यान आकर्षित कर लेती है। सहज सारल्य, मृदुलता, विनम्रता व गंभीरता आपके विशेष गुण हैं। विशिष्ट व्यक्तित्वयुक्त तथा उच्च पदपर प्रतिष्ठित होनेपर भी आप सबके साथ घुलमिल जाते है। अहंभाव तो आपमें लेशमात्र भी नहीं है। आपके शास्त्राभ्यास व संघके प्रति उत्तरदायित्व वहनकी शक्तिको देखकर आपको अपनी सम्प्रदायकी ओरसे गणावच्छेदक व गणी का महत्त्वपूर्ण पद दिया गया था जो आपने सादड़ी-सम्मेलनके अवसर पर समर्पण कर दिया।

आत्म-साधना व ध्यान आपके दैनिक जीवनके आवश्यक अंग है। तत्त्वचिन्तन व मनन आपके व्यसन है।

सेवा आपका महान् गुण हैं। छोटे २ साधुओंकी भी आप अपने हाथोंसे सेवा करते है। उनके आहार-पानी आदिकी व्यवस्था भी स्वयं अपने ही हाथोंसे कर देते है। जो भी आपके सम्पर्कमें आया उसपर आपके व्यक्तित्वकी छाप अवश्य पड़ी है।

ऐसे महान् मुनि जैन-शासनकी अधिकाधिक सेवा करें यही शुभकामना है।

चातुर्मास

दीक्षित होनेके पश्चात् आजतक आपके निम्न चातुर्मास निम्न स्थानों पर हुए है, जिसकी अनुक्रमणिका नीचे दी जा रही है।

१६८०—अजमेर
१६८१—रतलाम
१६८२—मन्दसौर
१६८३—जावरा
१६८४— „
१६८५— „
१६८६—रतलाम
१६८७— „
१६८८—जावरा
१६८६— „
१६६०—रामपुरा
१६६१—चित्तोड़गढ
१६६२—ब्यावर
१६६३—जयपुर
१६६४—दिल्ली
१६६५—जम्मूतवीं

१६६६—अम्बाला शहर

१६६७—दिल्ली

१६६८—सोजत रोड

१६६६—उदयपुर

२०००—ब्यावर

२००१—मन्दसौर

२००२—पालनपुर

२००३—जामनगर

२००४—वेरावल

२००५—भोवनगर

२००६—अहमदाबाद

२००७—जयपुर

२००८—दिल्ली

२००६—कानपुर

२०१०—कलकत्ता

२०११—झरिया

२०१२—कलकत्ता
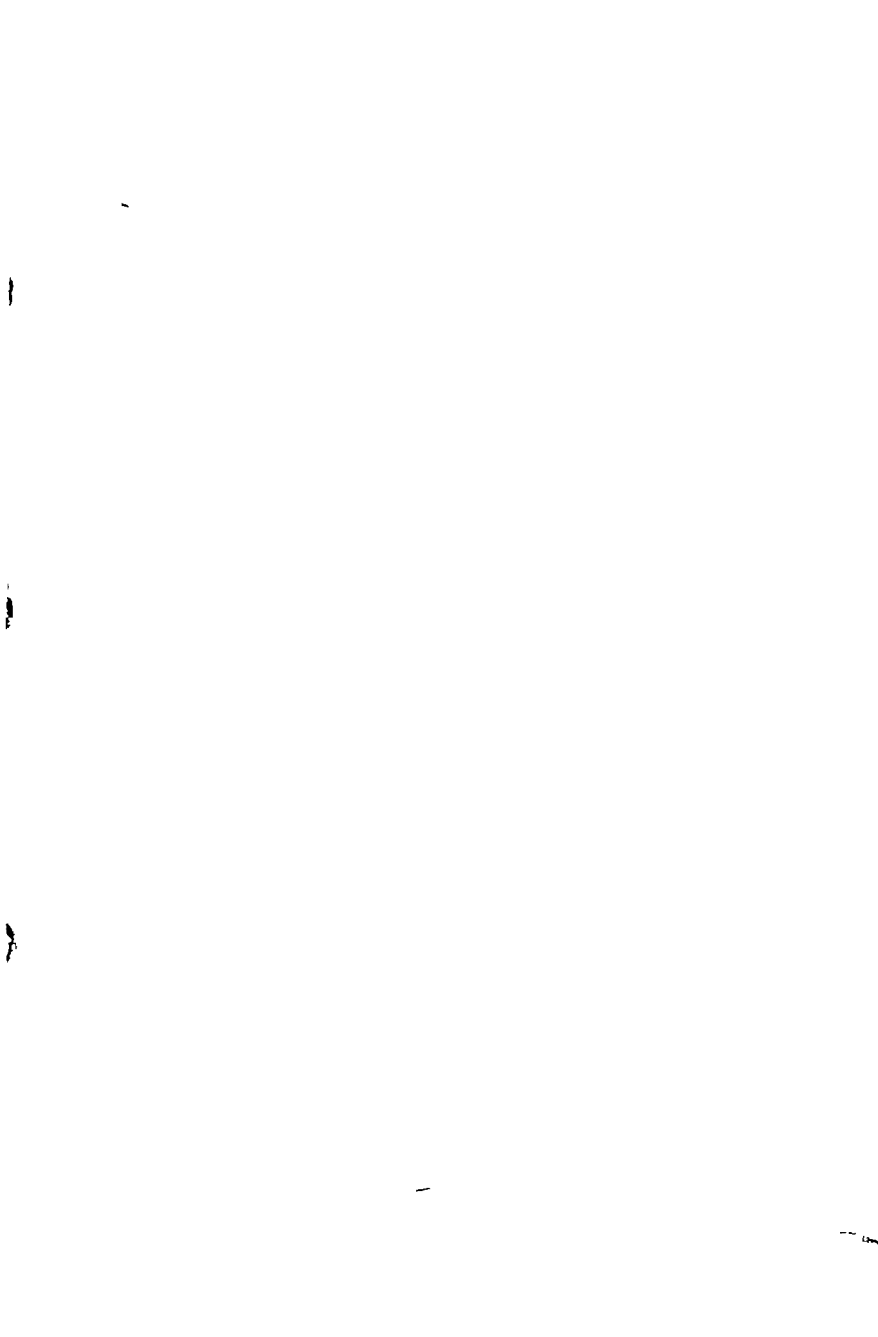
बंग-विहार की भूमिका

प्रवाहित नीर निर्मल रहता है और अप्रवाहित मैला व दुर्गंध युक्त। साधु-जीवन भी अप्रवाहित नीर के सदृश एक ही स्थान पर स्थित रहने से दूषित हो जाता है अतः जैनागमों में साधुओं को सतत विहार के लिये कहा गया है। साधु किसी गांव या नगर का नहीं होता। वसुधा ही उसका कुटुम्ब होता है अतः वह एक स्थान पर मठ या आश्रम बनाकर नहीं रह सकता है। रहता है तो उसका संयम दूषित हो जाता है। चिरकाल से जैन साधु एक स्थान से दूसरे स्थान पर पाद-भ्रमण करते आ रहे हैं।

दीर्घ उत्ताल तरंग मालायें, संतप्त वालुकामय मरु-प्रदेश, कंटकाकीर्ण विजन पथ, ऊँचे नीचे गिरि-गह्वर उनके पाद विहार को नहीं रोक सके। जनहित तथा आत्म-कल्याण की भावना ने उनको विश्व के सुदूर कोने २ तक पहुँचाया। उनका यह अभियान स्वर्ण-खानों की खोज के लिये अथवा तैलकूपों की शोध के लिये या कहीं उपनिवेश स्थापित करनेके लिये नहीं हुआ था परन्तु हुआ था अशान्त विश्व को शान्ति का संदेश देने के लिये, विश्वको भ्रातृत्वके एक सूत्रमें बांधने के लिये, और अज्ञानान्धकार

में भटकती जनता को सत्पथ प्रदर्शित करने के लिये। आज भी यही अभियान अश्रान्त रूप में चालू है। आधुनिक यातायात के इतने सर्व सुलभ साधन उपलब्ध होनेपर भी जैन साधु पादविहार करते हुए देश के एक कोने से दूसरे कोने में पहुँच जाते हैं। उनकी इस निस्पृह सेवा की भावना जगत् के लिये महान् आश्चर्य का विषय है।

मुनि श्री प्रतापमलजी म० व मुनि श्री हीरालालजी म० आदि मुनिवर घोर पादविहारी हैं। अपरिचित स्थानों में जाकर धर्म-प्रचार करना आपके जीवन की साध रही है। जैन साधु-जीवन से अज्ञात् प्रदेश में विहार करना सचमुच कठिन कार्य है। अपरिचित प्रदेश में कितनी कठिनाइयों का अनुभव करना पड़ता है, यह वही जानता है जो भुक्त भोगी हैं। बंग-विहार के पूर्व भी उक्त मुनिगण सौराष्ट्र, दक्षिण भारत, गुजरात, मध्यभारत, मध्य प्रदेश, खानदेश, महाराष्ट्र व पञ्जाब आदि में विहार कर चुके थे। उत्तरी तथा पूर्वी भारत, जहां जैन साधुओं का बहुत ही कम विचरण होता है, यह प्रदेश बाकी था।

धर्म-प्रचार की प्रबल भावना ने जोर दियो और मुनिवरों के देहली चातुर्मास ने मार्ग प्रशस्त कर दिया। देहली चातुर्मास ही उत्तरी भारत तथा बंग-विहार की भूमिका बन गया।

जैन दिवाकर पूज्य मुनि श्री चौथमलजी म० सा० के निधन के पश्चात् पूज्य श्री मन्नालालजी म०सा० की सम्प्रदाय के सर्व साधुओं का एक सम्मेलन ब्यांवर बुलाया गया था। उस समय

तक श्रमण संघकी योजना साकार नहीं हुई थी। एक स्थानपर अनेक मुनियोंको एकत्रित् देखकर देशके विभिन्न भागों से चातुर्मासार्थ विनतीके लिये प्रतिनिधिमण्डल आने लगे। देहली का श्रीसंघ भी लालायित था। यहाँसे भी एक प्रतिनिधिमण्डल चातुर्मासार्थ विनतीके लिये पू० पं० प्रतापमलजी व हीरालालजी आदि मुनिवरोंके पास आया। आगत व्यक्तियोंकी भक्ति, आग्रह व जन-कल्याणका योग्य स्थान देखकर मुनिवरोंने स्वीकृति प्रदान की और सम्मेलन समाप्त होनेपर देहलीकी ओर विहार किया। अजमेर, जयपुर होते हुए आप यथासमय देहली पधारे। अजमेरमें तत्कालीन ऋषि सम्प्रदायके आचार्य पूज्य आनन्द ऋषिजी म० सा० तथा जयपुरमें पूज्य हस्तीमलजी म० सा० से मिलना हुआ तथा संयुक्त प्रवचन हुए थे।

देहली-चातुर्मास

देहली श्रीसंघके प्रबल अनुरोधसे पं० मुनी श्री प्रतापमलजी महाराज, पं० मुनि श्री हीरालालजी महाराज आदि मुनिवृन्द देहली चातुर्मासके लिए यथासमय पधारे। संयोगवश यहाँ पर समताभावी दिगम्बराचार्य श्री सूर्यसागरजी महाराजका भी समागम हो गया। फिर क्या था ? सोनेमें सुगन्धकी तरह इस वर्षके चातुर्मासकी महत्ता बढ़ गयी। दिगम्बर एवं श्वेताम्बर स्थानकवासी मुनिराजोंकी प्रशान्त मूर्तियोंके दर्शन कर तथा धर्म-लाभ लेकर दोनों समाजोंके बीच प्रेम-मार्गका सूत्रपात हुआ एवं दोनों समाजें इस प्रकार शुभावसर पाकर कृतकृत्य हुईं। इसी प्रकार अन्य वात्सल्यपूर्ण समागमों तथा धर्म-प्रचारार्थ किये गये आयोजनोंसे इस वर्षका चातुर्मास अपेक्षाकृत अधिक सफल रहा। जिसका विवरण एक स्वतन्त्र पुस्तकके रूपमें प्रकाशित है। अतः प्रस्तुत पुस्तकमें उन सभी आयोजनों पर

त्र सामान्य दृष्टि ही डाली गई है।

मुनिराजोंका देहली प्रवेश

आषाढ़ वदीमें मुनिगण ससंघ देहली पधारे। यहांपर सदर बाजार (पहाडी धीरज) में पंजाबी मुनि श्री भागमलजी म० ठाणा ३ तथा दिगम्बराचार्य श्री सूर्यसागरजी महाराजसे भेंट हुई। आचार्य सूर्यसागरजी महाराजने गतवर्ष ही श्री जैन दिवाकरजी म० के साथ कोटामें विराज कर एकताका सूत्रपात किया था।

देहलीके इतिहासमें यह एक अपूर्व घटना थी कि दिगम्बराचार्य श्री सूर्यसागरजी महाराज तथा पं० मुनि श्री प्रतापमल जी महाराज व पं० मुनि श्री हीरालालजी महाराजके "श्री हीरालाल हायर सेकेन्ड्री स्कूल" में सम्मिलित भाषण हुए। इससे दोनों समाजों पर बड़ा ही अच्छा प्रभाव पड़ा तथा धर्मलाभ लेकर अत्यन्त प्रसन्न हुई। यहाँसे आप लोग सब्जीमण्डी पधारे जहां पर विराजित अनेक मुनिराजोंसे भेंट हुई। तदनन्तर चातुर्मासके उद्देश्यसे आषाढ़ सुदी सप्तमीको चाँदनीचौक स्थित महावीर भवन पधारे। यहाँ पर स्थानीय कन्या पाठशाला की बालिकाओं के द्वारा आपका स्वागत हुआ। इसी समय पं० मुनि श्री प्रतापमलजी महाराज "श्री समन्तभद्र विद्यालय" के उत्सवमें पधारे। वहाँ पर आप के आचार्य सूर्यसागरजी व मुनि श्री नेमिसागरजीके सम्मिलित भाषण हुए।

अभिग्रह

इसी अवसर पर महासती श्री चम्पाजी महाराज तथा श्री बालकुँवर जी महाराज की सुशिष्या श्री सती मानकुँ

महाराज ने १४ उपवास की तपश्चर्या के पश्चात् ५ महत्त्वपूर्ण वचनोंका अभिग्रह धारण किया जो कि पं० मुनि श्री प्रतापमल जी महाराज तथा पं० मुनि श्री हीरालालजी के सान्निध्यमें सानंद सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेक महत्त्वपूर्ण धार्मिक कार्य किये गये जिससे जैनधर्मकी महती प्रभावना हुई। इन्ही दिनोंमें यदा कदा अहमदावाद निवासी संसद के सदस्य तथा उप अर्थ मंत्री, श्री मणिभाई चतुरभाई तथा उनके हरिजन साथी श्री मूलदासजी भी पधार कर धर्मलाभ लेते रहे।

दिगम्बराचार्य का महावीरभवन में पादार्पण

मुनिद्वय, जैसा कि पहिले ही निर्देश कर दिया गया है ससंघ महावीर भवनमें विराजमान थे। वहाँ प्रतिदिन धर्मोपदेश हुआ करता था। जनताकी रुचिको देखकर एक दिन व्याख्यान के ही समयमें आचार्य श्री सूर्यसागरजीसे पधारकर भाषण देने की प्रार्थना की गई। उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर एकता पर एक प्रभावशाली भाषण दिया। इसको देखकर जनता दंग रह गई और उसको विश्वास हो गया कि आचार्यजी तथा मुनिवरोंके बीच सचमुच एक अटूट सम्बन्ध एवं निष्कपट मैत्री है। ८ दिनों तक विश्वशांतिके हेतु अनेक नर-नारियोंने अखण्ड णमोकार मन्त्र का जप किया तथा कोटासे आये हुए डेपुटेशनको १२ सौ रुपया चन्दा श्री दिवाकरजी के स्मारक के लिये एकत्रित कर दिया।

इसी वर्ष तेरापंथ-संप्रदायके आचार्य श्री तुलसीका भी यही

चातुर्मास था। जनतामें साम्प्रदायिक भेद-भावनाये जागृत हो उठी थीं। मुनिवरोंने बहुत बुद्धिमानी तथा विवेक के साथ स्थिति को सम्हाला जिससे कोई अनिष्ट घटना न हुई। शान्तिके साथ चातुर्मास समाप्त होना आपकी सूझपूर्ण तथा व्यावहारिक बुद्धिका ही परिणाम है।

संयुक्त दशलक्षणी पर्व

इस वर्ष दशलक्षणी पर्व बड़े ही ठाट-बाटके साथ मनाया गया। क्योंकि दोनों (दिगम्बर और स्थानकवासी) मुनियों के छ स्थानोंपर सम्मिलित भाषण हुए इससे जनता तथा समाज पर बडा ही अच्छा प्रभाव पडा तथा जैनमात्र एक है इसका अनुभव कर सभी प्रसन्न हुए।

विश्व-मैत्री-दिवस

दशलक्षणी पर्वके उपरान्त ही क्षमापनाके दिन समस्त जैन समाजोंकी ओरसे काका कालेलकर की अध्यक्षतामें एक विश्व-मैत्री दिवस मनानेका आयोजन किया गया। मुनिगण भी सम्मि लित हुए। आचार्य तुलसी भी उपस्थित थे।

विश्वकल्याण-जपोत्सव

७ अक्टूबर १९५१ रविवार को बारहदरीमें एक विश्व-कल्याण जपोत्सव मनाया गया। इसका उद्घाटन संसदके डिप्टी स्पीकर श्री अनन्तशयनम् आयंगरने किया। इस उत्सवमें आचार्य सूर्यसागर जी महाराज, आचार्य प्रियदर्शी, प्रसिद्ध

साहित्यिक जैनेन्द्र जी तथा अक्षयकुमार जी एवं नगर के अन्य गण्यमान्य सज्जन उपस्थित थे। इसी समय श्री दिनेश नन्दिनीजी डालमिया एम० ए० की अध्यक्षतामें एक महिला-सम्मेलन किया गया जिसमें अनेक विदुषियों ने महत्त्वपूर्ण भाषण दिये।

आचार्य-जयन्ती

तारीख ७ नवम्बर को आचार्य सूर्यसागर जी महाराजकी जयन्ती मनानेका आयोजन किया गया। मुनिवरोंको भी उसमें आमंत्रित किया गया था। आप सभी सम्मिलित हुए तथा ऐक्य-का-एक उच्च आदर्श प्रस्तुत किया।

२७ अक्टूबर को श्री महावीर हायर सेकेन्ड्री स्कूल ता० १४ को तिमारपुरमें तथा दरियागंज आदि स्थानोंमे समय-समय पर अनेकों भाषण दिए।

तारीख ११-११ को बारहदरी स्थित कन्या पाठशालाका वार्षिकोत्सव मनाया गया जिसका उद्घाटन भारतीय सेनाके प्रधान सेनापतिके चीफ एडवाइजर डा० रसलकी धर्मपत्नी लेडी रसल ने किया। वे कन्याओं और मुनियोंको देखकर मन ही मन प्रफुल्लित हो रही थीं तथा कन्यायें लेडी रसलके स्वभावको देखकर बहुत ही प्रसन्न थी।

देहली से विहार

१४ नवम्बर को पं० मुनि श्री प्रतापमलजी महाराज पं० मुनि

श्री हीरालालजी महाराजने चाँदनीचौकसे विहार किया। तदुपरान्त ता० १८ को श्रीसंघके निवेदन पर नई दिल्ली जैन नसियाँमें आचार्य - सूर्यसागरजी, पं० मुनि श्री प्रतामलजी महाराज, प० मुनि श्री हीरालालजी महाराज तथा आचार्य प्रियदर्शी आदि के ओजस्वी भाषण हुए। यह उत्सव बड़े ही उत्साहके साथ मनाया गया था। इसी उत्सवके उपरान्त पं० मुनि श्री हीरालालजी महाराजने अपनी शिष्यमण्डली सहित धर्म - प्रचारार्थ पञ्जाबकी ओर विहार किया तथा पं० मुनि श्री प्रतापमलजी महाराज श्री संघके अनुरोधसे स्व० श्री चौथमलजी महाराजके निधन पर मनाये जाने वाले सर्व-धर्म सम्मेलनमें सम्मिलित होने के लिए रुक गये।

नेहरू-मुनि मिलन

तारीख १८-११-५१ को प्रातः ६ बजे पं० मुनि श्री प्रतापमल जी महाराज व पं० मुनि श्री हीरालालजी महाराज, भारतीय संघ के प्रधान मन्त्री पं० जवाहर लाल जी नेहरू के बंगले पर पधारे। यहाँ पर संसद के सदस्यों एवं केन्दीय मन्त्रियोंने मुनिद्वयका योग्य अतिथि - सत्कार किया। तदनन्तर प्रधान मंत्री जी पधारे। उन्होंने भी भारतीय सभ्यता और संस्कृतिके अनुसार मुनिद्वयको वन्दन कर कुछ सामयिक वार्तालाप भी किया। इसी अवसर पर जैन दिवाकर पं० रत्न स्व० श्री चौथमलजी महाराज द्वारा संग्रहित "निर्ग्रन्थ-प्रवचन (अंग्रेजी) तथा जैनसमाजोंका एकतासूचक कोटा आदर्श-सम्मेलनका एक चित्र भी भेंट किया। प्रधान मन्त्रीजी ने इन भेटोंको सहर्ष स्वीकार करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता व्यक्त की।

मुनि-भावे भेंट

तारीख २१-११-५१ को प्रातः ८ बजे पं० मुनि श्री प्रतापमल जी महाराज व पं० मुनि श्री हीरालालजी महाराज आदि मुनि-

राजाओंकी महात्मा गाँधीके उत्तराधिकारी, भूमिदान यज्ञके याज्ञिक आचार्य विनोबा भावेसे भेंट हुई। इस अवसर पर विनोबाजीने जैन मुनियोंके पैदल विहारका बहुत ही समर्थन किया एवं प्रशंसनीय बतलाया। इसी समय वे प्रेमावेशमें आकर बोले—"पैदल चलने के कारण तो मैं भी जैन मुनि हूँ।" खादीके प्रसङ्ग पर आपने केवल स्व० आचार्य श्री जवाहरलालजी महाराजकी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

सर्व-धर्म-सम्मेलन

६ दिसम्बर ५१ को टाऊनहालमें श्री जैन दिवाकर पं० रत्न श्री चौथमलजी महाराज के अवसान दिवस पर सर्व-धर्म-सम्मेलन मनानेका आयोजन किया गया। इसका नेतृत्व पं० मुनि श्री प्रतापमलजी महाराजने ही किया। यह सम्मेलन श्री मँजूरामजी गान्धी एम० एल० ए० भूतपूर्व मन्त्री उ० प० सी० प्रा० की अध्यक्षतामें सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलनमें समस्त धर्मोंके समन्वयका सराहनीय प्रयत्न किया गया तथा विभिन्न धर्मानुयायी विद्वानोंके सारगर्भित भाषण हुए। सम्मेलनकी रौनक बडी ही सुन्दर थी तथा जनता भी आशातीत मात्रामें उपस्थित थी। सम्मेलन के नेताने इसकी कार्यकारिणीका चुनाव किया। सम्मेलनमें इसके अध्यक्ष श्री आनन्दराजजी सुराणा तथा सेठ विलायतीरामजीने बड़े ही तत्परतासे कार्य किया। सम्मेलनमें धर्म, दया और दान पर अनेकों

महानुभावोंने अपने-अपने विचार व्यक्त किये जिनमें से कुछ उल्लेखनीय नाम निम्न प्रकार है।

आचार्य सूर्यसागरजी महाराज, पं० मुनि श्री प्रतापमलजी महाराज, आचार्य रघुनाथदासजी, पं० लक्ष्मीनारायणजी, मण्डलेश्वर हरीहरानन्दजी महाराज, पं० श्री जमुनाधरजी ज्योतिषाचार्य, ज्ञानी प्रीतमसिंहजी ग्रंथि, गुरुद्वारा शीशगंज, मौलाना हबीबुल रहमान साहिब, प्रो० रामजीवनजी महाराज, पं० बालकृष्णजी धर्मालंकार, पं० धर्मदेवजी सिद्धान्तालंकार, पं० विजयकुमारजी जैन आदि के सारगर्भित भाषण हुए। इस शुभ अवसर पर गण्यमान्य विद्वानों राजनीतिज्ञों, एवं श्रीमानोंने अपनी-अपनी शुभकामनायें भेजी; जिनमें प्रधान मन्त्री पं० जवाहर लाल जी नेहरू, रायबहादुर राज्यभूषण सेठ कन्हैयालाल जी भण्डारी इन्दौर, सेठ अचलसिंहजी एम० पी० आगरे का नाम उल्लेखनीय है। भारतीय जनताके अतिरिक्त सम्मेलनमें कुछ विदेशी सज्जन भी सम्मिलित थे।

मिस्टर व मिस्ट्रेस रैड लोप	स्वीजरलेंड
मिस्टर व मिस्ट्रेस जेग	,,
पिता —अलम डोयरे	स्वीजरलैंड
पिता विक्टर	,,
डा० व० मिस्ट्रेस जेप केस	,,

उत्तर प्रदेश

इस प्रकार देहलीमें अनेक शुभ कार्य हो ही रहे थे कि एक डेपुटेशन मुनिवरोंके चरणोंमें कानपुर की ओर विहार की विनतीको आया। विनती स्वीकार कर मुनियोंने कानपुर की ओर विहार किया। मार्ग तय करते हुए क्रमशः आगरा पहुँचे। यहाँ पूज्य मुनि श्री पृथीचन्दजी महाराज एवं श्री प्रेमचन्द्रजी महाराजका समागम हुआ एवं वात्सल्यपूर्ण वार्तालाप भी हुआ। यहीं पर पञ्जावसे लौटे हुए पं० मुनि श्री हीरालालजी महाराज अपनी शिष्यमण्डली सहित पुनः मिल गये। यहाँ से सभी मुनियोंने सम्मिलित रूपसे कानपुर की ओर विहार किया। मार्गमें अनेक स्थानोंकी जनताको धर्मोपदेश देते हुए ता० २१-४-५३ को भारतके प्रसिद्ध औद्योगिक नगर कानपुर में प्रवेश किया। कानपुरमें पहुँचने के आठ ही दिन, पश्चात् मुनिवरोंके सानिध्यमें अक्षय तृतीयाको आठ भाई बहिनोंके वर्षीतपके समारोह हुए। इस अवसर पर मुनिश्रियोंके प्रभावोत्पादक धर्मोपदेश हुए तथा स्थानीय श्रीसंघने वर्षीतप करने वाले भाई-बहिनोंको एक अभिनन्दन-पत्र भेंट किया। श्री नवरत्नजी भाई ने युवावस्थामें ही सपत्नीक आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत स्वीकार किया।

चातुर्मास प्रारम्भ होते ही देहली निवासी लाला श्री टीकमचन्द्रजी जौहरी (लाट साहब) ने केवल गर्म-जलके आधार पर ६० दिनका व्रत किया तथा घेला भाई ने एक

मासका व्रत किया जो विना किसी अन्तरायके पूर्ण हुआ। व्रतोद्यापन महाराज श्री के तत्वावधानमे भाद्रपद शुक्ला चतुर्दशीको बहुत समारोहके साथ सम्पन्न हुआ।

अहिंसा पर भाषण

४ अक्टूबर को जीवदया मण्डलके प्रबन्धसे एक पशुरक्षक दिवस मनानेका आयोजन किया गया। मण्डलकी ओरसे एक डेपुटेशन मुनिवरोंके पास भी अहिंसा पर भाषण देनेके हेतु आया। आग्रहानुसार महाराज श्री वहाँ पधारे और उत्तर प्रदेश विधानसभा के स्पीकर श्री ए० जी० खेर की अध्यक्षतामें तथा अनेक गण्यमान्य सज्जनोंकी उपस्थिति में "अहिंसा परमो धर्मः" पर ओजस्वी भाषण दिया। भाषणकी उक्त मण्डलके मन्त्री ने भूरि-भूरि प्रशंसा की और निम्नलिखित प्रशंसा-पत्र भेजा :—

Dear Dharam Guruji (Pratapmalji Maharaj)

Your lecture on "Ahimsa Parmodharam" on Octo. 4th ' world day for animals" under the wise presidentship of hon'ble Shri A. G. Kher, speaker of legislative assembly, was very highly appreciated by the audiance.

I think you most warmly on behalf of the society engaged in the mission of preventing cruelty to animals for the great trouble you took on that particular day to come all the

way on foot to deliver the sermon on "Ahimsa Parmodharam" which is your motto.

Counting upon your support to the worthy cause of the suffering animals

I remain,
Your's Sincerely
Krishanlal Gupta
Lt. Rai Bahadur
Honorary Secretary.

कानपुर स्थानकमें मंगल पाठ

यहाँ पर ता० ३-१२-५२ को रुक्मणि भवन जैन स्थानकमें लाला छँगामलजी की अध्यक्षतामें प्राथमिक मंगलपाठ समारोह मनाया गया एवं विश्वमैत्री दिवस पर प्रभावशाली भाषण हुए। उक्त स्थानक के निर्माणार्थ जगह पं० मुनि श्री प्रतामल जी म० के ही समक्ष लाला फूलचन्द्रजीके सुपुत्र मनोहरलालजीने अपनी पूजनीया मातेश्वरी रुक्मणि देवीजी की स्मृतिमें ता० १२-३-४५ को दी थी किन्तु अनेक कारणोंवश यह स्थानक अवतक न वन सका था। सौभाग्यसे इस वर्ष पुनः पं० मुनि श्री प्रतापमलजी महाराजका चातुर्मास कानपुर में हुआ और इस स्थानक के वनवाने के सक्रिय प्रयत्न किये गये। दैवयोगसे स्थानक वन भी गया और उक्त मुनि श्री ने ही सहस्रों नर-नारियोंके समक्ष प्रथमवार मंगल पाठ किया। इस स्थानक के निर्माण कार्यमें इन्कमटैक्स कमिश्नर श्री रामानन्दजी, श्री

देवराजजी एम० ए० अध्यक्ष डेवलपमेंट बोर्ड कानपुर, आयर्नकिंग सेठ छँगामलजी, सेठ जगजीवन जी भाई; सेठ वेलजी-गोपालजी भाई, मान्यवर श्री मदनसिंहजी, प्रधान मन्त्री राधाकिशनजी बी. ए., प्रधान ट्रष्टी श्री किशनलालजी, डा० श्री रोशनलालजी जैन, श्री बुद्धसेनजी जैन, श्री मूलचंदजी जैन, सेठ नानालालजी भाई, सेठ नरोत्तमदास भाई, सेठ बच्चू भाई, सेठ निर्मलकुमारजी, चि० अमरनाथजी, चि० पद्मकुमारजी, पवन-कुमारजी, लाला पवनकुमारजी, श्री राज - कम्पनी लिमिटेड, लाला सूरजभानजी, लाला जशवन्त कुमारजी, तपस्वी बाबूराम जी, श्री पारस भाई जी, श्री चैनलालजी, श्री रतनलालजी, श्री बाबू गिरिजी सा० आदि ने बड़े ही उत्साह के साथ हाथ बँटाया। यहाँपर लाला ताराचंदजी लोढा एवं ताराचंद जी दुग्गड़ जम्मू (पञ्जाब) वालोंने सपत्नीक ब्रह्मचर्यव्रत धारण किया तथा रमेशचन्द्जी दुगड़ स्यालकोटवालोंने बारह व्रत धारण किये।

लखनऊमें राज्यपाल एवं विधान सभाके अध्यक्षसे भेंट

मुनिसंघ कानपुरसे विहारकर लखनऊ आया। यहाँपर ता० ५-१-५३ को छेदीलालजी की धर्मशालामें उत्तर प्रदेशीय विधान सभाके अध्यक्ष श्री ए० जी० खेर की उपस्थितिमें मुनियोंके अहिंसा पर ओजस्वी भाषण हुए जिनकी खेर सा० ने जी खोलकर प्रशंसा की।

इन्हीं दिनोंमें एक पत्र राज्यपालका भी आमन्त्रणस्वरूप मिला। पत्र निम्न प्रकार था :—

Governer's Camp
Uttar Pradesh
January 8, 1953

Dear Sir,

With reference to your letter dated January 7, 1953, I am desired to inform you that Shri Rajyapal will be glad to see Jain Muni Shri Pratapmalji at 11 A.M. on Saturday January 17, 1953 at Raj Bhawan, Lucknow. Please inform him accordingly and acknowledge receipt of this letter.

Your's faithfully,
for Secretary to the Governor
Uttar Pradesh

To

Shri Pravin Lal, Proprietor
Pravin Lal & Company,
Lucknow.

उपर्युक्त आमन्त्रणानुसार मुनिश्री उत्तरप्रदेशके राज्यपाल श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुँशीजीके यहाँ राज्य-भवन पधारे। मुन्शीजीसे राजनैतिक ढंगसे अहिंसापर विचार-विमर्श हुआ।

लखनऊकी जनताने धर्म - प्रचारमें अच्छा सहयोग प्रदान किया। इसी समय यहाँपर श्री वर्धमान श्रावक संघकी स्थापना

की गई जिसकी एक कार्यकारिणी सभा भी बनाई गई। सभाके अध्यक्ष मनसुख भाई, मन्त्री अतरसेनजी तथा कोषाध्यक्ष बालमुकुन्द जी मनोनीत किये गये।

ता० २२-१-५३ को डालीगंजमें दिगम्बर जैन समाजकी ओरसे रथोत्सवके अवसरपर एक सर्व धर्म सम्मेलन मनाया गया; इस सम्मेलनमे मुनिश्रियोंने प्रमुख हाथ बटाया। लखनऊ जैन-समाजके धर्म-कार्य यथार्थमें सराहनीय थे। किन्तु यहाँ धर्म प्रचार अत्यन्त आवश्यक प्रतीत हुआ। यहाँसे पुनः कानपुर पधारे।

कानपुर जैनस्थानक से विहार

फाल्गुन कृष्णा ६वी रविवारको प्रातःकाल रुक्मणि भवन जैन स्थानकके प्रदाता लाला फूलचन्दजी व सर्वराकार (चीफ-ट्रस्टी) लाला किशनलालजीकी प्रार्थनानुसार मुनि श्री "रुक्मणि भवन" पधारे। वहीपर सङ्घके सभापति लाला छिगामलजी वगैरह पधारे। वहाँपर सङ्घके सभापति आदि सभी सज्जनोंके समक्ष भजन, धर्मोपदेश आदि हुए, तदुपरान्त मुनिश्रियोंने हजारों नर-नारियोंके मध्यसे इलाहाबादकी ओर विहार किया। अनेक धर्मप्रेमी सज्जन आपको बहुत दूर तक पहुँचाने आये।

इलाहाबादमें केशलोच समारोह

हजारों नर-नारियोंको मार्गमें धर्मोपदेश देते हुए मुनि श्री ता० ५-३-५३ को इलाहाबाद दिगम्बर जैन धर्मशालामें पधारे।

यहाँपर श्री मुसद्दीलालजी, हुकमचन्दजी, अमरसिंहजी, तिलकचन्दजी एवं आरनामेण्ट हाउस चौकके आग्रहसे आम जनताके समक्ष मुनिश्री प्रतापमलजी महाराज एवं वसन्तीलालजी महाराजका केशलोंच समारोह सम्पन्न हुआ। इलाहाबादकी यह अपनी विशेषता रही कि यहाँ दोनों (दिगम्बर व श्वेताम्बर) जैन-समाजोंने सहयोगात्मक ढंगसे कार्य किया। इस सहयोगके लिये इलाहाबाद समाज सराहनीय एवं अनुकरणीय है।

बनारसमें महावीर जयन्ती

इलाहाबादसे आठ दिनोंमें मार्ग तय करके बनारस बीबी हटिया जैन स्थानकमें पधारे। सौभाग्यसे यहींपर महावीर जयन्ती मनानेका अवसर मिला। रामघाटः—मध्याह्नमें महावीर जयन्तीके उपलक्षमें रामघाट स्थित जैन मन्दिरमें एक महती सभाका आयोजन किया गया। यहाँपर पं० मुनिश्री हीरालाल जी महाराज, यति श्री हीराचन्दजी महाराज एवं संवेगी मुनि महाराज आदिके भाषण हुए। इस सभाके आयोजनका श्रेय राजा श्री प्रियानन्दजीको था।

टाउन हाल:—सायङ्काल समस्त जैन समाजकी ओरसे एक सार्वजनिक सभाका आयोजन स्थानीय टाउनहालमें किया गया। अध्यक्ष पद, हिन्दू विश्वविद्यालयके हिन्दी विभागके अध्यक्ष आचार्य हजारीप्रसादजी द्विवेदी सुशोभित कर रहे थे। इस अवसरपर पं० मुनिश्री प्रतापमलजी महाराज, पं० मुनिश्री हीरालालजी महाराज, डा० डी० आर० वी० मूर्ति, एम० ए०

डी० लिट् (हि० वि० वि०) जर्मन विद्वान डाक्टर स्वामी अगेहानन्दजी एम० ए० डी० लिट्के भाषण हुए। तदुपरान्त अध्यक्ष पदसे भाषण देते हुए द्विवेदीजीने जैनियोंकी अपने सिद्धान्तोंके प्रति अटलता और दृढ़ताकी भूरि-भूरि प्रशंसा की और बतलाया कि जैनियोंकी यही अटलता एवं दृढ़ता आजतक जैन - धर्मको जीवित रख सकी है। इसके अतिरिक्त उन्होंने दिगम्बर व श्वेताम्बर समाजोंकी भी समालोचना की। सभाके आयोजक एवं व्यवस्थापक श्री मामचन्द्रजीने बडी ही तत्परता से सभाकी व्यवस्था की।

इसके अतिरिक्त संसार प्रसिद्ध प्राचीन नगरी काशीके अनेक विभिन्न स्थानोंको देखनेका भी अवसर मिला। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयके अन्तर्गत पञ्जाबकेशरी पूज्य श्री सोहनलालजी महाराजकी स्मृतिमें स्थापित "श्री पार्श्वनाथ विद्याश्रम" का भी अवलोकन किया। यह संस्था वड़े ही सुन्दर ढङ्गसे जैन-धर्म का प्रचार कर रही है।

भदैनी स्थित "श्री स्याद्वाद महाविद्यालय" को भी देखनेका अवसर मिला। इसके आचार्य पं० कैलाशचन्द्रजी शास्त्री उच्च कोटिके विद्वान है। उन्होंने वड़े ही स्नेहके साथ विद्यालयका पूर्णरूपसे परिचय कराया। यह विद्यालय पिछले ५० वर्षोंसे जैन-समाजकी सेवा कर रहा है। सैकड़ों विद्वान इस संस्थासे जैन-धर्म-संस्कृत एवं अंग्रेजीकी उच्च शिक्षा प्राप्त कर जैन-समाज की सेवा कर रहे हैं।

भदैनीघाट—यह घाट भी काशीके सर्वोत्तम घाटोंमेंसे एक है। यहाँ सप्तम तीर्थङ्कर भगवान सुपार्श्वनाथजीकी जन्मभूमि है। अतः तीर्थ-स्थान होनेके नाते यहाँपर दिगम्बरों एवं श्वेताम्बरोंके भव्य मन्दिर भी बने हुए हैं। दोनों ही मन्दिर ठीक घाटपर स्थित हैं। अतः ये घाट भी जैनोंके ही हैं। क्रमशः दिगम्बर और श्वेताम्बर घाटोंके नाम "प्रभुघाट एवं बच्छराज" घाट है। ये नाम इनके निर्माताओंकी ओर संकेत करते हैं।

दुर्गाकुण्ड रोडपर स्थित साहू सेठ शान्तिप्रसादजी डालमिया नगरवालोंकी प्रसिद्ध साहित्यिक संस्था "भारतीय ज्ञानपीठ काशी" को भी देखनेका अवसर मिला। यह संस्था प्राचीन जैन-ग्रन्थोंका उद्धार-कार्य बड़े ही सुन्दर ढङ्गसे कर रही हैं। इसके सुयोग्य मन्त्री श्री लक्ष्मीचन्दजी एम० ए० हैं।

प्रसंगवश प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान "सारनाथ" भी देखने का अवसर मिला। यहाँपर मुनि श्री बौद्ध मन्दिर एवं बौद्ध विहारमें पधारे। जहाँपर बौद्ध संन्यासियोंसे मैत्रीपूर्ण वार्तालाप हुआ। वार्तालापके सिलसिलेमें उन्होंने बतलाया कि बौद्धोंकी तरह जैनोंके भी प्राचीन एवं पवित्र अवशेष थे किन्तु वे बौद्ध विहारके साथ-ही-साथ पृथ्वीमें धँस गये। सम्प्रति कुछ अवशेष पुरातत्त्व विभाग द्वारा खोज निकाले गये हैं।

इस प्रकार इस पवित्र काशी नगरीका यथासम्भव अवलोकन किया। प्राप्त प्रमाणोंसे यह निर्विवाद सिद्ध है कि काशी सदैवसे जैन-धर्मका केन्द्र रही है। खास काशीमें भेलूपुरमें

२३ वें तीर्थङ्कर भगवान पार्श्वनाथजी एवं भदैनीघाटमें ७ वें तीर्थङ्कर भगवान सुपार्श्वनाथजीका जन्मकल्याणक हुआ है। इसी प्रकार यहाँसे १८ मील दूरीपर स्थित चन्द्रपुरीमें ८ वें तीर्थङ्कर भगवान चन्द्रप्रभुजीका जन्मकल्याणक हुआ है। यहाँ की साधारण जनता इस ग्रामको "चन्द्रावती" के नामसे पुकारती है। ११ वें तीर्थङ्कर भगवान श्रेयांसनाथजी का जन्म कल्याणक सिंहपुरीमें हुआ है। यह ग्राम केवल यहाँसे ७ मील दूरीपर है। स्मरण रहे कि सिंहपुरी प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान "सारनाथ" का ही नामान्तर है। यहाँपर (बनारस) झरिया श्रीसंघका डेपुटेशन मुनिवरोंकी सेवामें उपस्थित हुआ एवं झरियाकी ओर पधारनेकी विनती की। तदनुसार मुनिवरोंने झरियाकी ओर विहार करनेका निश्चय किया।

बिहार प्रान्त

इस प्रकार बनारससे विहार कर मुगलसराय, चन्दोसी इत्यादि होते हुए कर्मनाशा स्टेशनसे विहार प्रान्तमें प्रवेश किया और क्रमशः १६ अप्रैल १६५३ को डालमिया नगर पधारे। श्रेष्ठिवर साहू शांतिप्रसादजी की इस नगरीमें प्रतिदिन व्याख्यानों का आयोजन किया जाता था। यहाँपर जैनाचार्य श्री सूर्यसागरजीकी स्मृतिमें बनाये गये स्मारक एवं समाधि-स्थान का भी अवलोकन किया। मुनिश्रियोंने अपने उपदेशोंमें जनता को बताया कि आप लोगोंको आचार्यजीकी स्मृतिमें कोई एक ऐसा साहित्यिक आयोजन करना चाहिये, जिससे उनका नाम अजर-अमर रहे। जनताने इसका हृदयसे समर्थन किया। आचार्यश्रीजी के प्रति यहाँकी जनतामें अटूट श्रद्धा दिखाई दी। यत्र-तत्र लोग उनकी गुण-गाथा गाते सुनाई देते थे। यहींपर कलकत्तेसे पधारे हुए सेठ सा० के भतीजे श्री शीतलप्रसादजी एवं बाबू जगतप्रसादजी, श्री मुल्तानमलजी एवं सेठ शीतलप्रसादजी

आदिकी भक्ति सराहनीय एवं अनुकरणीय रही। जनताके आग्रहसे यहाँ ४-५ दिन ठहरना पड़ा।

यहाँसे विहार कर अनेक स्थानोंमें धर्मोपदेश देते हुए बरकट्ठा पधारे।

बरकट्ठा—सूर्यकुण्ड पर सफल धर्मोपदेश

यहाँपर मार्गमें सड़कके किनारे ही उबलते हुए जलसे भरा एक कुण्ड देखा उसका नाम सूर्यकुण्ड कहा जाता है। इसी कुण्ड पर संयोगवश गहलोत राजपूतोंकी एक जाति-सुधार सभा हो रही थी। इस सभामें अनेक सज्जनोंके तद्विषयक जोशीले भाषण हो रहे थे। अचानक मुनिसंघ भी वहाँ जा पहुँचा। सभाके आग्रहसे मुनियोंने भी अपने भाषण दिये एवं उनकी इस प्रवृत्ति की सराहना की। मुनि श्री ने उपदेशमें जोर देते हुए कहा कि समाज-सुधार तभी सम्भव है जब आप सभी मद्य-मांसादि सप्त व्यसनोंका त्याग कर दें। तभी आपके समाजकी उन्नति हो सकती है और तभी आपका स्तर ऊँचा उठ सकता है। समय का ही प्रभाव था कि उन तामसी प्रवृत्तिवाले पुरुषोंकी भी बुद्धि पलट गई और वे एक स्वरसे चिल्ला उठे—हमें स्वीकार है।

तत्काल ही उपस्थित सज्जनोंने मद्य-मांसादि कुटेवोंका त्याग कर दिया एवं सम्मिलित रूपसे एक लिखित प्रतिज्ञा-पत्र दिया। पाठकोंकी जानकारीके लिये प्रतिज्ञा-पत्र उन्हींके शब्दोंमें यहाँ उद्धृत किया जाता है :—

प्रतिज्ञा-पत्र

आज ता० ३०-४-५३ को हमारी गहलोत राजपूतोंकी जाति-सुधारकी विशाल सभा हुई। जिसमें जैन मुनि श्री प्रतापमलजी महाराज और मुनि श्री हीरालालजी महाराजके मद्य-मांस निषेध पर भाषण हुए। जिसको सारी सभाने मान लिया और महाराज महात्माजीको कोटिशः धन्यवाद दिया।

मुकाम—सूर्यकुण्ड सही—

पोस्ट—बरकट्ठा मास्टर बुधनसिंह गहलोत

थाना—बरही सा० चिचाकी, पो० कोडरमा

जिला—हजारीबाग सही—प्रेमचन्द सिंह सा० गौरहर

सम्मेद शैलावलोकन

यहाँसे विहार करके शनैः शनैः मुनि श्री गिरिराज सम्मेदशिखरके पादमूलमें पहुँचे। अब तक पूज्य स्वर्गीय मन्नालालजी जी महाराज द्वारा की जानेवाली प्रातःकालीन प्रार्थनामें "सम्मेद शिखरपर बीस जिनवर मोक्ष पहुँचा मुनिवरों" इत्यादि पद केवल कर्णगोचर ही किया था किन्तु आज वह दृष्टिगोचर होने लगा। गिरिराजके शान्तिमय प्राकृतिक सौन्दर्यने मनको सहसा अपनी ओर आकर्षित कर लिया और इस पवित्र निर्वाण-भूमिके अवलोकनकी दृढ़ प्रतिज्ञा की। तदनुसार ३ मईको ईशरी पहुँचे।

ईशरी :—यहाँपर दिगम्बर जैन तेरहपन्थी धर्मशाला में

ठहरे। यहां श्वेताम्बर एवं बीसपन्थी धर्मशालाएँ भी हैं। ईशरी भी सचमुच ईश्वरीय स्थान है। यहां-प्रकृतिका सौन्दर्य, जलवायु एवं वातावरण धर्म-साधनाके सर्वथा अनुकूल है। सम्मेदशिखर के दर्शनार्थ पधारे सभी व्यक्ति इसी स्टेशन "पारसनाथ" पर उतरते है। यहांसे मधुवन जाने-आनेकी मोटरोंकी अच्छी व्यवस्था है तथा यहांकी धर्मशालाओंके कर्मचारीगण यात्रियों की सेवामें सदैव उपस्थित रहते है एवं उनकी पूर्ण व्यवस्था भी करते हैं। यहांपर एक उदासीनाश्रम तथा जैन हाईस्कूल भी है। उदासीनाश्रममें त्यागीगण धर्म-साधन करते हैं। धर्म-ध्यानके लिये यहां अच्छा समागम है। प्रतिदिन नियमितरूपसे तीन बार स्वाध्याय होता है। प्रातःकालीन स्वाध्यायमें मुनिश्री ने भी भाग लिया।

मधुवन :—ईशरीसे एक श्वेताम्बर धर्मशालाके कर्मचारीको लेकर पहाड़ी रास्तेसे मधुवनके लिये रवाना हुए। इस रास्तेसे मधुवन केवल सात मील पडता है। मधुवन पहुँचते ही राय-बहादुर आनरेरी मजिस्ट्रेट श्रीमान् सेठ कुन्दनमलजी लालचन्द जी व्यावरवालों द्वारा निर्मापित खुले एवं हवादार स्वच्छ बंगले में ठहरे। मधुवन यह नाम इस स्थानकी रमणीयतासे चरितार्थ हो रहा है। तीनों—तेरहपन्थी, श्वेताम्बर एवं बीसपन्थी कोठियों की शोभा निराली ही है। श्वेताम्बर कोठीके मैनेजर सा० तथा कर्मचारीगण बड़े ही सेवाभावी हैं।

अब तक केवल बाह्यरूपका ही अवलोकन हुआ था। अतः

ता० ६ को शैलावरोहण भी प्रारम्भ किया एवं अढ़ाई मील ऊपर गन्धर्व नालेपर जाकर ठहर गये। यहांपर भी दो कमरोंमें रा० ब० आ० म० श्रीमान् सेठ कुन्दनमलजी लालचन्दजी व्यावरवालों का नाम अङ्कित था। इस स्थानपर रात्रिमें कोई भी मनुष्य नहीं रहता। साथ-ही-साथ सघन वृक्षावली के कारण गहन एवं भयानक भी वन गया है। जलादि पानके हेतु सिंहादि क्रूर जन्तु भी आ-जाया करते हैं। यहींपर यात्रियोंके जलपानकी व्यवस्था होती है। मुनि-साधुओंको तो प्रायः यहां विश्राम करना ही होता है। अतः ऐसे स्थानोंको सुरक्षित एवं सुव्यवस्थित रखनेकी परमावश्यकता है ताकि यात्रीगण निर्भय हो यहां कुछ क्षण विश्राम पा सकें।

दूसरे दिन प्रातःकाल "सणीयं" "सणीयं" इस आगम वाक्यानुसार पुनः आरोहण प्रारम्भ किया। सर्वप्रथम गौतम गणधरकी टोंकपर पहुँचे वहां कुछ क्षणों तक विश्राम किया। तत्पश्चात् बीस तीर्थङ्करोंके विविध निर्वाणस्थलोंका अवलोकन कर उनका नाम स्मरण किया। इस समय बड़ी ही शान्तिका अनुभव हो रहा था। समस्त सांसारिक बाधाओंसे रहित यह स्थान मुमुक्षुओंके लिये सचमुच सिद्धपीठ है। इतने बड़े और सघन वनके होते हुए भी कहीं सिंहादि क्रूर जन्तुओंके दर्शन भी नहीं होते यदि कभी अचानक सामने भी आ जाय तो किसीका बाल भी बाँका नहीं होता। आज तक इस प्रकारकी एक भी घटना सुनाई नहीं दी कि किसी क्रूर जन्तुने किसीको हानि

पहुँचाई हो। भगवान् वीतरागके प्रभावसे यदि क्रूर जन्तु अपनी क्रूरता छोड़ देते हैं, तो इसमें आश्चर्यकी बात ही क्या है? इस गिरिराजकी इन्हीं विशेषताओंके कारण २४ तीर्थङ्करोंमेंसे २० तीर्थङ्करोंने इसे अपना निर्वाण स्थान चुना।

छहों मुनियोंने मीलों तक नगाधिराजके भव्य प्राकृतिक स्थानोंका अवलोकन किया। कुछ क्षणोंके लिये तो ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो ऐसे अलौकिक स्थानमें आ गये हों जहांपर सांसारिक बाधाएँ छू तक न गई हों।

इस प्रकार यथाशक्ति भ्रमण करनेके पश्चात् शारीरिक बाधाओं ने किसी विश्राम स्थलकी ओर ध्यान आकर्षित कराया। नजर दौडानेसे सुन्दर जल मन्दिर दिखाई दिया एवं ज्ञात हुआ कि यहां गर्म जलकी सुन्दर व्यवस्था सदैव रहती है, फिर क्या था, तत्काल वहां पहुँचे जहां शान्तिपूर्ण वातावरणमें एक रात्रि व्यतीत की।

इस शैलाधिराजकी अन्य विशेषताओंकी अपेक्षा एक ध्यान देने योग्य विशेषता यह है कि इस पर्वतपर जैनोंका एकाधिकार है। कहीं भी अन्य मतावलम्बी देवी-देवताओंके नाम निशान भी दिखाई नहीं देते। फिर भी भील लोग खास-खास अवसरों पर भगवान् पार्श्वनाथजीकी 'बाबा पारसनाथ' के नामसे भक्ति करते हैं।

झरिया

पहाड़ से सीधे रास्तेसे उतर कर तोपचांची, कतरास आदि होते हुए १४ मईको प्रातः ६॥ बजे झरिया पहुँचे। यहांपर सर्व मुनि श्री लतामण्डपों एवं पुष्पोंसे सुसज्जित आनन्द

भवनमें पहुँचे। यहींपर झरिया समाजके सभी सज्जन सकुटुम्ब मुनिश्रियोंके वन्दनके लिये आये एवं बड़े जुलूस तथा समारोहके साथ जय-ध्वनि करते हुए मुनिश्रियोंको नगरके मध्यमें बने नवीन उपाश्रयमें ले गये। यहांपर विशाल जनसमूहके समक्ष मुनियोंके प्राथमिक उपदेश हुए। यहांपर ता० १५ मईको श्री सेठ रवजी दोशीकी धर्मपत्नी अ० सौ० श्री अचरज वाईजीके वर्षीतपका पूर्ति समारोह हुआ। इस अवसरपर मुनियोंने वर्षीतपके महात्म्य पर प्रकाश डाला। उक्त सेठजीने भी अपने इष्ट-मित्रोंको एक प्रीतिभोज दिया। यहांपर धर्मकी अच्छी प्रभावना रही। प्रतिदिन ७॥ से ८॥ तक प्रवचनोंका आयोजन किया जाता था एवं अनेक सज्जन नियमितरूपसे आकर मुनियोंके समक्ष प्रतिक्रमणादि भी किया करते थे। जनताका मुनियोंके प्रति अगाढ़ स्नेह रहा।

एक दिन प्रातःकाल श्री दुलीचन्द्रजी जैनके आग्रहसे पं० मुनिश्री प्रतापमलजी महाराज व पं० मुनिश्री हीरालालजी महाराज भागा ग्राम पधारे। यहांपर नवनिर्मित स्वतन्त्र भारत विद्यालयके भवनमें मुनिद्वयके जोशीले भाषण हुए। यहांपर सप्त व्यसन निषेधपर जोर दिया और तत्काल अनेक सज्जनोंने यथाशक्ति सप्त व्यसनोंका त्याग किया। इस प्रकार झरियामें अनेक प्रकारके धर्म-प्रचारादि कार्य हो ही रहे थे कि कलकत्तेसे एक डेपुटेशन मुनिश्रियोंके चरणोंमें कलकत्तामें चातुर्मासकी विनतीके लिये आया। उनकी विनती स्वीकार कर मुनिश्रियोंने कलकत्ते की ओर विहार किया।

बङ्गाल प्रान्त

यद्यपि झरिया समाजकी यह तीव्राकांक्षा थी कि छहों मुनि इस वर्ष यहीं चातुर्मास करें ताकि जनता अधिक-से-अधिक धर्म-लाभ ले सके। इसके लिये यहांकी जनताने पर्याप्त प्रयत्न भी किये किन्तु परोपकारी मुनि ऐसा न कर सके और कलकत्ता के समाजकी विनती स्वीकार कर उस ओर विहारका निश्चय किया। "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावनावाले उदारचेता सन्त समस्त संसारको अपना बन्धु समझते हैं। अतः झरियाकी जनता पर्याप्त लाभ ले चुकी। साधुका कर्तव्य है कि वे और लोगोंकी ओर भी ध्यान दें, उन्हें सत्पथपर लावें। इसलिये १८-६-५३ को प्रातःकाल सैकड़ों नर-नारियोंके बीचमें जय-ध्वनि पूर्वक विहार किया। नगरके उपान्तमे स्थित आनन्द भवनमे मुनिराजोंने अन्तिम मंगल पाठ सुनाया जनता अपने-अपने गृहों को लौट गई। इस समयका दृश्य दर्शनीय था। सैकड़ोंकी आँखोंसे प्रेमाश्रु ढुल पड़े। अनेकोंके कण्ठ रुद्ध गये। वे विवश

हो मुनिश्रियोंको [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] होते देख ही सके पर कुछ कह न सके।

बङ्गाल प्रान्तके विहारके लिये इन मुनियोंका यह सम्भवतः दूसरा ही प्रयत्न था। अन्यथा अब तक इस प्रान्तमें कठिनाइयों के कारण विहार रुका हुआ सा था। कारण कि यहांकी अधिकांश जनता मांसभोजी है। इसलिए आहारपानीकी कठिनाइयोंके अतिरिक्त [illegible] श्रावकोंका भी अभाव दृष्टिगोचर होता है फिर भी 'पापसे घृणा करना चाहिये पापीसे नहीं' इस बातको सोच कर कुछ सुधारकी भावनाको लेकर परिषहोंको कुचलते हुए आगे बढ़े। आमिषभोजी इस प्रान्तमें बर्नपुर, आसनसोल, रानीगंज वर्द्धमान, कलकत्ता आदि ऐसे नगर हैं, जहांपर जैनों के अतिरिक्त निरामिषभोजी उच्चवर्गके मारवाड़ी, गुजराती भाइयोंका निवास हैं जो कि कुछ वर्षोंसे यहां बसे हुए हैं।

बङ्गाल प्रान्तके इस विहारको सफल बनानेका श्रेय तपस्वी प० मुनि श्री जगजीवनजी महाराज तथा बालब्रह्मचारी पं० मुनि श्री जयन्तिलालजी महाराज व समाजके प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री धीरजभाई तुरखिया और लाला कपूरचन्द्रजी सुराणाको है जिनकी समय-समयपर दी गई बलवती प्रेरणाओंने दुर्गम मार्ग को सुगम बनाकर प्रोत्साहित किया।

आसनसोल

झरियासे विहार कर मुनि श्री क्रमशः धनसार, धनबाद, लक्ष्मीनगर, बड़वा, मुगमो, बराकर, न्यामतपुर होते हुए २४

श्रीरामपुरमें सार्वजनिक प्रवचन

वर्द्धमानसे विहार कर शक्तिगढ़-महामारी-पांडुआ-मगरा-चन्द्रनगर,सेवड़ापुली होते हुए १० जुलाईको श्रीरामपुर पहुँचे। यह कलकत्तेका ही उपनगर है। मुनिवर यहां स्थित रामपुरिया काटन मिलमें पधारे। समीपस्थ होनेसे कलकत्ताके सज्जनोंकी भीड़ उमड़ पड़ी। यहांपर तीन दिन तक विराजनेसे पर्याप्त धर्मप्रभावना हुई। ता० १२ को मिल मालिक श्री जयचन्दलाल जीने सार्वजनिक प्रवचनका आयोजन किया। प्रवचनकी सूचना पहलेसे ही समस्त हिन्दी दैनिक पत्रोंमें प्रकाशित करवा दी गई थी। फलस्वरूप हजारोंकी संख्यामें जनता यहां उपस्थित हो गई। बिना किसी भेदभावके समस्त मारवाड़ी, गुजराती एवं पञ्जाबी सज्जनोंने व्याख्यान सुने। इस दिन संघ-ऐक्य और संघ-प्रेमकी भावना लोगोंके हृदयमें तरंगे ले रही थी।

निश्चित समयपर पं० मुनिवर श्री प्रतापमलजी महाराज व पं० मुनिवर श्री हीरालालजी महाराजके प्रवचन हुए। उपस्थित जनता अत्यधिक प्रभावित हुई। उधर जयचन्द्रलालजीकी प्रसन्नताकी तो सीमा ही न थी। अपने घरमें हजारोंकी संख्या में धर्मप्रेमी बन्धुओंको आया देखकर उन्होंने अपनेको धन्यभाग्य समझा एवं धर्मप्रेमका अच्छा उदाहरण उपस्थित किया। आगत सज्जनोंके सत्कारमें उन्होंने सबको एक शानदार प्रीतिभोज दिया। सभी उपस्थित सज्जनोंने सानन्द भोजन कर घरकी राह ली।

यहाँ भारत सरकारके उप-वित्त-मन्त्री श्री मणिभाई चतुरभाई शाह व पार्लियामेंटके सदस्य श्री राजपत सिंहजी दुगड़ तथा टाटाके सेठ निर्भयराम भाई कामाणी आदिने मुनियोंके दर्शन किये।

कलकत्तामें पादार्पण

श्रीरामपुरसे रवाना होकर मुनिवर बेलूर, लिलुआ, हबड़ा होते हुए १७ जुलाईको कलकत्ता पधारे। इस महानगरमें ता० १५ से ही आम हड़ताल एवं उपद्रवोंके कारण सारे शहरमें १४४ धारा लागू थी। इस धाराके अनुसार जुलूस तो क्या पाँच व्यक्ति भी एकत्रित नहीं हो सकते है। अतः शहर भरमें निस्तब्धता छाई हुई थी।

कलकत्ता श्रीसंघके समक्ष स्वागतके आयोजनकी विषम समस्या थी। जहाँ ५ व्यक्तियोंसे अधिक व्यक्ति एकत्रित भी नहीं हो सकते, वहाँ स्वागत कहाँ सम्भव था ? विवश हो स्वागत का विचार छोड़ना पडा, फिर भी जनतामें उत्साहकी कमी नहीं हुई और एक-एक करके भी भक्तजन हावड़ा पहुँचने लगे।

समयानुसार मुनियोंने हावड़ासे कलकत्तेकी ओर विहार किया। जयध्वनि करता हुआ विशाल जनसमूह भी मुनियोंके साथ चला। शुक्लवस्त्रधारी, मुँहपत्ती बांधे व रजोहरण लिये मुनियोंको देखकर अजैन जनता विस्मयमें पड़ गई। उनमेंसे अनेकोंने तो जैन मुनियोंको देखा तक न था।

संसार प्रसिद्ध विज्ञानके चमत्कार हावड़ा ब्रिजसे पार होते

श्रीरामपुरमें सार्वजनिक प्रवचन

वर्द्धमानसे विहार कर शक्तिगढ़-महामारी-पांडुआ-मगर चन्द्रनगर,सेवड़ापुली होते हुए १० जुलाईको श्रीरामपुर पहुँचे यह कलकत्तेका ही उपनगर है। मुनिवर यहां स्थित रामपुरिय काटन मिलमें पधारे। समीपस्थ होनेसे कलकत्ताके सज्जनोंक भीड़ उमड़ पड़ी। यहांपर तीन दिन तक विराजनेसे पर्याप्त धर्मप्रभावना हुई। ता० १२ को मिल मालिक श्री जयचन्दलाल जीने सार्वजनिक प्रवचनका आयोजन किया। प्रवचनकी सूचन पहलेसे ही समस्त हिन्दी दैनिक पत्रोंमें प्रकाशित करवा दी गई थी। फलस्वरूप हजारोंकी संख्यामें जनता यहां उपस्थित हो गई। विना किसी भेदभावके समस्त मारवाड़ी, गुजराती एवं पञ्जाबी सज्जनोंने व्याख्यान सुने। इस दिन संघ-ऐक्य और संघ-प्रेमकी भावना लोगोंके हृदयमें तरंगे ले रही थी।

निश्चित समयपर पं० मुनिवर श्री प्रतापमलजी महाराज व पं० मुनिवर श्री हीरालालजी महाराजके प्रवचन हुए। उपस्थित जनता अत्यधिक प्रभावित हुई। उधर जयचन्द्रलालजीकी प्रसन्नताकी तो सीमा ही न थी। अपने घरमें हजारोंकी संख्या में धर्मप्रेमी बन्धुओंको आया देखकर उन्होंने अपनेको धन्यभाग्य समझा एवं धर्मप्रेमका अच्छा उदाहरण उपस्थित किया। आगत सज्जनोंके सत्कारमें उन्होंने सबको एक शानदार प्रीतिभोज दिया। सभी उपस्थित सज्जनोंने सानन्द भोजन कर घरकी राह ली।

यहाँ भारत सरकारके उप-वित्त-मन्त्री श्री मणिभाई चतुर-भाई शाह व पार्लियामेंटके सदस्य श्री राजपत सिंहजी दुगड़ तथा टाटाके सेठ निर्भयराम भाई कामाणी आदिने मुनियोंके दर्शन किये।

कलकत्तामें पादार्पण

श्रीरामपुरसे रवाना होकर मुनिवर बेलूर, लिलुआ, हबड़ा होते हुए १७ जुलाईको कलकत्ता पधारे। इस महानगरमें ता० १५ से ही आम हड़ताल एवं उपद्रवोंके कारण सारे शहरमें १४४ धारा लागू थी। इस धाराके अनुसार जुलूस तो क्या पांच व्यक्ति भी एकत्रित नहीं हो सकते है। अतः शहर भरमें निस्तब्धता छाई हुई थी।

कलकत्ता श्रीसंघके समक्ष स्वागतके आयोजनकी विषम समस्या थी। जहाँ ५ व्यक्तियोंसे अधिक व्यक्ति एकत्रित भी नहीं हो सकते, वहाँ स्वागत कहाँ सम्भव था ? विवश हो स्वागत का विचार छोड़ना पडा, फिर भी जनतामें उत्साहकी कमी नहीं हुई और एक-एक करके भी भक्तजन हावड़ा पहुँचने लगे।

समयानुसार मुनियोंने हावड़ासे कलकत्तेकी ओर विहार किया। जयध्वनि करता हुआ विशाल जनसमूह भी मुनियोंके साथ चला। शुक्लवस्त्रधारी, मूँहपत्ती बांधे व रजोहरण लिये मुनियोंको देखकर अजैन जनता विस्मयमें पड़ गई। उनमेंसे अनेकोंने तो जैन मुनियोंको देखा तक न था।

संसार प्रसिद्ध विज्ञानके चमत्कार हावड़ा ब्रिजसे पार होते

श्रीरामपुरमें सार्वजनिक प्रवचन

वर्द्धमानसे विहार कर शक्तिगढ़-महामारी-पांडुआ-मगरा-चन्द्रनगर,सेवड़ापुली होते हुए १० जुलाईको श्रीरामपुर पहुँचे। यह कलकत्तेका ही उपनगर है। मुनिवर यहां स्थित रामपुरिया काटन मिलमें पधारे। समीपस्थ होनेसे कलकत्ताके सज्जनोंकी भीड़ उमड़ पड़ी। यहांपर तीन दिन तक विराजनेसे पर्याप्त धर्मप्रभावना हुई। ता० १२ को मिल मालिक श्री जयचन्दलाल जीने सार्वजनिक प्रवचनका आयोजन किया। प्रवचनकी सूचना पहलेसे ही समस्त हिन्दी दैनिक पत्रोंमें प्रकाशित करवा दी गई थी। फलस्वरूप हजारोंकी संख्यामें जनता यहां उपस्थित हो गई। बिना किसी भेदभावके समस्त मारवाड़ी, गुजराती एवं पञ्जाबी सज्जनोंने व्याख्यान सुने। इस दिन संघ-ऐक्य और संघ-प्रेमकी भावना लोगोंके हृदयमें तरंगे ले रही थी।

निश्चित समयपर पं० मुनिवर श्री प्रतापमलजी महाराज व पं० मुनिवर श्री हीरालालजी महाराजके प्रवचन हुए। उपस्थित जनता अत्यधिक प्रभावित हुई। उधर जयचन्द्रलालजीकी प्रसन्नताकी तो सीमा ही न थी। अपने घरमें हजारोंकी संख्या में धर्मप्रेमी बन्धुओंको आया देखकर उन्होंने अपनेको धन्यभाग्य समझा एवं धर्मप्रेमका अच्छा उदाहरण उपस्थित किया। आगत सज्जनोंके सत्कारमें उन्होंने सबको एक शानदार प्रीतिभोज दिया। सभी उपस्थित सज्जनोंने सानन्द भोजन कर घरकी राह ली।

यहाँ भारत सरकारके उप-वित्त-मन्त्री श्री मणिभाई चतुर-भाई शाह व पार्लियामेंटके सदस्य श्री राजपत सिंहजी दुगड़ तथा टाटाके सेठ निर्भयराम भाई कामाणी आदिने मुनियोंके दर्शन किये।

कलकत्तामें पादार्पण

श्रीरामपुरसे रवाना होकर मुनिवर वेलूर, लिलुआ, हवडा होते हुए १७ जुलाईको कलकत्ता पधारे। इस महानगरमें ता० १५ से ही आम हड़ताल एवं उपद्रवोंके कारण सारे शहरमें १४४ धारा लागू थी। इस धाराके अनुसार जुलूस तो क्या पांच व्यक्ति भी एकत्रित नहीं हो सकते हैं। अतः शहर भरमें निस्तब्धता छाई हुई थी।

कलकत्ता श्रीसंघके समक्ष स्वागतके आयोजनकी विषम समस्या थी। जहाँ ५ व्यक्तियोंसे अधिक व्यक्ति एकत्रित भी नहीं हो सकते, वहाँ स्वागत कहाँ सम्भव था ? विवश हो स्वागत का विचार छोड़ना पडा, फिर भी जनतामें उत्साहकी कमी नहीं हुई और एक-एक करके भी भक्तजन हावड़ा पहुँचने लगे।

समयानुसार मुनियोंने हावड़ासे कलकत्तेकी ओर विहार किया। जयध्वनि करता हुआ विशाल जनसमूह भी मुनियोंके साथ चला। शुक्लवस्त्रधारी, मुँहपत्ती बांधे व रजोहरण लिये मुनियोंको देखकर अजैन जनता विस्मयमें पड़ गई। उनमेंसे अनेकोंने तो जैन मुनियोंको देखा तक न था।

संसार प्रसिद्ध विज्ञानके चमत्कार हावड़ा ब्रिजसे पार होते

होते मुनिसंघको देखनेके लिये जनता सैकड़ोंकी संख्यामें उमड़ पड़ी। यद्यपि समय तथा परिस्थितियां अनुकूल न थी। फिर भी जुलूस प्रमुख-प्रमुख राजमार्गों व बाजारोंसे होता हुआ, बिना किसी रोकटोकके जयध्वनिके साथ २७, पोलक स्ट्रीट स्थित नवनिर्मित उपाश्रयमें पहुँचा। इसीका नाम "यतो धर्मस्ततो जयः" है।

कहा जाता है कि जब मनुष्य अपने लक्ष्यकी सिद्धि कर लेता है, तब वह उसकी प्राप्तिके लिये सहन किये गये घोर कष्टों को भी भूल जाता है। उसी प्रकार आज मुनिवर भी अपने गंतव्य स्थानपर पहुँचकर सुखका अनुभव कर रहे थे। फिर जनताकी भक्ति व उत्साहने आये हुए कष्टों और परिषहोंका स्मरण भी न आने दिया। उपाश्रयमें पहुँचते ही मुनिवरों का प्राथमिक प्रवचन एवं मङ्गलसूत्रका पाठ हुआ, जिसको श्रवणकर जनता मुग्ध होती हुई अपने-अपने घरोंको लौट गई।

कलकत्ता चातुर्मास

यद्यपि कलकत्तेमें जैनोंका पर्याप्त प्रभुत्व है और प्रायः सभी सम्पन्न हैं। किसी बातकी कमी नही है। किन्तु इस प्रान्त और अन्य परिस्थितियोंके कारण यहांकी जनताको मुनि-साधुओंके दर्शन प्रायः मुश्किलसे प्राप्त होते है। स्वभावतः जैन मुनियोंकी साधना बड़ी ही कठोर है, अतः इस प्रान्तकी परि-स्थितियाँ तथा कलकत्ताकी स्थिति उनके प्रतिकूल पड़ती है, अतः प्रायः मुनिगण सम्मेदशिखरकी यात्रा करके ही पुनः

उसी ओर लौट जाते हैं। वे आगे नहीं बढ़ते, किन्तु इन मुनियो ने यह विशेष कदम उठाया था और उसको सफल भी बनाया। अतः स्वभावतः जनताका प्रेम मुनियोंके प्रति उमड़ पड़ा और प्रत्येकके मनमें एक नई लहर दौड़ गई। दुर्लभके सुलभ होने पर ऐसा ही होता है। फिर भी कलकत्तेकी व्यावसायिक परिस्थितियोंके कारण यहाँके लोगोंको उस प्रकार समय नही मिलता, जिस प्रकार अन्य जगहके लोगोंको। उपाश्रयमें प्रतिदिन प्रवचन होते थे फिर भी प्रति रविवारको विशेष आयोजन होता था। इसमें जनता ५-५ हजार तककी संख्यामें उपस्थित होती थी। इन रविवासरीय कार्यक्रमोंकी योजना बहुत ही सफल रही और अनेकों महत्त्वपूर्ण कार्य भी हुए। विशेष-विशेष अवसरोंपर मूर्तिपूजक साधु-साध्वी भी सम्मिलित रूपसे भाषण दिया करते थे। इस प्रकारके वात्सल्यपूर्ण व्यवहारों पर जनताने पर्याप्त सन्तोष व्यक्त किया। यह तो सम्भव नहीं कि इस छोटी-सी पुस्तिकामें कलकत्तेके वे सभी आयोजन निबद्ध कर दिये जायँ, जिनपर कि एक स्वतन्त्र पुस्तक लिखी जा सकती है फिर भी विशेष आयोजनोंका दिग्दर्शन यहां कराया जायगा।

पर्यूषण महापर्व

अन्य वर्षोंकी अपेक्षा इस वर्ष पर्यूषणमें विशेष आनन्द एवं उत्साह रहा। प्रातः-मध्याह्न एवं रात्रिके व्याख्यानोंमें जनता हजारोंकी संख्यामें उपस्थित रहती थी। इस अवसर-पर धर्मकी

अच्छी जागृति हुई। अनेक सज्जनोंने व्रत नियम भी लिए। इसी समय पर अनेक सार्वजनिक कार्योंकी जैसे —कन्याशाला आयंबिलखाता, जैन भोजनालय आदिकी योजनायें भी रखी गई। एतदर्थ जनतासे अच्छी आर्थिक सहायता प्राप्त हुई। अन्तिम दिन ता० १३-६-५३ को स्थानीय स्थानकवासी जैन सभाके मन्त्री श्री फूसराजजी सूरजमलजी वच्छावतने जैन-भवन निर्माणकी योजना रखी जिसके लिए एक लाख रुपयेका चन्दा भी एकत्रित हुआ। नथमलजी टांटिया एम ए डि लिट, व श्री मदनकुमारजी मेहताने वैशाली जैन विश्वविद्यालयकी योजना उपस्थित करते हुए सहयोगकी अपील की।

स्नेह-सम्मेलन

जैन सभा द्वारा आयोजित पर्यूषण - पर्व व्याख्यानमालाके अन्तिम दिन मुनिवरोंके दिगम्बर जैन भवनमें तप व क्षमापर भाषण हुए, तत्पश्चात् श्री सोहनलालजी 'दुग्गड' एवं धर्मचंदजी सरावगीके भी प्रभावशाली भाषण हुए।

इसी दिन कलकत्ते के इतिहासमें एक अभूत पूर्व कार्य हुआ। वह था एक प्रीतिभोज। इस प्रीतिभोजकी विशेषता थी कि सभी स्थानकवासी सज्जन प्रान्तीयता एवं जातीयताका भेदभाव छोडकर इस प्रीतिभोजमें सम्मिलित हुए। प्राय धर्म-ग्रन्थोंमें सहधर्मियोंका प्रीतिभोज प्रेमका कारण बताया गया है। आज इस सत्यका भी अनुभव हुआ। विभिन्न प्रान्तोंके निवासियोंने एक साथ भोजनकर एवं एक स्थानपर मिलकर

बडे ही आनन्दका अनुभव किया। वह वेला भी बडी सुहावनी थी।

क्षमतक्षमापना-सम्मेलन

समस्त जैन समाजोंकी ओरसे ता० २७-६-५३ को एक सामूहिक क्षमतक्षमापना - दिवस मनानेका आयोजन किया गया। इसमें सभी दिगम्बर, श्वेताम्बर, स्थानकवासी, तेरहपन्थी, मूर्तिपूजक, आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर मुनियोंके क्षमाके महत्त्वपर भाषण हुए। इस आयोजनमें मुनिवर वल्लभविजयजी, न्यायविजयजी, साध्वी श्री कंचन-श्रीजी, शीलवतीजी, मृगावतीजी आदि भी उपस्थित थीं, उन्होंने भी संगठित रहनेकी अपील की।

निर्वाणोत्सव

ता० ७-११-५३—आज भगवान् महावीरका निर्वाण दिवस था इस उपलक्ष्यमें प्रातः शास्त्रविशारद पं० मुनिवर हीरा लालजी महाराजने जैनसभामें भगवान् महावीरकी अन्तिम-वाणी उत्तराध्ययन सूत्रका स्वाध्याय किया। इसी अवसर पर संघ मंत्री श्री केशुलाल भाईने प्रमुख साहबका संदेश पढ़कर सुनाया :—

"वीर सम्वत् २४८० नु मंगल प्रभात"

पूज्य महाराज श्री प्रतापमलजी महाराज, महाराज श्री

हीरालालजी म० तथा अन्य मुनि महाराजो उपस्थित बन्धुओं तथा बहिनों !

आजे आपणा परम तीर्थङ्कर श्री श्रीमहावीर प्रभुना निर्वाण-वर्ष सम्वत् २४८० नां मंगल प्रभाते आपणे पूज्य महाराज श्री पासे श्री श्री महामंगलकारी मांगलिक श्रवण तथा नूतन वर्षा-भिनन्दन माटे मल्या छीये ।

आपना श्री संघना महाभाग्योदये ज्यारथी आपणु विशाल-उपाश्रय नुँ निर्माण थयूँ छे त्यार थी आपणा श्री संघने विद्वान मुनि महाराजो नों चातुर्मास नो लाभ मल्यो छे ।

गतवर्ष तपस्वी श्री जगजीवनजी महाराज तथा बा० ब्रह्मचारी श्री जयन्तिलालजी महाराज नां चातुर्मास दरम्यान घणो आनन्द मंगल वर्षायो अने चालु वर्षे पण वहु सरल स्वभावी पूज्य महाराज श्री प्रतापमलजी म० श्री हीरालालजी म० आदि ठाणो ६ नां चातुर्मास मां आपणं स्वधर्मी राजस्थानी बन्धुओं तथा पंजाबी बन्धुओं नो आपण ने सारो सहकार मल्यो छे ।

परम पिता श्री तीर्थङ्कर देवनी आपणा श्री संघनी उपर सतत आशीर्वाद रहो तेवी आपणी नम्र प्रार्थना छेः ।

आजना मंगलमय प्रभाते महाराज श्री नां मांगलिक श्रवण-बाद आपणे अरस-परस नूतन वर्षाभिनन्दन करशु ! आ० नवुँ वर्ष आपणा श्री संघमा खूब आनन्द अने मंगलकारी नीवड़े अने श्री श्री सद्धर्मा तथा सङ्घठनका परस्पर सद्‌भावनां, एकता खूब

फलो-फूलो तेवी आपणी परम कृपालु परमात्मा पासे आजनों आ शुभ दिने प्रार्थना छे।

हूँ छूं श्री संघनो सेवक
कानजी पानाचन्द
प्रमुख—श्री कलकत्ता जै० श्वे० स्था० (गुजराती) संघ

(भाई दूज) ता० ८-११-५३ रविवार

श्री लक्ष्मीपतसिंह श्रीपतसिंह दुगड हाल, श्री जैन भवन कलाकार स्ट्रीटमें एक विशाल स्नेह - सम्मेलन हुआ जिसमें उक्त मुनियों एवं साध्वी श्री श्री मृगावतीजी म० आदि वक्ताओं के भाषण हुए। आज सभाके अध्यक्ष सेठ सोहनलालजी दुगड थे।

इसी दिन मध्याह्नमें राय साहब लाला टेकचन्दजी के सुपुत्र लाला अमृतलालजी की अध्यक्षतामें पञ्जावी भाइयोंका एक स्नेह सम्मेलन हुआ। उसमें उक्त मुनिवरोंने संगठन विषयपर प्रवचन किए। फलस्वरूप महावीर जैनसभाकी स्थापना हुई।

लोंकाशाह-जयन्ती महोत्सव

ता० १८ तथा १६ नवम्बर को पं० मुनिवर प्रतापमलजी म० महाराज व पं० मुनिवर हीरालालजी महाराज के तत्त्वावधानमें "लोंकाशाह जयन्ती" मनानेका आयोजन किया गया। सभा-पति पद पर क्रमशः १८ व १६ को श्री सोहनलालजी दुगड़ तथा पश्चिमी बंगालके स्वायत्त शासन मन्त्री श्री ईश्वरदासजी

विदाई सन्देश

आभार-प्रदर्शनके पश्चात् पं० मुनिवर प्रतापमलजीने छहों मुनिवरोंकी ओरसे धर्मसन्देश सुनाते हुए एक अन्तिम प्रवचन दिया ; जिसमें विभिन्न क्षेत्रोंसे आये हुये सज्जनोंको देखकर हर्ष व्यक्त किया। उन्होंने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा कि यहाँ जैन इतनी अधिक मात्रामें है इसकी तो साधुओंको कल्पना भी न थी! यहाँके चारो समुदायोंमें एकता है। इतना बड़ा समाज, आपसकी एकता तथा भगवत् कृपासे धनधान्यकी सम्पन्नता देखकर मुझे पूर्ण आशा है कि भविष्य में यहाँका समाज धर्म-प्रभावनामें बड़ा हाथ बटायेगा और इसी प्रकार अन्य मुनियोंको लाकर धर्म-प्रचारमें अग्रसर होगा।

अन्तमें मुनिवर ने कहा—मैं यहाँके बच्चोंके धर्म-स्कूल, कन्याशाला और निकट भविष्यमें खुलनेवाली श्राविकाशालाकी हृदयसे उन्नति चाहता हूँ। एवं आशा करता हूँ कि भविष्यमें ये संस्थायें समृद्ध होकर सामाजिक उन्नतिके साथ-साथ धार्मिक उन्नति भी करें।

विहार

जैन स्थानक २७ नं० पोलोक स्ट्रीट से ठीक २ बजे छहों मुनियोंने हजारों नर-नारियोंके जयनादके साथ विहार किया। उस समय समस्त नर-नारी दुःखसागरमें निमग्न थे। जयध्वनि के बीच एक लाचारी और बेबशी स्पष्ट झलक रही थी। जनता ऐसे उपकारी सन्तोंके वियोगसे व्यथित हो उठी। किन्तु

सुपुत्र श्रीआशोककुमार व आलोककुमारने भक्ति और श्रद्धापूर्वक आहार बहराया। लघु बालक आलोकने मुनियोंको अपने पुस्तकालयका निरीक्षण करवाया। इस बालककी बुद्धिमत्ता एवं विनयसम्पन्नता देखकर मुनिगण बहुत ही प्रसन्न हुए।

राज्यपाल भवनमें पादार्पण

ता० ५-१२-५३ को २॥ बजे पं० मुनिवर श्री प्रतामलजी म० व पं० मुनिवर हीरालालजी म० आदि मुनिगण राज्यपाल श्री एच सी मुखर्जीके आमन्त्रण पर राज्यपाल भवन पधारे। मुनिवरोंके आगमनसे राज्यपाल महोदय अत्यन्त प्रसन्न हुए एवं वहां उपस्थित अन्य सज्जन जैन मुनियोंकी चर्याको जानकर अत्यधिक प्रभावित हुए। वहांपर शान्तिपाठ किया गया, जिसमें सभी उपस्थित सज्जनोंने भाग लिया। तदनन्तर मंगलसूत्रके बाद मुनिवर वापिस लौट आये। इस अवसर पर राज्यपालको निर्ग्रन्थ-प्रवचन व जैन साधु आदि ग्रन्थ भेंट किये गये।

दिवाकर-चरमोत्सव

ता० १३-१२-५३ को जस्टिस रमाप्रसाद मुखर्जीके सभापतित्वमें प्रसिद्ध वक्ता जैन दिवाकर श्री चौथमलजी महाराजकी निधन तिथि मनाई गई जिसमें मुनिवरोंके मुनि-जीवन व लोककल्याणपर भाषण हुए। उपस्थिति सन्तोषजनक थी। इसी अवसरपर भारत सरकारके उप-अर्थ-मन्त्री श्री मणिभाई चतुरभाई की धर्म-पत्नी श्री सरस्वतीदेवी एवं उनके सुपुत्र श्री शरत्कुमार जैन भी उपस्थित थे।

जैन-संस्कृति-सम्मेलन

१० जनवरी ५४ को २७ नं० पोलोक स्ट्रीट जैन स्थानकमें पं० मुनि श्री प्रतापमलजी महाराज व पं० मुनि श्री हीरालालजी महाराजके सानिध्यमें एक जैन संस्कृति सम्मेलन मनानेका एक विशाल आयोजन किया गया। इसका सभापतित्व बङ्गालके माननीय राज्यपाल श्री एच० सी० मुखर्जी कर रहे थे। सम्मेलन में अनेक इतिहासज्ञों एवं पुरातत्त्वविदोंने जैन-धर्म एवं संस्कृति पर प्रभावशाली भाषण दिये जिससे जैन-धर्मके अन्धकारमय इतिहास और प्राचीनतापर अच्छा प्रकाश पडा। सम्मेलनमें उपस्थित जनताके अतिरिक्त नेपालके प्रधान मन्त्री श्री मातृका-प्रसाद कोइराला, डा० कालीदास नाग तथा बौद्ध भिक्षु श्री जगदीश कश्यपका नाम विशेष उल्लेखनीय है। इस प्रकारकी सम्मेलनोंसे जैन-धर्म और संस्कृतिपर अच्छा प्रभाव पडता है तथा अन्य विद्वानोंके इस विषयमें क्या मत है; उनका भी पता लगता है। जैन-धर्म व संस्कृतिके उद्धार-कार्यमें इस प्रकारके सम्मेलनोंका बड़ा भारी हाथ है।

कान्फ्रेंस की शाखा का उद्‌घाटन

२५ जनवरीको मुनिवरोंके तत्वावधानमें सेठ अचलसिंह आगरा द्वारा श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंसकी शाखाका उद्‌घाटन किया गया। कलकत्ता जैसे विशाल नगरमें कान्फ्रेंसके कार्यालयका अभाव बहुत ही खटकता था अत इसकी शाखाका उद्‌घाटन कर एक बड़ी भारी कमीकी पूर्ति की गई।

विहार

इस प्रकार कलकत्ता नगरमें अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य करते हुए धर्म-प्रचारकी भावनासे इस नगरसे विहारका निश्चय किया एवं ८ फरवरीको वसन्तपञ्चमीकी शुभ-वेलामे हावड़ाकी ओर विहार किया। यहां भी वही बात थी। जनता नही चाहती थी कि मुनिवर यहांसे विहार करें। अतएव उसको दुःख होनो स्वाभाविक था। फिर भी भक्तिसे ओतप्रोत सहस्रों नर-नारी मुनिवरोंके साथ तीन मील तक पहुँचानेके लिये लिलुआ तक आये। यहांपर रामपुरिया वाटिकामें श्रीसंघकी ओरसे प्रीति-भोजका भी आयोजन किया गयो था। अतः सभी मारवाड़ी, गुजराती व पञ्जाबी भाइयोंने एक साथ बैठकर प्रीतिभोज किया एवं मुनिवरोंसे धर्मलाभ लेकर अपने-अपने निवास-स्थानोंको लौट गये।

शान्तिनिकेतन में

कलकत्तासे विहार कर छहों मुनिवर श्रीरामपुर, चन्द्रनगर, वर्द्धमान आदि नगरों तथा ग्रामोंमें जैन-धर्मका प्रचार करते हुए भारत-प्रसिद्ध, जगद्विख्यात विश्वभारती—शान्तिनिकेतन, बोलपुर में पधारे। रवीन्द्र जैसे विश्व-विख्यात कविको जन्म देने तथा उनके कविता-काननको वृद्धिंगत करनेका श्रेय इसी पवित्र स्थान को है। इस स्थानपर पहुँचते ही "जन-मन-गण" की झङ्कार कानोंमें सुनाई-सी देने लगती है और उस महाकविका सहसा

स्मरण हो आता है। विद्याके क्षेत्रमें इस स्थानका बड़ा महत्त्व है। यहाँ सैकड़ोंकी संख्यामें विदेशी जन आकर भारतीय दर्शन व संस्कृति आदिका अध्ययन करते हैं। अपनी कृतियोंके कारण यह संस्था संसार-प्रसिद्ध होती जा रही है और जब तक यह संस्था है, महाकवि रवीन्द्र अजर और अमर हैं। निकेतनमें पादार्पण करते ही आचार्य श्रीक्षितीशमोहन सेन, श्री प्रभातकुमार मुखर्जी, श्री लालचन्द्रजी मुखिया, श्री नन्दलालजी बोस, श्री सुरेन्द्रकुमारजी आचार्य कला-भवन, श्री धीरेन्द्रदेव उप-आचार्य कला-भवन, प्रतिभादेवी ठाकुर एवं इन्दिरा देवी चौधरानी आदि अनेक विद्वानोंने भव्य स्वागत किया एवं यहाँकी कला, अध्यापन-कार्य तथा अन्य प्रवृत्तियोंसे परिचय कराया।

मुनिवरोंको देखकर ईरान, बर्मा, चीन तथा यूरोप आदिके विदेशी छात्र बहुत ही प्रसन्न हुए और बतलाया कि हमारी प्रबल इच्छा थी कि हम जैन-मुनियोंके दर्शन करें, वह आज सफल हुई। मुनिवरोंकी ओरसे भी मुनि - जीवनके परिचायक परचे बाँटे गये जिससे वे जैन-मुनियोंकी चर्यासे परिचित हो सकें।

यहाँ करीब ढाई घण्टे तक विभिन्न - विभिन्न विषयोंपर बड़े-बड़े विद्वानोंसे वार्तालाप हुआ। ऐसे भी विद्वान् साथमें थे जो एक दूसरेकी भाषाका अनुवाद करते जा रहे थे, ताकि प्रत्येक व्यक्तिको जो हिन्दी नहीं जानता हो; समझनेमें सुविधा हो। वार्तालापके सिलसिलेमें आचार्य क्षितीशमोहन सेनने जैन-धर्मके इतिहासपर बड़ा ही महत्त्वपूर्ण प्रकाश डाला और अच्छी जान-

कारीका परिचय दिया। उन्होंने बतलाया कि जैन-धर्म बंगालमें बौद्धधर्मकी अपेक्षा पहिलेसे था। उन्होंने भद्रबाहु स्वामीके जन्मस्थान पौन्डवर्धनकी चर्चा कर बतलाया कि यह स्थान भद्रबाहु स्वामीका जन्मस्थान हैं जो कि अब पाकिस्तानमें मिला दिया गया है। भद्रबाहु स्वामी सम्राट चन्द्रगुप्तके गुरु थे। ये १२ वर्षीय दुष्कालका अनुमान कर दक्षिणमें चले गये। अबतक इस प्रान्तमें जैन-धर्मका उत्कर्ष-काल था किन्तु उनके दक्षिण चले जानेसे इधर जैन-धर्म लुप्त-सा होने लगा। किन्तु हर्षकी बात है कि कुछ वर्षोंसे आप जैनोंने इस ओर पुनः ध्यान दिया और जैन-धर्मका पुनः इस प्रान्तमें प्रसार प्रारंभ हो गया है। आज मुझे आप लोगोंको अनेक कठनाइयोंके वावजूद भी इस प्रान्तमें धर्मप्रचारार्थ आये हुए देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। मुझे दृढ़ विश्वास है कि अब पुन जैन-धर्म इस प्रान्तमें उसी प्रकार प्रसारको प्राप्त होगा, जिस प्रकार कि भद्रबाहु स्वामीके समयमें था।

वोलपुरमें यद्यपि जैनियोंके घर बहुत कम है फिर भी यहाँ निम्न श्रावकोंके घर है। जो उत्साही तथा अत्यन्त धर्म-प्रेमी हैः—

सेठ उमरावमलजी कानमलजी लुणावत

चन्द्रसिंहजी कोठारी

हीरालालजी देवकरणजी आंचलिया

मंगलचन्दजी जतनमलजी वोथरा

जेसराजजी जीवनमलजी वणोट

जतनमलजी भँवरलालजी सेठिया

कुशलराजजी लुणावत

सेंथियामें मुनि-सम्मेलन

शांति निकेतनमें अनेक विद्वानोंसे महत्त्वपूर्ण भेंट एवं वार्तालाप कर छओं मुनि सेंथियाकी ओर पधारे तथा झरियासे चातुर्मास के पश्चात् तपस्वी मुनिवर श्री जगजीवनजी महाराज, वाल ब्रह्मचारी मुनि श्री जयन्तीलालजी तथा गिरीशचन्द्रजी मुनि भी पधारे। इस प्रकार यहाँ नवमुनियोंके पधारने से एक उत्साह-सा दौड़ गया। इसके उपलक्ष्यमें समस्त मुनियोंका एक सम्मेलन किया गया। इस सम्मेलनमें वाहरकी तथा स्थानीय जैन-अजैन जनता पर्याप्त मात्रामें उपस्थित थी। इस अवसर पर मुनिवर जयन्तीलालजी के उज्ज्वल कार्योंको देखकर समस्त सभाके समक्ष छओं मुनियोंने उन्हें "जैन-समाज-भूषण" की उपाधिसे अलंकृत किया तथा अनेक समाज तथा धर्म-हितके प्रस्ताव पास किये एवं विश्वकल्याण दिवस मनाया। इस प्रकार मारवाड़ तथा गुजरात प्रान्तके मुनियोंके वीच भ्रातृ-प्रेमकी तरह प्रेम देखकर जनता फूली नहीं समायी।

दुमका-देवघर—सेंथियासे रामपुरहाट आदि ग्रामोंमे धर्मप्रचार करते हुए मुनिवर दुमका पधारे। यहाँपर सैंकड़ों मारवाडी सज्जन है। यद्यपि यहाँपर जैन-धर्मानुयायी नहीं है फिर भी मारवाड़ी समाजमें जैन-धर्मका अच्छा प्रचार हुआ। यहाँसे पं० मुनि श्री हीरालालजी महाराज ठाणा तीन ने भागलपुरकी

ओर विहार किया। इसी प्रकार देवघरमें भी पं० मुनिवर प्रतापमलजी महाराज ठाणा ३ तथा तपस्वी श्री जगजीवनजी व बा० ब्र० जैन स० भू० मुनि श्री जयन्तीलालजी ठाणा तीनके पधारनेसे अच्छा धर्म-प्रचार हुआ।

ज्ञान-कल्याणक-स्थल

वराकर—देवघरसे विहार करते हुए छओं मुनि बराकर पधारे। यहाँ छः ग्रामोंके सज्जन पधारे। यहाँपर भगवान महावीरको केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी; ऐसा माना जाता है। यहाँसे वैरागी श्रीरतनलालजी (मुनि रमेशचन्द्जी) कोठारीकी दीक्षाका सूत्रपात हुआ।

श्री सम्मेद शिखरकी ओर

मधुवन —बराकरसे विहार करके पं० मुनिवर प्रतामलजी महाराज तथा तपस्वी मुनि श्री जगजीवनजी महाराज कुल ठाणा छः ता० ५-४ को मधुवन पधारे। यहाँपर तपस्वी मुनिवर जंग-जीवनजी महाराजने भाई श्री रतनलालजी कोठारीकी "दीक्षा-विधि" झरियामें ही सम्पन्न हो—इसप्रकार का महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव झरिया श्रीसंघके समक्ष रखा और प्रातः ठाणा तीनने "बेरमों" की ओर विहार किया।

मधुवन में संयुक्त महावीर-जयन्ती

तपस्वी मुनि श्री जगजीवनजी महाराज ठाणा तीन के विहार के पश्चात् पं० मुनि श्री प्रतापमलजी महाराज ठाणा तीन

यहीं पर रहे। यहाँ चैत्र शुक्ला त्रयोदशीको दोनों दिगम्बर एवं श्वेताम्बर कोठियोंकी ओरसे संयुक्त महावीर जयन्ती मनानेका आयोजन किया गया जिसमें दिगम्बर मुनिवर महावीर कीर्तिजी महाराज व पं० मुनिवर प्रतापमलजी महाराज उपस्थित थे।

ईसरी-उदासीनाश्रममें

मधुवनमें महावीर जयन्ती सानन्द सम्पन्न कर मुनिवर ता० १७-४-५४ को ईसरी पधारे! यहांपर मुनिवर आदि-सागरजी महाराज तथा न्यायाचार्य क्षुल्लक श्री पं० गणेशप्रसाद जी वर्णीसे परिचय एवं वार्तालाप हुआ। प्रात:कालीन प्रवचनके पश्चात पं० मुनिवर प्रतापमलजी महाराजसे कुछ कहने के लिए अनुरोध किया गया। अनुरोध स्वीकार कर आपने जो कुछ कहा, उपस्थित त्यागी मण्डलने उसका हृदयसे स्वागत किया एवं प्रसन्नता व्यक्त की।

झरियामें दीक्षा समारोह

गोधरा मारवाड़ निवासी वैरागी भाई श्री रतनलालजी (मुनिवर रमेशचन्द्रजी) कोठारी कई महिनोंसे मुनिवर प्रताप-मलजी महाराजके चरणोंमें रहकर ज्ञान-ध्यान एवं साधनाका पूर्वाभ्यास कर रहे थे। जब वैरागीजी इस विषयमें योग्य समझे गये, तब झरिया श्रीसंघकी ओरसे श्रमणसंघके प्रधान मन्त्री श्री आनन्दऋषिजीकी सेवामें दर्शनार्थ एवं दीक्षाके लिए अनुमति प्राप्त करनेके लिये उन्हें भेज दिया गया। तदनुसार वैरागीजी

प्रधानश्रीके चरणोंमें जा पहुँचे। साधना-मार्गमें योग्य एवं परिपक्व देखकर वे बहुत ही प्रसन्न हुए एवं सहर्ष दीक्षाकी अनुमति प्रदान कर दी। वैरागीजी वहाँसे लौटकर मार्गमें मुनिवर श्री पृथ्वीचंदजी महाराज, मुनिवर श्री कस्तूरचंद्रजी महाराज तथा मुनिवर श्री सौभाग्यमलजी महाराजके दर्शन कर एवं आशीर्वाद प्राप्त कर पं० मुनिवर प्रतापमलजी महाराजकी सेवामें पुनः वापिस आ गये।

प्रधान मन्त्रीजीका आज्ञा-पत्र देखकर झरिया श्रीसंघ अत्यन्त प्रसन्न हुआ और तत्काल एक बैठक बुलाई इसमें शानदार दीक्षा-समारोह मनानेका निश्चय किया गया। फिर क्या था, समस्त झरिया संघमें प्रसन्नताकी एक लहर-सी दौड़ गयी और जोर-दार तैयारियाँ होने लगीं। पांच दिन पूर्वसे प्रीतिभोजोंका आयोजन किया जाने लगा था। अक्षयतृतीयाके दिन श्री नगीनदासजी हीरालालजीके भव्य भवनके प्राङ्गणमें विशाल मण्डप की तैयारी की गयी। इस अवसरपर झरिया श्रीसंघकी ओरसे एक आमन्त्रण-पत्र कतरासगढ़मे विराजमान जैन-समाज भूषण बालब्रह्मचारी पं० मुनिश्री जयन्तिलालजी महाराज तथा श्री गिरीशचन्द्रजी महाराजके पास भेजा गया; जिसे स्वीकार कर आप लोगोंने यहां पधारनेकी कृपा की।

निश्चित तारीख ६-५-५४ को प्रातःकाल शुभ-वेलामे वैरागी जीका एक विशाल जुलूस निकाला गया, जिसमें स्थानीय तथा ०९के हजारों सज्जन सम्मिलित थे। जुलूस मार्गमें विराजित

मन्दिरवासी मुनियोंके दर्शनकर हजारों नर-नारियोंसे अभिवंदित होता हुआ, सैकड़ों रुपये न्यौछावर करता हुआ तथा हजारों कल-कण्ठोंकी जयध्वनिके साथ लता-मण्डपो तथा पुष्प-पल्लवियोंसे वेष्ठित आनन्द-भवनमें पहुँचा। उस समयका दृश्य दर्शनीय था।

आनन्द-भवनमें पहुँचते ही राजकुमारोंके समान वैभवोंसे सम्पन्न इस बीस वर्षीय नवयुवकने संसार परित्यागार्थ सबको अभिवादन किया। अभिवादन करते हुए इस नवयुवककी शान्त एवं प्रसन्न भोली आकृतिको देखकर हजारों नर-नारियोंकी आँखों से आँसू वह निकले—अहो! यह नवयुवक केवल बीस वर्षीय अल्पावस्थामें ही संसारके विषय-भोगोंको त्याग चला। विधि-पूर्वक संगीत गायनादिके साथ दीक्षा - विधि सम्पन्न की गयी। इस अवसरपर झरिया श्रीसंघने शुभ कार्योंके लिये करीव ३० हजारकी उछवणी (वोली) हुई जो निम्न प्रकार है :—

वाल —सेठ अमृतलाल नानजी डोसी—वेरमो— ३७०१)
पात्रपूरण—सेठ वीरजीभाई रतनसी संघवी, झरिया ३६०१)
पात्रदान —सेठ त्रिभुवनदास एम० शाह, झरिया, ३००१)
वस्त्रदान—सेठ देवचन्द अमोलकचन्द मेहता, कतरासगढ़ २७५१)
रजोहरण दान—सेठ मणिलाल राघवजी कोठारी, वेरमो २१०१)
शास्त्र-दान—सेठ दलपतराय प्रभुदयाल मेहता वर्द्धमान २१०१)
उपकरण-दान—सेठ कन्हैयालाल वेचरदास मोदी झरिया १७५१)
कलशापूरण—सेठ उमियाशङ्कर केशवजी मेहता झरिया, १५०१)
तिलक करनेका—सेठ धीरजलाल नागरदास शाह राँची २२५)

वस्त्र-ग्रहण—सेठ हरखचन्द भोजराज सेंथिया १५१)

इस दीक्षा-विधिकी सम्पन्नताका समस्त श्रेय जैन स० भू० बा० ब्र० पं० मुनिवर जयन्तीलालजी महाराजको है। इनके अतिरिक्त इस समारोहको सफल बनानेमें जिन सज्जनोंने प्रमुख भाग लिया उनकी नामावली निम्न प्रकार है :—श्री वीरजीभाई कम्पनी बेंकर्स, श्री उमियाशङ्कर केशवजी मेहता, मोदी कन्हैयालालजी, श्री मणिभाईजी, श्री जगजीवनजी मेहता, श्री मगनलाल प्रागजी दोसी, श्री नगीनदास कामदार, सेठ रवजी माटलिया, श्री भाईचन्दभाई, श्री हीरालाल भाई, श्री देवचन्द अमोलक, श्री मणिभाई (बेरमो), श्री धीरजभाई, श्री डाह्याभाई (वर्द्धमान)।

उपर्युक्त स्थानीय सज्जनों तथा जनताके अतिरिक्त कलकत्ता, टाटा, वर्द्धमान, आसनसोल, सेंथिया, राँची, रानीगञ्ज, कतरास गढ़, बेरमो, बराकर, धनबाद, धनसार, करकेन्द, बर्नपुर, गोविन्द पुर, भागा, भजूड़ी, सिन्दरी, लखनऊ, आगरा आदिके सज्जनोंने भी पधार कर उत्सवकी शोभा बढ़ाई।

मुनिद्वय-मिलन

झरियासे विहार कर पं० मुनिवर प्रतापमलजी महाराज ठाणा ४, कतरासगढ़ पहुँचे तथा राजगृही आदिकी यात्रा करके लौटे हुए पं० मुनिवर हीरालालजी आदि ठाणा ३ कुछ दिनों तक एक साथ रहे। तदनन्तर क्रमशः सेंथिया एवं झरियाके चातुर्मासका निर्णयकर उन्होंने अपने-अपने लक्ष्यकी ओर प्रस्थान किया।

सैंथिया-चातुर्मास

मुनिवरोंका चातुर्मास झरिया प्रायः निश्चित हो ही चुका था, परन्तु अकस्मात् सैंथिया श्रीसंघका अत्यन्त आग्रहपूर्ण पत्र लेकर श्री भोजराजजी पारख झरिया आये और सैंथिया चातुर्मास करनेकी विनती करने लगे। दो तीन दिनतक विचार-विमर्श करनेके पश्चात् यह निश्चय किया गया कि पं० मुनिश्री प्रतापमलजी म० सा० ठाणा ४ के साथ सैंथिया चातुर्मास करें और पं० मुनिश्री हीरालालजी म० सा० व पं० मुनिश्री लाभचन्द-जी म० सा० ठाणा ३ झरिया ही। सैंथिया चातुर्माससे एक नवीन क्षेत्र खुलेगा तथा मुनिवरोंके धर्मोपदेशसे वंग प्रदेश भी अछूता न रहेगा। तदनुसार मुनिश्रीने यथासमय झरियासे विहार किया।

धनवाद, गोविन्दपुर, वर्नपुर, आसनसोल, रानीगंज, सिवड़ी आदि मार्गवर्ती ग्राम-नगरोंमें धर्म-संदेश देते हुए १ जुलाईको सैंथिया ग्राम पधारे। सैंथियाका जैन समाज अत्यन्त हर्षित था। अनेकों नर-नारी बहुत दूरतक स्वागतके लिये आये थे। जयनाद और विविध नारे उनके हृदयके आह्लादको व्यक्त कर रहे थे। हर स्त्री, पुरुष, बालक, बालिकाके मुख पर एक अव्यक्त आनन्दकी रेखा खींची हुई थी। मुनिगण जैन

मन्दिरवाली धर्मशालामें ठहरे। जुलूसके पहुंचनेके पूर्व ही वहां सैकड़ों बंगाली स्त्री-पुरुष दर्शनार्थ खड़े थे।

सैंथिया ग्राम बंगालके वीरभूम जिलान्तर्गत है। गांव यद्यपि छोटा है परन्तु सर्व यातायातके साधनोंसे युक्त तथा चावलके व्यापारका प्रमुख केन्द्र है। सैकड़ों वर्षोंसे यहां अग्रवाल, ओसवाल आदि मारवाड़ी समाजोंका प्रभुत्व है। समस्त मारवाडी समाजकी ओरसे सेवा-समिति तथा सार्व-जनिक पाठशाला है। जैनियोंका जैन मन्दिर तथा धर्मशाला है। यहां भक्तिमान् श्रावकोंके ५५ घर है। चावल व्यापारका प्रमुख केन्द्र होनेसे यहां बड़े २ व्यवसायी भी है। क्षेत्र सभी दृष्टियोंसे उपयुक्त है। नगरके कोलाहलमय वातावरणसे सुदूर आत्मा-राधनाका सुन्दर क्षेत्र है।

यद्यपि यहां सभी सम्प्रदायोंके व्यक्ति रहते है, परन्तु वे सभी प्रेमसूत्रमें आवद्ध है। मुनिवरोंके व्याख्यानों तथा दैनिक कार्यक्रमोंमें स्थानीय स्थानकवासियोंकी तरह मूर्तिपूजक व तेरहपंथी स्त्री-पुरुष भी उपस्थित रहते थे। सैंथियामें नवागंतुक व्यक्तिके लिये तो यह महान् आश्चर्यका विषय होता था। इन्हीं सर्व सुन्दर संयोगोंके कारण यह चातुर्मास अत्यन्त सफल रहा। आसपासके प्रदेशोंमें धर्मकेन्द्रके नामसे इस ग्रामकी प्रसिद्धी हुई। अनेक धर्म-कार्य हुए। नीचे संक्षिप्तमें उन सर्व प्रसंगोंका वर्णन किया जाता है:—

तप

मुनिवरोंके चातुर्माससे इस नगरमें तपस्याओंकी होड़सी लग गई। समुद्र-उवारकी तरह तपस्याओंमें ज्वार आता था। छोटे २ वालक व वालिकायें भी उपवास करते थे। मासक्षमण जैसी तपस्यायें भी हुईं। सेठ वच्छराजजी छाजेड़की धर्मपत्नी विजयकुमारीने 'मासक्षमण' किया। १५ अगस्त — स्वाधीनता दिवसके पुण्य दिवस मासक्षमणका तपोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ। इसके अतिरिक्त अनेक अट्ठाइयां हुईं। चार, पांच, छः सातके तप भी अनेकों स्त्री पुरुषोंने किये। उपवास, छट्ठ तप व अट्ठ तप तो वहुत हुए। घर २ मे तपाग्नि प्रज्वलित थी।

पर्यूषण महापर्व

पर्यूषण महापर्वने तो धर्म कार्योंमें चार चांद लगा दिये। प्रतिदिनके व्याख्यानोंमें सैकड़ों जैन-जैनेतर व्यक्ति उपस्थित होते थे। वंगाल जैसे प्रान्तमें यहांके निवासियोंके द्वारा आमिष भोज-परित्याग प्राण-त्यागके सदृश कठिन है। पर मुनिश्रीके उपदेशसे अनेकों वंग-वासियोंने मांसाहार-त्यागकी प्रतिज्ञायें कीं। सैकड़ोंने सप्त कुव्यसनोंका परित्याग किया। कई नर-नारियोंने सम्यकत्व तथा वारह व्रत भी ग्रहण किये।

संयुक्त संघाभिगमन

ता० ३-११-५४ को कलकत्ता, टाटानगर व झरियाके प्रमुख

मन्दिरवाली धर्मशालामें ठहरे। जुलूसके पहुंचनेके पूर्व ही वहां सैकड़ों बंगाली स्त्री-पुरुष दर्शनार्थ खड़े थे।

सैंथिया ग्राम बंगालके वीरभूम जिलान्तर्गत है। गांव यद्यपि छोटा है परन्तु सर्व यातायातके साधनोंसे युक्त तथा चावलके व्यापारका प्रमुख केन्द्र है। सैकड़ों वर्षोंसे यहां अग्रवाल, ओसवाल आदि मारवाड़ी समाजोंका प्रभुत्व है। समस्त मारवाडी समाजकी ओरसे सेवा-समिति तथा सार्व-जनिक पाठशाला है। जैनियोंका जैन मन्दिर तथा धर्मशाला है। यहां भक्तिमान् श्रावकोंके ५५ घर है। चावल व्यापारका प्रमुख केन्द्र होनेसे यहां बड़े २ व्यवसायी भी है। क्षेत्र सभी दृष्टियोंसे उपयुक्त है। नगरके कोलाहलमय वातावरणसे सुदूर आत्मा-राधनाका सुन्दर क्षेत्र है।

यद्यपि यहां सभी सम्प्रदायोंके व्यक्ति रहते हैं, परन्तु वे सभी प्रेमसूत्रमें आबद्ध है। मुनिवरोंके व्याख्यानों तथा दैनिक कार्यक्रमोंमें स्थानीय स्थानकवासियोंकी तरह मूर्तिपूजक व तेरहपंथी स्त्री-पुरुष भी उपस्थित रहते थे। सैंथियामें नवागंतुक व्यक्तिके लिये तो यह महान् आश्चर्यका विषय होता था। इन्ही सर्व सुन्दर संयोगोंके कारण यह चातुर्मास अत्यन्त सफल रहा। आसपासके प्रदेशोंमें धर्मकेन्द्रके नामसे इस ग्रामकी प्रसिद्धी हुई। अनेक धर्म-कार्य हुए। नीचे संक्षिप्तमें उन सर्व प्रसंगोंका वर्णन किया जाता है:—

तप

मुनिवरोंके चातुर्माससे इस नगरमें तपस्याओंकी होड़सी लग गई। समुद्र-ज्वारकी तरह तपस्याओंमें ज्वार आता था। छोटे २ बालक व बालिकायें भी उपवास करते थे। मासक्षमण जैसी तपस्यायें भी हुईं। सेठ वच्छराजजी छाजेड़की धर्मपत्नी विजयकुमारीने 'मासक्षमण' किया। १५ अगस्त—स्वाधीनता दिवसके पुण्य दिवस मासक्षमणका तपोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ। इसके अतिरिक्त अनेक अट्ठाइयाँ हुईं। चार, पाँच, छः सातके तप भी अनेकों स्त्री पुरुषोंने किये। उपवास, छट्ठ तप व अट्ठ तप तो बहुत हुए। घर २ में तपाग्नि प्रज्वलित थी।

पर्यूषण महापर्व

पर्यूषण महापर्वने तो धर्म कार्योंमें चार चाँद लगा दिये। प्रतिदिनके व्याख्यानोंमें सैकड़ों जैन-जैनेतर व्यक्ति उपस्थित होते थे। बंगाल जैसे प्रान्तमें यहांके निवासियोंके द्वारा आमिष भोज-परित्याग प्राण-त्यागके सदृश कठिन है। पर मुनिश्रीके उपदेशसे अनेकों वंग-वासियोंने मांसाहार-त्यागकी प्रतिज्ञायें कीं। सैकड़ोंने सप्त कुव्यसनोंका परित्याग किया। कई नर-नारियोंने सम्यकत्व तथा बारह व्रत भी ग्रहण किये।

संयुक्त संघाभिगमन

ता० ३-११-५४ को कलकत्ता, टाटानगर व झरियाके प्रमुख

व्यक्तियोंका एक संघ संयुक्त रूपसे टाटानगर व झरियामें विराजित मुनियोंके दर्शन करता हुआ सैंथिया मुनिवरोंके दर्शनार्थ आया। स्थानीय श्रीसंघने संयुक्त संघका भावभरा स्वागत किया। दूसरे दिन आगन्तुक संघोंके प्रतिनिधियोंने मुनिवरोंसे बंगालमें विचरण करते रहनेकी विनती की तथा अपने २ शहर पधारनेके लिये भी निवेदन किया।

आगंतुक संघोंके प्रमुख व्यक्तियोंके नाम इस प्रकार है:—

कलकत्ता संघ—

श्री० कानजी पानाचन्द, प्रमुख,
श्री० गिरधरभाई कामाणी, उपप्रमुख,
श्री त्र्यम्बक भाई दामाणी
श्री केशवलाल हीराचंद शाह, सह-मंत्री,

टाटानगर (जमशेदपुर संघ)—

निरभेराम हंसराज कोमाणी, प्रमुख
भाईचन्द गोपालजी, मंत्री
दयालजी मोहनजी
दुर्लभजी नागजी
कान्तिलाल जादवजी

झरिया श्रीसंघ—

सेठ शंकर भाई, प्रमुख
मणिभाई संघवी
जगजीवन भाई मेहता, मंत्री

प्राणजीवन वल्लभजी माटलिया

जगदीश कुमार

प्रस्थानसे पूर्व संयुक्त संघोंने वीर वर्धमान जैन पुस्तकालयको १०१) रुपये भेंट दिये। इस पुस्तकालयकी स्थापना मुनिश्रीके सदुपदेशसे ही विगत मुनि-सम्मेलनके अवसर पर हुई थी।

मारवाड़ी संघाभिगमन

ता० ७-१२-५४ को कलकत्तेसे सेठ तोलारामजी श्यामलालजी वांठियाकी अध्यक्षतामें एक डेपुटेशन मुनिवरोंके दर्शनार्थ आया और भीनासर होनेवाले साधु-सम्मेलनमें पधारने की विनती की।

आचार्य क्षितीशमोहन सेनका पत्र

सैंथियामें जैन मुनियोंका चातुर्मास है, यह बात सुनकर विश्वभारती विश्वविद्यालयके प्राध्यापकों तथा विद्यार्थियोंको बहुत प्रसन्नता हुई। बोलपुर सैंथियासे बहुत निकट है अतः अनेक विद्यार्थी तथा जिज्ञासु मुनिवरोंकी सेवामें आये और जैनधर्मके संबंधमें ज्ञान प्राप्त किया। आचार्य क्षितीश मोहन सेनकी मुनिवरोंकी सेवामें आनेकी बहुत इच्छा थी परन्तु वृद्धावस्था व बिमारीने उन्हें रोक दिया। विवश हो उन्होंने अपनी भावभरी पुष्पांजलि भेजकर ही अपनेको कृतकृत्य समझा। नीचे उनका पत्र दिया जा रहा है:—

संसारमें अन्य सभी देशोंमें धर्मको लेकर मारकाट, संघर्ष और युद्ध हुए हैं। सभी यह प्रयत्न करते रहे हैं कि अपने धर्मको स्थापित करके अन्य धर्मको लुप्त कर दिया जाय, इसीलिये युरोपमें कई शताब्दियों तक ईसाइयों और मुसलमानोंके बीच धर्मयुद्ध (क्रूसेड़) होते रहे हैं। वस्तुत इस रक्तपातका नाम ही क्रूसेड़ है।

भारतवर्षमें अनेक धर्ममत फूलते-फलते आये है, किन्तु एकने दूसरेको रक्तके श्रोतमें डुबानेका प्रयत्न नहीं किया। हमने अपने और दूसरोंके सम्मिलित मङ्गलको सत्य माना है जिसे अंग्रेजीमें "लिव एन्ड लेट् लिव" कहते है। धर्मको लेकर हमने विचार-विनिमय किया है, तर्क-वितर्क किया है किन्तु रक्तपात नहीं किया है। क्योंकि प्रेम और मैत्री ही हमारे धर्मका प्राण है। उग्र धर्मान्धता या कट्टरता इस देशके लिए विरल है।

भारतवर्षमें बहुत प्राचीन कालसे धर्मकी दो धाराएं बहती आई हैं, एक वैदिक और दूसरी अवैदिक। वैदिक धर्मकी शिक्षा यज्ञकी वेदीके चारों ओर दी जाती थी। अवैदिक धर्मकी शिक्षा के स्थान थे तीर्थ। इसीलिए अवैदिक धर्मकी धाराको तैर्थिक धारा कहा जाता है।

भारतवर्षके उत्तर-पूर्व प्रदेशों अर्थात अंग, वंग कलिंग, मगध, काकट (मिथिला) आदिमें वैदिक धर्मका प्रभाव कम तथा तैर्थिक धर्मका प्रभाव अधिक था। फलतः श्रुति, स्मृति आदि शास्त्रोंमें ये प्रदेश निन्दाके पात्रके रूपमें उल्लिखित थे। इसी

प्रकार इस प्रदेशमें तीर्थयात्रा न करनेसे प्रायश्चित् करना पड़ता था।

श्रुति और स्मृतिके शासनसे बाहर पड़ जानेके कारण इस पूर्वी अंचलमें प्रेम, मैत्री और स्वाधीन चिन्ताके लिये बहुत अवकाश प्राप्त हो गया था। इसी देशमें महावीर, बुद्ध, आजीवक धर्मगुरु इत्यादि अनेक महपुरुषोंने जन्म लिया और इसी प्रदेशमें जैन, बौद्ध प्रभृति अनेक महान् धर्मोंका उदय तथा विकास हुआ। जैन और बौद्ध धर्म यद्यपि मगध देशमें ही उत्पन्न हुए तथापि इनका प्रचार और विलक्षण प्रसार बंग देशमें भी हुआ। इस दृष्टिसे बंगाल और मगध एक ही स्थल पर अभिषिक्त माने जा सकते हैं।

बंगालमें कभी बौद्ध धर्मकी बाढ़ आई थी किन्तु उससे पूर्व यहां जैन धर्मका ही विशेष प्रसार था। हमारे प्राचीन धर्मके जो निदर्शन हमें मिलते हैं वे सभी जैन हैं। इसके बाद आया बौद्ध युग। वैदिक धर्मके पुनरुत्थानकी लहरें भी यहां आकर टकराईं किन्तु इस मतवादमें भी कट्टर कुमारिल भट्टको स्थान नहीं मिला। इस प्रदेशमें वैदिक मतके अन्तर्गत प्रभाकरको ही प्रधानता मिली और प्रभाकर थे स्वाधीन विचार-धाराके पोषक तथा समर्थक।

जैनोंके तीर्थकरोंके पश्चात् चार श्रुतकेवली आये। इनमें चौथे श्रुतकेवली थे भद्रबाहु। तीर्थकरोंने धर्मका उपदेश तो दिया किन्तु उसे लिपिबद्ध नहीं किया। श्रुतकेवली महानु-

भावोंने इन सब उपदेशोंका संग्रह करके उन्हें एक व्यवस्थित रूप दिया। उनमेंसे प्रथम तीनकी कोई रचना नही मिलती। चतुर्थ श्रुतकेवली भद्रबाहुके द्वारा रचित अनेक शास्त्र मिलते हैं। उनके दशवैकालिक सूत्र, आचारांग सूत्र, इत्यादि अनेक ग्रन्थ मिलते है जो जैनोंके प्राचीनतम शास्त्रके रूपमें सम्मानित हैं।

ये भद्रबाहु चन्द्रगुप्तके गुरु थे। उनके समयमें एक वार वारह वर्ष व्यापी अकालकी संभावना दिखाई दी थी। उस समय वे एक बड़े संघके साथ बंगालको छोड़कर दक्षिण चले गये और फिर वहीं रह गये। वहीं उन्होंने देह त्यागी। दक्षिण का यह प्रसिद्ध जैन महातीर्थ श्रवणवेलगोलाके नामसे प्रसिद्ध है। दुर्भिक्षके समय इतने बड़े संघको लेकर देशमें रहनेसे गृहस्थों पर वहुत बड़ा भार पड़ेगा, इसी विचारसे भद्रबाहुने देश-परित्याग किया था।

भद्रवाहु की जन्मभूमि था वंगाल। यह कोई मन-गढ़न्त कल्पना नहीं है, हरिसेन कृत वृहत् कथामें इसका विस्तृत वर्णन मिलता है। रत्ननन्दी गुजरातके निवासी थे, उन्होंने भी भद्रबाहु के सम्वन्धमें यही लिखा है। तत्कालीन वंग देशका जो वर्णन रत्ननन्दीने किया है, उसकी तुलना नहीं मिलती।

इनके कथनानुसार भद्रवाहुका जन्म-स्थान पुंड्रवर्धनके अन्तर्गत कोटिवर्ष नामका ग्राम था। ये दोनों स्थान आज वांकुड़ा और दिनाजपुर जिलोंमें पड़ते है। इन सव स्थानोंमें

जैनमतकी कितनी प्रतिष्ठा हुई थी, इसका अनुमान इसीसे लगाया जा सकता है कि यहाँसे राट व तामलुक तक सारा इलाका जैनधर्मसे पल्लवित था।

उत्तर बंग, पूर्व बंग, मेदनीपुर, राढ़ और मानभूम जिलोंमें बहुत सी जैन मूर्तियाँ मिलती हैं। मानभूमके अन्तर्गत पातकुम स्थानमें भी जैन मूर्तियाँ मिली हैं, सुन्दरवनके जंगलोंमें भी धरतीके नीचेसे कई मूर्तियाँ संग्रहित की गई हैं। बाँकुड़ा जिला की सराक जाति उस समय जैन श्रावक शब्दके द्वारा परिचित थी। इस प्रकार बंगाल किसी समय जैनधर्मका एक प्रधान क्षेत्र था। जब बौद्ध धर्म आया तब उस युगके अनेकों पंडितों ने उसे जैनधर्मकी एक शाखाके रूपमें ही ग्रहण किया था।

इन जैन साधुओंके अनेक संघ और गच्छ हैं। इन्हें हम साधक संप्रदाय या मंडली कह सकते हैं। बंगालमें इस प्रकार की अनेक मंडलियाँ थीं। पुंड्रवर्धन और कोटिवर्ष एक दूसरेके निकट ही है, किन्तु वहाँ भी पुँड्रवर्धनीय और कोटिवर्षिया नामकी दो स्वतंन्त्र शाखाएं प्रचलित थीं। ताम्रलिप्तिमें ताम्रलिप्ति नामकी शाखाका प्रचार था। खरवट भूभागमें खरवटीय शाखाका प्रचार था। इसप्रकार और भी बहुत सी शाखाएं पल्लवित हुई थीं जिनके आधार पर हम कह सकते हैं कि बंगाल जैनोंकी एक प्राचीन भूमि है। यहीं जैनोंके प्रथम शास्त्र रचयिता भद्रबाहुका उदय हुआ था। यहाँकी धरतीके नीचे अनेक जैन मूर्तियाँ छिपी हुई हैं और धरतीके ऊपर अनेक जैन धर्मा-

वलम्वी आज भी निवास करते है।

आज यदि दीर्घ कालके पश्चात् अनेक जैन गुरु बंगालमें पधारे हैं; तो वे वस्तुतः परदेशमें नहीं आये, वे हमारे ही है और हमारे ही बीच आये है। उन्हें हम वेगाना नही कह सकते। ये सव जैन साधु हमारे अग्रज हैं और हम श्रद्धाके साथ उनका अभिनन्दन करते है। हमारे इस स्वागतमें यदि कोई समारोहका अभाव जान पड़े, तब भी उसके भीतर बड़े भाईका सादर अभिनन्दन करनेकी भावना निःसन्देह छिपी हुई है। कदाचित् ऐसी ही एक घटना, वहुत प्राचीन त्रेतायुगमें भी घटित हुई थी जब लम्बे वनवासके बाद रामचन्द्र अयोध्या लौटकर आये थे और छोटे भाई भरतने भक्ति एवं प्रीति सहित उनका स्वागत किया था। अपने जैन गुरुओंका हम उसी भावनासे अभिनन्दन कर रहे हैं।

सैंथियामें श्री श्री १०८ श्री श्री जैन मुनि श्री प्रतापमलजी महाराज, श्री हीरालालजी महाराज, श्री जगजीवनजी महाराज और श्री जयंतीलालजी महाराजके नेतृत्वमें जैन-गुरुओंका जो समागम हुआ था, वह वरवस ही त्रेतायुगके भरत-मिलनकी उस कथाका स्मरण करा देता है। हमारी यही कामना है कि यह नवीन मिलन जययुक्त हो, प्रेम और मैत्रीसे पूर्ण यह प्रदेश कल्याणमय हो, पृथ्वी पर शान्ति और मैत्रीकी प्रतिष्ठा हो।

ऋषि पंचमी
१६ भाद्र १३६१ बंगाब्द

विहार

ता० ११-११-५४ को चातुर्मास समाप्तिके पश्चात् मुनिवरोंने शान्तिनिकेतनकी ओर विहार किया। चार मासके धर्मोद्योतसे जन-जनका हृदय अत्यन्त प्रभावित था। अतः परम उपकारी सन्तोंको जाते देखकर जैन-अजैन जनता विह्वल और व्यथित हो उठी। प्रसङ्ग ही ऐसा था। यहाँ भी वही स्थिति व दृश्य उपस्थित था, जो कलकत्ता-विहारके समय उपस्थित था और पाठक उससे सुपरिचित है अतः यहाँ भी उस प्रसङ्ग व जन-भावनाओंको इतिवृत्तात्मक वर्णन करना पिष्टपेशण होगा। संक्षिप्तमें जन-जनका हृदय आकुलित तथा पीड़ित था।

जुलूस मुख्य २ बाजारोंमें होता हुआ नंदीश्वरी माईके मंडपमें समाप्त हुआ। यहाँ सैंथिया श्रीसङ्घकी ओरसे लाल-चन्दजी पारखने गुणानुवाद करते हुए चातुर्मासके लिये आभार प्रदर्शित किया। तदनन्तर मुनिवरोंने विदाई सन्देशके साथ अनेक त्याग-प्रत्याख्यान करवाकर मंगल-सूत्र सुनाया। यद्यपि विदाई मंगलसूत्र सुना दिया गया फिर भी जनताके उत्साहमें कमी न थी अतः अनेक स्त्री-पुरुष साथ २ चलते रहे। बहुत दूर जानेके पश्चात नगरके प्रमुख व्यवसायी सेठ रामकुमारजी, जसकरणजी आँचलिया तथा पृथ्वीराजजी सुराणाने क्षमापनाके साथ द्वितीय बार मंगल-सूत्र सुना। भक्तिवश अनेक स्त्री-पुरुष व बालक-बालिकाओंके झुंड फिर भी साथमें चलते ही रहे।

इसप्रकार जयनादके साथ मुनिगण बतासपुर स्टेशन पहुँचे। यहाँ उपस्थित सज्जनोंको सेठ लालचन्दजी पारखकी ओरसे प्रीति-भोज दिया गया। रात्रिमें स्टेशन मास्टर सा० ने भी धर्म-चर्चा की।

सैंथियाके कुछ प्रमुख व्यक्तियोंकी नामावली नीचे दी जा रही है—

श्री हीरालालजी, रामकुमारजी, जशकरणजी आंचलिया
श्री केशरीचन्दजी, कालूरामजी, सोभागचंदजी पुगलिया
श्री सोभागचंदजी कपूरचंदजी संचेती
श्री मोतीलालजी, भॅवरलालजी, लालचंदजी, भोजराजी, हरखचंदजी, सम्पतराजजी, जेठमलजी पारख
श्री पृथ्वीराजजी सुराणा
श्री कानमलजी रांका
श्री मगनमलजी, फूसराजजी, माणकचंदजी, कानमलजी, भॅवरलालजी छाजेड़
श्री छगनलालजी नेमचंदजी भूरा
श्री करणराजजी चतर मूथा
श्री चाँदमलजी रूपचंदजी गोलेछा
श्री केसरीचंदजी सेठिया, श्री बुलाकीचंदजी कोचर
श्री अनोपचंदजी वेद, श्री तोलारामजी बोथरा

शान्तिनिकेतनके प्रांगणमें

---बतासपुर स्टेशनसे अहमदपुर होते हुए मुनिगण १४ नवम्बरको वोलपुर (शान्तिनिकेतन) पधारे। स्थानीय श्रीसंघ तीन मील तक स्वागतार्थ उपस्थित था। आचार्य क्षितीशमोहन सेनने चौतुर्मासके पश्चात् शान्तिनिकेतन पधारनेके लिये अपने पत्रमें आग्रह भरी विनती की थी अतः वोलपुर आनेके पश्चात् विश्वभारतीके प्रांगणमें पधारे। पर आचार्यजीसे मिलना न हुआ। वे वाहर गये हुए थे। मुनिवरोंको विश्वभारतीके प्रांगण में देखकर उपकुलपति डा० पी० सी० वागचीने वहुत श्रद्धा-भक्ति के साथ प्रत्येक प्रवृत्तिसे अवगत कराया तथा अपने घर भी ले गये। वहां आपसे वहुत समय तक जैनधर्मके संबंधमें विचार-विमर्श होता रहा।

विश्वविद्यालयके एक प्राध्यापक श्री वाजपेयीजीने एक जैन चेयरके संबंधमें निवेदन किया। यदि यहां एक जैन चेयर स्थापित हो जाय तो जैनधर्मका महत् प्रचार हो सकता है।

आज सैंथिया श्रीसंघके अनेक श्रावक-श्राविकायें दर्शनार्थ आये।

झरिया चातुर्मास

झरिया ही यद्यपि सातों मुनियोंका चातुर्मास सुनिश्चित था परन्तु सैंथिया श्रीसंघकी आग्रहपूर्व विनती तथा अनुरोधको लक्ष्यमें रखकर पूज्य पं० मुनिश्री प्रतापमलजी म० सा० को ठाणा ४ के साथ सैंथिया पधारना पड़ा अत झरिया पं० मुनिश्री हीरालालजी म० सा० व पं० मुनिश्री लाभचन्दजी म० सा० ठा० ३ का चातुर्मास हुआ। प्रस्तुत चातुर्मासमें मुनिवरोंके विराजित रहनेसे वहुत धर्मोद्योत हुआ तथा अनेक प्रकारके त्याग-प्रत्याख्यान हुए। सैंथिया चातुर्मासके वर्णनके सदृश ही यहां भी सर्व वर्णन जानना चाहिये। झरियामें हुए कुछ विशेष आयोजनोंका वर्णन नीचे दिया जाता है:—

धार्मिक स्कूलका उद्‌घाटन

झरियामें बच्चोंको धर्म पढ़ाने का प्रवन्ध न था। अतः वे धर्म-ज्ञानसे सर्वथा वंचित रह जाते थे। मुनिवरोंके सदुपदेशसे यहां एक धार्मिक स्कूल खोला गया। सम्प्रति यह स्कूल ठीक तरह चल रहा है और अनेक बालक-बालिकायें संस्कारित जीवन बनानेका पाठ पढ़ती हैं।
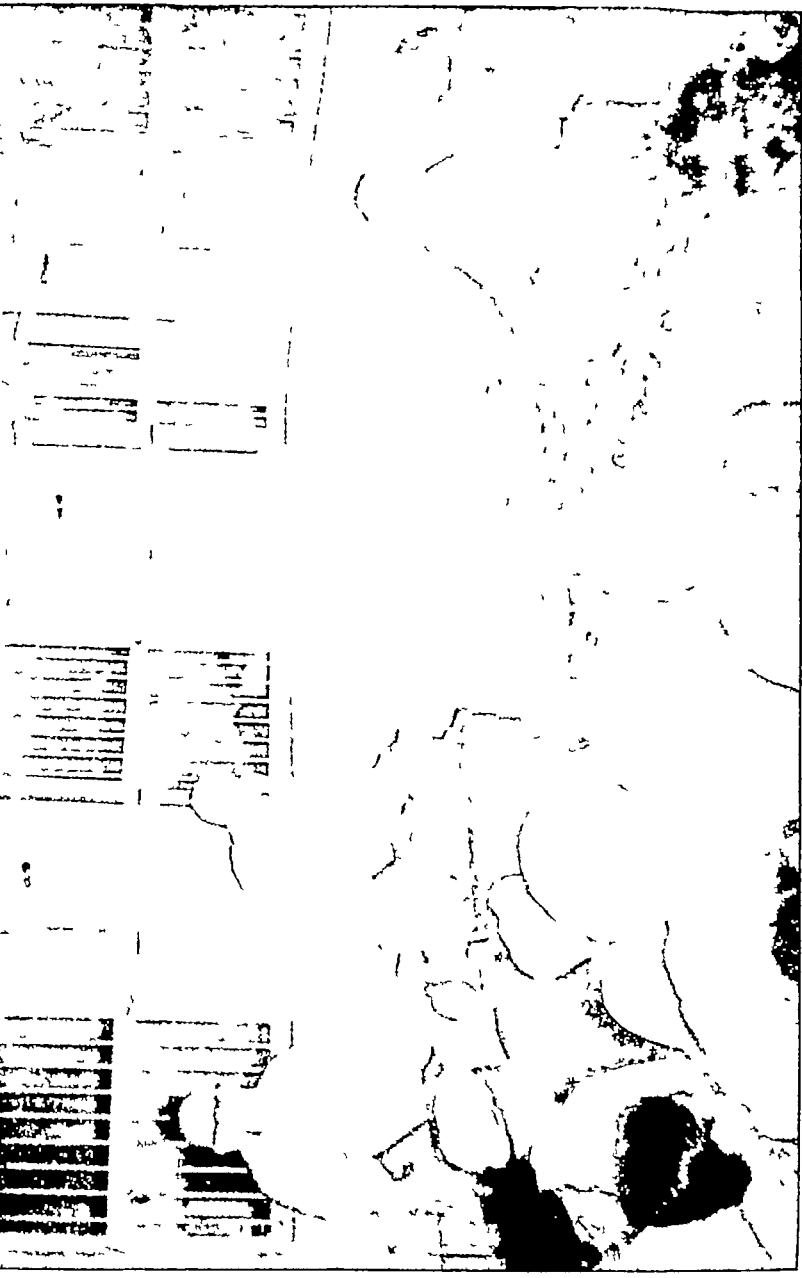
झरियाके नवीन उपाश्रयमे बिहारके राज्यपाल श्री० आर० आर० दिवाकर अहिंसा व संगठन के संबंधमें पंडित मुनिश्री हीरालालजी म० से वार्तालाप कर रहे है।

बिहार-राज्यपालके दर्शन

ता० २१-६-५४ को विहारके राज्यपाल श्री आर० आर० दिवाकर मुनिवरोंके दर्शनार्थ आये। मुनिवरोंके दर्शन कर उन्होंने अपनेको कृतकृत्य समझा। वार्तालापके प्रसंगमें राज्यपालने वैशालीमें खुलनेवाले जैन विश्वविद्यालयकी योजना रखी तथा सहयोगकी अपील की।

बाढ़-पीड़ितोंको सहायता

इस वर्ष आसाम व विहारके कुछ जिलोंमें वर्षाका भयंकर प्रकोप हुआ। बाढ़से अनेक गांवके गांव बह गये तथा अपार जन-धनकी हानि हुई। मुनिवरोंके मार्मिक सदुपदेशसे प्रेरित होकर झरिया संघने १५००) पन्द्रह सौ रुपये बाढ़-पीड़ितोंके सहायतार्थ पं० नेहरूजीको भेजे।

प्रीतिभोज

मुनिवरोंके चातुर्माससे होनेवाले धर्मोद्योतको व्यक्त करने तथा बंधुत्व-भावनासे प्रेरित होकर स्थानीय जैनोंका प्रीति भोज मुनिवरोंके विहारके दिवस हुआ।

साधु-सम्मेलन पर विचार

चातुर्मासमें ही भीनासर होनेवाले साधु-सम्मेलनके समाचार प्रकाशित हो गये थे। कॉन्फ्रेन्सके मुख-पत्र जैन-प्रकाश द्वारा साधु-सम्मेलनके समाचार प्रकाशित हो रहे थे तथा सर्व मुनियोंसे भीनासर (बीकानेर) पधारनेके लिये विनती की जा रही थी। मुनिवरोंके पास भी एतद्विषयक समाचार पहुंचे थे तथा बीकानेरकी ओर विहार करनेके लिये निवेदन किया गया था। अतः चातुर्मास समाप्तिके पश्चात् मुनिवरोंने बीकानेरकी ओर ही विहार करनेका निश्चय किया। दूरीको देखते हुए निश्चित तिथि तक पहुँचना अत्यन्त कठिन था फिर भी संघकी आज्ञा तो स्वीकृत करनी ही थी। झरियासे पं० हीरालालजी म० सा० के भी समाचार आ गये थे। अतः धनबादमें सर्व मुनियोंका मिलन निश्चित कर आगेका कार्यक्रम निर्द्धारित करनेका निश्चय किया; तदनुसार मुनिश्री शान्तिनिकेतनसे रामनगर, जयदेव, जामबाद, रानीगंज, आसनसोल, बराकर, बड़वा होते हुए धनबाद पधारे। इधर पं० हीरालालजी म० स० व पं० लाभचन्दजी म० सा० आदि ठाणा ३ भी झरियासे विहार कर सिन्द्री, भजूडी होते हुए धनबाद पधार गये थे। सर्व मुनियोंने

बहुत विचारके पश्चात् भीनासार साधु-सम्मेलनमें सम्मिलित होनेको निश्चय किया और देहलीकी ओर विहार करनेका विचार किया।

धनबादसे विहार कर सर्व मुनिगण पुनः झरिया पधारे। दीक्षा महोत्सवसे झरिया संघ बहुत उपकृत था। अतः अत्यन्त हर्ष व उत्साहके साथ सैकड़ों स्त्री-पुरुषोंने सम्मुख आकर स्वागत किया। मुनिगण कुछ दिन यहाँ विराजे तथा मुनि श्री वसन्तीलालजीके पांवोंका उपचार करवाया।

सम्मेलनका समय अति निकट था। दूरवर्ती मुनिगणोंका यथासमय पहुँचना अत्यन्त कठिन था। अतः देशके प्रत्येक कोनेसे सम्मेलनकी तिथिको आगे निर्द्धारित करनेकी आवाज उठी। अनेक वरिष्ठ मुनियोंने निश्चित तिथि तक पहुँचनेमें अपनी असमर्थता व्यक्त की। भीनासार जैसे मरुप्रदेशमें ग्रीष्म ऋतुमें लंबा विहार कर पहुँचना सचमुच कठिन था अतः सम्मेलनके कर्णधारोंने सम्मेलनको स्थगित रखकर आगामी वर्षमें करनेका निश्चय किया। अतः मुनिवरोंके सम्मुख यह प्रश्न उठ खड़ा हुआ कि वे देहलीकी ओर विहार करें या अभी वंगभूमिमें ही विचरण करते रहें। अनेक स्थानोंकी विनतियां थीं। झरिया श्रीसंघने भी यही विनती की। अतः विचार-विमर्शके पश्चात् देहलीका विहार स्थगित कर टाटानगरकी ओर विहार करनेका निश्चय किया गया।

टाटानगरमें नव जागरण

मुनिश्री बसन्तीलालजीके उपचार चल रहा था। अतः २ दिसम्बरको मुनिश्री हीरालालजी म० सा० ठाणा ३ ने टाटा-नगर (जमशेद्पुर) को लक्ष्यमें रखकर मधुवन व वेरमाकी की ओर विहार किया और मुनिश्री प्रतापमलजी आदि ठाणा ४ भरिया ही विराजते रहे। कुछ दिनोंके पश्चात मुनिश्री बसन्तीलालजीके स्वास्थ्य-लाभ करनेपर मुनिश्री प्रतापमलजी आदि सर्व मुनियोंने दस दिसम्बरको टाटानगरकी ओर विहार किया। करकेन्द्, कतरास, खरखरी कोलयारी, पींडरा जोड़ा, पुरुलिया, बलरामपुर, चांडील, कान्द्रबेड़ा आदि अनेक ग्राम-नगरोंमें धर्म संदेश देते हुए ३१ दिसम्बरको जमशेद्पुर पहुंचे। जमशेद्पुरकी जनताके हर्षोत्साहके वर्णनके पूर्व मार्गवर्ती ग्राम-नगरोंका कुछ वर्णन न करना अनुपयुक्त होगा क्योंकि यह नवीन मार्ग था। अतः उसका संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है।

खरखरी कोल्यारी—यहां मेरठ जिलेसे आये हुए स्वधर्मी बंधुओंके ६ घर हैं। सेठ विमलप्रसादजी बहुत सज्जन तथा श्रद्धाशील व उत्साही कार्यकर्ता हैं। आपने एक अहिंसा-

श्री विमल प्रसाद जैन

खरखरी कोल्यारी

श्री विमल प्रसाद जैन साम्प्रदायिक भेद-भावना से रहित बहुत उत्साही व कर्मनिष्ठ युवक है। छोटी वय में आपने जो व्यावसायिक समुन्नति की, वह प्रशंसनीय है। आप कई संस्थाओं के सञ्चालक, सभापति तथा मत्री है। सेवा तथा दान आपके उदात्त गुण है। प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन में आपने ३००) रु० प्रदान किये है।

प्रचार समितिकी अभी २ स्थापना की है, जो अच्छा कार्य कर रही है। आपकी ओरसे चैत्यालय तथा स्वाध्याय मन्दिर है। पूर्व प्रकाशित बंग-विहारकी पुस्तकोंको देखकर आप बहुत प्रसन्न हुए तथा प्रस्तुत नवीन बंग-विहार अर्थात् विहार-डायरी-की अपनी ओरसे प्रकाशित करनेकी भावना व्यक्त की। आप मुनिवरोंके प्रचार-कार्यसे बहुत प्रभावित हुए।

अंग्रेज महिलाओं द्वारा प्रत्याख्यान

पींडरा जाड़ा—यहाँ डाक बंगलेमें मुनिगण ठहरे हुए थे। रांचीसे आनेवाली दो अंग्रेज महिलाओंने जैन मुनियोंको प्रथम बार देखा था। मुख पर मुखवस्त्रिका देखकर उन्होंने सोचा यह कोई अस्पताल होगा। वे तो डाकबंगला सोचकर आई थी। अतः असमंजसमें गिर गयी। अंतमें कुछ संकोचके साथ वे मुनिवरोंसे पूछ ही बैठी?—क्या यह अस्पताल है?

मुनियोंने जबाब दिया—यह डाक बंगला है। अतः उन्होंने फिर पूछा—तब आपने अपने मुख पर यह कपड़ा क्यों बांध रखा है? इसपर मुनिश्रीने संक्षिप्त जैन-मुनि परिचय पुस्तक दी। पुस्तकको पढ़कर उनके आश्चर्यका पार न रहा। भक्ति एवं श्रद्धाके वशीभूत होकर वे कुछ नोट भेंट देने लगीं। मुनिश्रीने कहा—हम रुपये-पैसेकी भेंट नहीं लेते हैं अतः त्याग-प्रत्याख्यानकी भेंट दें। अन्तमें उन्होंने कुछ दिन मांस न खानेकी प्रतिज्ञा की।

पुरुलिया—यह ग्राम बहुत विशाल व सुन्दर है। अग्रवाल माहेश्वरी आदि भक्तिमान मारवाड़ी बंधुओंके कई घर हैं। सर्व

दृष्टियोंसे यह नगर अपना विशेष महत्त्व रखता है। यहाँ ओसवाल समाजके भी पाँच घर है। यहीं मधुवन व बेरमो होते हुए पं० मुनिश्री हीरालालजी व लाभचंदजी आदि ठाणा ३ भी पधार गये। अनेक व्याख्यान हुए। सेठ हरदासमलजी माहेश्वरीके भवनमें दो सार्वजनिक व्यख्यान हुए। जनता आशासे अधिक संख्यामें उपस्थित होती थी। यहाँ निम्न बंधु दर्शनार्थ आये।

सेठ मगनलाल प्रागजी	मानद मंत्री, सपरिवार	झरिया
सेठ शंकर भाई	"	"
" पातीरामजी अग्रवाल	"	"
भाई जगदीशकुमार रमणिककुमार	"	"
सेठ अमृतलाल मोहनजी	"	बेरमा
भाई मोहनलाल, जयसुखलाल, चम्मनलाल	"	"
सेठ उत्तमचंदजी गोठी	"	जालदा

मुनिवरोंके आगमनके समाचारसे जमशेदपुरकी जनता स्वागतार्थ उमड़ पड़ी। सैकड़ों स्त्री-पुरुष बहुत दूर तक स्वागतके लिये आये थे। तत्र विराजित तपस्वी मुनिश्री जगजीवनजी म० प० जैनसमाज भूषण जयन्तीलालजी व गिरीश मुनिजी वात्सल्य प्रेमसे प्रेरित हो स्वर्णरेखा नदीके पुल तक स्वागतार्थ पधारे। मुनियोंके मिलनका वह दृश्य बहुत ही अद्भूत था। ऐसा मालूम पड़ता था मानो स्वर्णरेखाके तट पर मारवाड़ी और गुजराती मुनियोंका यह त्रिवेणी संगम हो रहा हो। दसों मुनिवरोंके संगमके साथ ही जनताने गगनभेदी जयनाद किया।

आज जनतामें अत्यन्त उत्साह था। इस प्रकारका मुनि-संगम वास्तवमें अत्यन्त सद्भाग्यका विषय है।

हर्ष नादके साथ राज्य मार्गों पर संक्रमण करता हुआ जुलूस जमशेदपुर कंट्राक्टर ऐरिया रोड पर स्थित स्थानकवासी जैन उपाश्रयमें पहुँचा।

वहाँ प्रासंगिक गीत-प्रवचनके पश्चात् श्रीसंघने विदाई लसूत्र श्रवण किया।

यद्यपि इस नगरका इतिहास लगभग पचास वर्ष का ही है, फिर भी यह शहर आधुनिक एवं पेरिसवत् रम्य तथा सुन्दर है। यहाँ लोहकार्यालयके कारण विभिन्न देशोंसे हजारों लोग निवास कर रहे हैं, जिनमें करीब डेढ़ सौ जैन श्रीसंघके भी घर हैं। अतः यहां श्रीसंघकी विनतीसे बंगाल-बिहारमें विचरने-वाले गुजराती व मारवाड़ी मुनिवरोंका द्वितीय सम्मेलन रखा गया।

सम्मेलनकी कार्यवाही

ता० १-१-५५को जैन उपाश्रयमें पं० मु० श्री प्रतापमलजी म०, पं० मु० श्री हीरालालजी म०, पं० मु० श्री लाभचन्दजी म०, तपस्वी मुनिश्री जगजीवनजी म०, जैनसमाजभूषण पं० मु० श्री जयन्ती-लालजी म० आदि ठाणा दसने संयुक्त रूपसे प्रेरक प्रवचन दिये। प्रवचनोंमें समाजोत्थानकी अनेक रूपरेखाएँ प्रस्तुत की गईं। इस प्रकार कितनी ही सभाएँ हुई और कुछ प्रासंगिक प्रस्ताव पास किये गये।

दृष्टियोंसे वह नगर अपना विशेष महत्त्व रखता है। यहां ओस-वाल समाजके भी पाँच घर हैं। यहीं मधुवन व वेरमो होते हुए पं० मुनिश्री हीरालालजी व लाभचंदजी आदि ठाणा ३ भी पधार गये। अनेक व्याख्यान हुए। सेठ हरदासमलजी माहेश्वरीके भवनमें दो सार्वजनिक व्यख्यान हुए। जनता आशासे अधिक संख्यामें उपस्थित होती थी। यहाँ निम्न बंधु दर्शनार्थ आये।

सेठ मगनलाल प्रागजी मानद् मंत्री, सपरिवार		झरिया
सेठ शंकर भाई	,,	,,
,, पातीरामजी अग्रवाल	,,	,,
भाई जगदीशकुमार रमणिककुमार	,,	,,
सेठ अमृतलाल मोहनजी	,,	वेरमा
भाई मोहनलाल, जयसुखलाल, चम्मनलाल	,,	,,
सेठ उत्तमचंद्जी गोठी	,,	जालदा

मुनिवरोंके आगमनके समाचारसे जमशेदपुरकी जनता स्वागतार्थ उमड़ पड़ी। सैकड़ों स्त्री-पुरुष बहुत दूर तक स्वागत-के लिये आये थे। तत्र विराजित तपस्वी मुनिश्री जगजीवनजी म० प० जैनसमाज भूषण जयन्तीलालजी व गिरीश मुनिजी वात्सल्य प्रेमसे प्रेरित हो स्वर्णरेखा नदीके पुल तक स्वागतार्थ पधारे। मुनियोंके मिलनका वह दृश्य बहुत ही अद्भूत था। ऐसा मालूम पड़ता था मानो स्वर्णरेखाके तट पर मारवाड़ी और गुजराती मुनियोंका यह त्रिवेणी संगम हो रहा हो। दसों मुनि-वरोंके संगमके साथ ही जनताने गगनभेदी जयनाद किया।

सेठ देवराजजी गोलेच्छा
सेठ नरभेराम हंसराज कामाणी मंत्री जमशेदपुर
भाईचन्द गोपालजी पुनमिया ,,
सेठ उत्तमचन्द कालीदास साक्ची
,, घनेचन्द चतुरभूज पटेल ,,
,, जेठमलजी बोहरा जुगसलाई
,, मदनचन्दजी गोलेच्छा ,,
,, केशवलाल मदनलाल शाह, एम टी शाह-झरिया
,, पातीरामजी शतीशचन्द्रजी जैन ,,
,, बी० के० कोठारी ,,
,, केशवलाल भाई ,,
सेठ लालचन्दजी पारख सैंथिया
,, संपतराजजी ,, ,,
,, गणेशमलजी ,, ,,
,, प्राणजीवन दोसी कतरास
,, लक्ष्मीचन्दजी पुनमचन्दजी लुणावत, बलरामपुर
,, शान्तीलाल कस्तुरचन्द शाह लखनऊ
,, बाबू वजीरचन्दजी जैन कानपुर
,, गोविंददास रणछोड़दास बरणपुर
,, जे० पी० पुजारा-माधोवजी पुजारा खड़गपुर
,, पन्नालाल रमणीकलाल डागा पुरुलिया

दानवीर सेठ सोहनलालजी दुगड़ने सम्मेलनके इस आयो-

प्रस्ताव

(१) यह मुनि-सम्मेलन बंगाल विहारके समस्त क्षेत्रोंमें शाखा-प्रशाखाओं द्वारा संघरचना करनेकी प्रेरणा करता है ।

(२) यह मुनि-सम्मेलन प्रत्येक मुनि और संघको अधिकाधिक धर्म-प्रचारमें हार्दिक सहयोग प्रदानकी प्रेरणा करता है।

(३) यह मुनि-सम्मेलन 'काठियावाड़' एवम् मारवाड़के वृहद् मुनि सम्मेलनोंमें अपना सपूर्ण विश्वास प्रकट करता है और उनके नियमोंकी यथाविधि पालन करनेकी प्रेरणा करता है।

(४) यह मुनि-सम्मेलन बंगाल विहारके समस्त क्षेत्रोंका एक मध्यवर्ती प्रधान केन्द्र कायम करके उनके अनुशासनमें धर्म जागृतिके लिये सर्व प्रकारके उचित धर्म-कार्य करनेकी प्रेरणा करता है।

(५) यह मुनि-सम्मेलन बंगाल-बिहारके विहारमें हार्दिक सहयोग प्रदाता प्रत्येक श्रीसंघकी सराहना करता है।

इस अवसरपर पधारनेवाले प्रमुख व्यक्तियोंकी नामावली इस प्रकार है: —

दानवीर सेठ सोहनलालजी दुगड़ कलकत्ता
सेठ कानजी पानाचन्दजी, प्रमुख ,,
सेठ गिरधरलाल हंसराज, उप प्रमुख ,,
सेठ गोविन्दरामजी भीखमचन्दजी भँसाली ,,
,, केशवलाल हीराचन्द, मंत्री ,,
,, फूसराजजी सूरजमलजी बच्छावत, मंत्री ,,

सेठ देवराजजी गोलेच्छा

सेठ नरभेराम हंसराज कामाणी

भाईचन्द गोपालजी पुनमिया

सेठ उत्तमचन्द कालीदास

,, वनेचन्द चतुरभूज पटेल

,, जेठमलजी बोहरा

,, मदनचन्दजी गोलेच्छा

,, केशवलाल मदनलाल शाह, एम टी आर

,, पातीरामजी शतीशचन्द्रजी जैन

,, वी० के० कोठारी

,, केशवलाल भाई

सेठ लालचन्दजी पारख

,, संपतराजजी ,,

,, गणेशमलजी ,,

,, प्राणजीवन दोसी

,, लक्ष्मीचन्दजी पुनमचन्दजी लुणावत,

,, शान्तीलाल कस्तुरचन्द शाह

,, बाबू वजीरचन्दजी जैन

,, गोविंददास रणछोडदास

,, जे० पी० पुजारा-माधोवजी पुजारा

,, पन्नालाल रमणीकलाल शाह

दानवीर सेठ सोहनलालजी दुगड़ने इस आयो-

जनमें अत्यन्त अभिरुचि ली तथा अपने अस्वास्थ्यकी परवाह न कर वे टाटानगर पधारे। यहाँ की संघ द्वारा संचालित विविध प्रवृत्तियोंको देखकर आप बहुत प्रसन्न हुए तथा यथायोग्य सहायता दी।

अ० भा० स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्सके महामंत्री का पत्र

१३६०, चाँदनी चौक
दिल्ली ६
ता० १२-१ ५५

श्रीमान् मंत्रीजी,
श्री स्था० जैन श्रीसंघ, जमशेदपुर
जयजिनेन्द्र!

विशेष आपना तरफ थी "जमशेदपुरमां मुनि समागम नी" पत्रिका मोकली ते वांची घणोज आनन्द थयो छे। पू० मुनि श्री प्रतापमलजी म० सा०, शास्त्रविशारद मुनि श्री हीरालालजी म०सा० आदि ठाणा ७ तथा तपस्वी मुनि श्री जगजीवनजी म० सा० तथा विद्याव्यसनी पं० मुनि श्री जयन्तीलालजी म० सा० आदि ठाणा ३ कुल ठाणा १० नी सेवामां अमारी सविधि वंदना अर्ज करी सुखशाता पूछ शो।

पूज्य मुनिवरों द्वारा जे पाँच प्रस्तावो थया छे ते समाजोपयोगी तेमज धर्म-जागृति माटे प्रेरणा आपनारा छे। बंगाल

तथा विहार आजु धर्म-प्रचार माटे व्यवस्थित संघ-संगठन थशे अने व्यवस्थित प्रचारकार्य थशे तो भगवान महावीरनी धर्म-भूमिमां धर्मांकुरो फूटी निकलशे। अेमां शंका नथी। संघ संगठन तथा धर्म-प्रचारना दरेक कार्यमां कॉन्फ्रेन्स दरेक रीते सक्रिय सहयोग आपवा तत्पर छे। कान्फ्रेन्स स्था० दरेक संघनी प्रतिनिधि संस्था छे। जैन प्रकाशनो चालू अंक तो आजे सांजे प्रकाशित थई जाशे। अेटले विशेष समाचार प्रकाशना आवता अंकमां प्रकाशित करी देवामां आवशे ते जाणशो। जैन प्रकाशना विकासमाटे मार्गदर्शन करता रहेशो।

पत्रोत्तर आपशो!

अेज लि०

भवदीय

(सही) आनन्दराज सुराणा

आन० सेक्रेटरी,

अ० भा० ई० श्वे० स्था० जैन कान्फ्रेन्स

कलकत्ता संघकी विनती

कलकत्तामें अनेक भाई-बहिनोंने वर्षी तप किये थे। अक्षय तृतीया—पारण दिवस निकट था। तपस्वियोंकी हार्दिक अभिलाषा थी कि उनका यह तपोत्सव महातपोपूत मुनिवरोंके सानिध्यमें ही सम्पन्न हो तो अत्यन्त उत्कृष्ट कार्य हो। टाटानगर में एक साथ सर्व मुनियोंको एकत्रित देखकर कलकत्तासे श्री

संघके प्रमुख व्यक्ति विनतीके लिये आये। तपस्वी जगजीवनजी म० सा० तथा समाजभूषण पं० जयन्तीलालजी म० सा० ने परिस्थितियोंवश कलकत्ता आनेसे सर्वथा इन्कार कर दिया और पू० पं० प्रतापमलजी म० सा० व हीरालालजी म० सा० की ओर इशारा करते हुए कहा कि इन्हें ले जायं और उन्होंने मुनिवरों पर भी इस प्रसंग पर जानेके लिये अत्यन्त जोर डाला। संघकी भावभरी विनती देखकर मुनिवरोंने उनकी प्रार्थना स्वीकार की तथा तपोत्सवके अवसर पर उपस्थित रहनेका आश्वासन दिया।

संयोगकी वात है—एक दिन मुनिश्री वसन्तीलालजी म० सा० गिर गये और उनके घुटनेमें सख्त चोट आई। चला न जाता था। वर्षी तपके अवसर पर पहुँचना भी आवश्यक था। फिर भी कुछ चलने योग्य अवस्था तक टाटानगर तथा उसके उपनगरोंमें ठहरना पड़ा। साकची बाजारमें मुनिवरोंके कई व्याख्यान हुए।

कलकत्ता आगमन

टाटानगरसे पू० पं० हीरालालजी व दीपचंदजी म० सा० ने सैंथियाकी ओर और प्रतापमलजी व लाभचन्दजी म० सा० आदि ठाणा ५ ने कलकत्ताकी ओर विहार किया। मार्गवर्ती अनेक ग्राम-नगरोंमें धर्म प्रचार करते हुए मुनिगण कलकत्ता पधारे। मुनिगणोंके आगमनके समाचार दो दिन पूर्व ही बिजली की तरह फैल गये थे। अतः हावड़ाकी ओर सैकड़ों स्त्री-पुरुष स्वागतार्थ पहुँचने लगे। हावड़ा पुल पार करते २ जुलूसने वृहद् रूप ले लिया। गगनभेदी नारे स्थानीय समाजके धर्म-प्रेम को सूचित कर रहे थे। ठीक ८ बजे जुलूस जैन उपाश्रय २७, पोलक स्ट्रीट पहुँचा। बहुत समय पश्चात मुनिवरोंको पुनः कलकत्तामें देखकर हर स्त्री-पुरुष, बालक-बालिकाका हृदय प्रमुदित था। मंगल-गीत तथा संक्षिप्त भाषणके पश्चात् सब यथास्थान लौट गये।

महावीर जयन्ती महोत्सव

चैत्र शुक्ला १३, तदनुसार ता० ५-३-५५ को भगवान् महावीरका जन्म जयन्ती महोत्सव जैन उपाश्रममें मनाया गया। मुनिवरोंके भगवान् महावीरके जीवन पर प्रभावशाली भाषण

हुए। इसी दिन कलकत्ताकी विविध संस्थाओंके तत्त्वावधानमें एक सभा कलाकार स्थित जैन भवनमें हुई। मुनिगण भी उपस्थित थे। पं० मुनिश्री लाभचंदजी म० सा० का प्रभावशाली व्याख्यान हुआ।

स्वागत

सैंथियासे पं० मुनिश्री हीरालालजी म० सा० व दीपचंदजी म० सा० जीयागंज, अजीमगंज आदि मार्गवर्ती अनेक ग्राम-नगरों में धर्मप्रचार करते हुए ता० ६-३-५५ चैत्रशुक्ला १४ को कलकत्ता पधारे। बेलगछिया जैन मन्दिर तक कलकत्ता स्थित मुनिगण तथा अनेक स्त्री-पुरुष स्वागतार्थ पहुँचे तथा अत्यन्त हार्दिक स्वागत किया।

वर्षी तपोत्सव

वैशाख शुक्ला ३ – अक्षयतृतीयाका दिन निकट आता जा रहा था। जिस प्रयोजनसे कलकत्ता आना हुआ था, वह पावन दिन भी एक दिन आ ही गया। तपोत्सवका दो दिवसिय कार्यक्रम रखा गया था। तपस्वी भाई-बन्धुओंके अतिरिक्त स्थानीय सैकड़ों भाई वहिन सम्मिलित हुए थे।

कार्यक्रम

ता० २३-४-५५ शनिवार

समय प्रातः ७ से ६

सामूहिक आलोचना-पाठ

आपने अपने भाषणको जारी रखते हुए कहा—"मित्तिमें सव्व भूएसु" भगवान महवीरके इस वाक्यको सदैव प्रयोगमें लें। जिस स्थान या प्रान्तमें आप रहते हैं वहाँ बिना किसी प्रान्तीय भावनाके अधिकसे अधिक प्रेमसे रहे तथा एक दूसरेके सुख-दुःखमें काम आयें। स्थानीय समाजको कुटुम्बके व्यक्तियोंकी तरह यथाशक्ति सुख-सुविधायें प्रदान करें।

मुझे इस बातका गौरव है कि जैन समाज देशके प्रत्येक कार्य में तन-मन-धनसे सक्रिय सहयोग देता आया है। परिणामस्वरूप जनताके द्वारा चुनी हुई लोकसभामें २४ सीटें जैन समाजको प्राप्त हैं। ये सीटें जैन होकर प्राप्त नहीं की गई हैं परन्तु अपनी जन-सेवाओंके बल पर ही प्राप्त की गई है। प्रधानमत्री नेहरू भी हमारे समाज द्वारा की गई सेवाओंकी प्रशंसा करते हैं।

भाषणका उपसंहार करते हुए आपने श्रीसंघ द्वारा किये गये स्वागतके प्रति आभार व्यक्त किया और मुनिवरोंको भाव भरे शब्दोंमें अपनी श्रद्धाँजलि अर्पित की।

मनोहरदास कटरेमें व्याख्यान

ता० ३०-५-५५ को मनोहरदास कटरेके व्यवसासियोंके अनुरोध पर मुनियोंका एक सार्वजनिक प्रवचन हुआ। व्याख्यान में सभी प्रान्तोंके व्यक्ति उपस्थित थे। यह कटरा कलकत्तेका एक प्रसिद्ध व्यावसायिक केन्द्र है। यहाँ प्रमुख व्यक्तियोंकी दुकानें तथा गद्दियाँ हैं।

है। बिना कारण मर्यादा उल्लंघन कर निवास करना जैन साधु को नहीं कल्पता अतः मुनिश्री प्रतापमलजी म० सा०, पं० मुनिश्री हीरालालजी म० सा० व दीपचंदजी म० सा० ठाणा ३ पोलक स्ट्रीटसे विहार कर मानिकतल्ला स्थित दादावाड़ी पधारे तथा कई दिन वहीं विराजे। दादावाड़ी जब मुनिगण ठहरे हुए थे तब ब्यावर निवासी सुप्रसिद्ध समाजसेवी सेठ लालचन्दजीने सपरिवार मुनिवरोंके दर्शन किये तथा तीन दिन तक सेवामें रहे।

मुनिवरोंकी सेवामें सेन्ट्रल रेवेन्यू मिनिस्टर श्री एम० सी० शाह

ता० २६-५-५५ रविवारको केन्द्रीय रेवेन्यू मिनिस्टर श्री एम० सी० शाह सपत्नी मुनिवरोंके दर्शनार्थ आये। आज प्रवचन का विशेषायोजन था अतः प्रधान अतिथिका आसन भी उन्होंने ही ग्रहण किया। "आजका समाज और मानव कर्तव्य" पर मुनिवरोंके सारगर्भित प्रवचन हुए।

मुनिवरोंके प्रवचनके पश्चात् श्री एम० सी० शाहने अपने भाषणमें बताया—सर्वप्रथम इन मुनियोंके दर्शनका सौभाग्य मुझे अहमदाबादमें प्राप्त हुआ था फिर तो दिल्ली आदि स्थानोंमें दर्शन करनेके अवसर मिलते ही रहे हैं। मैं आप द्वारा दिये गये उपदेशोंके लिये अत्यन्त आभारी हूँ। जहाँ कही आप विराजित हों और यदि प्रसंगवश मुझे वहाँ जानेका अवसर मिलता है तो मैं बिना दर्शन किये नही लौटता।

आपने अपने भाषणको जारी रखते हुए कहा—"मित्तिमें सव्व भूएसु" भगवान महावीरके इस वाक्यको सदैव प्रयोगमें लें। जिस स्थान या प्रान्तमें आप रहते हैं वहाँ बिना किसी प्रान्तीय भावनाके अधिकसे अधिक प्रेमसे रहे तथा एक दूसरेके सुख-दुःखमें काम आयें। स्थानीय समाजको कुटुम्बके व्यक्तियोंकी तरह यथाशक्ति सुख-सुविधायें प्रदान करें।

मुझे इस बातका गौरव है कि जैन समाज देशके प्रत्येक कार्य में तन-मन-धनसे सक्रिय सहयोग देता आया है। परिणामस्वरूप जनताके द्वारा चुनी हुई लोकसभामें २४ सीटें जैन समाजको प्राप्त हैं। ये सीटें जैन होकर प्राप्त नहीं की गई हैं परन्तु अपनी जन-सेवाओंके बल पर ही प्राप्त की गई हैं। प्रधानमंत्री नेहरू भी हमारे समाज द्वारा की गई सेवाओंकी प्रशंसा करते हैं।

भाषणका उपसंहार करते हुए आपने श्रीसंघ द्वारा किये गये स्वागतके प्रति आभार व्यक्त किया और मुनिवरोंको भाव भरे शब्दोंमें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

मनोहरदास कटरेमें व्याख्यान

ता० ३०-५-५५ को मनोहरदास कटरेके व्यवसायियोंके अनुरोध पर मुनियोंका एक सार्वजनिक प्रवचन हुआ। व्याख्यान में सभी प्रान्तोंके व्यक्ति उपस्थित थे। यह कटरा कलकत्तेका एक प्रसिद्ध व्यावसायिक केन्द्र है। यहां प्रमुख व्यक्तियोंकी दुकानें तथा गद्दियाँ हैं।

यति हेमचन्द्रजी म०

ता० ३१-५-५५ को व्याख्यानके पश्चात् यति हेमचन्द्रजी म० ने अपनी जापान-यात्राके अनुभव सुनाये तथा वहांकी विविध प्रवृत्तियोंसे अवगत कराया।

कान्फ्रेन्सका प्रतिनिधि-मंडल

ता० ११-६-५५ को स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेन्सका एक प्रतिनिधि मंडल सेठ अचल सिंहजी जैन एम पी की अध्यक्षता में देहलीमें कान्फ्रेन्स भवनके संबंधमें आया। डेपुटेशनमें श्री आनन्दराजजी सुराणा, मंत्री अ. भा स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स व धीरजभाई तुरखिया सम्मिलित थे। शनिवार तथा रविवारके व्याख्यानोंमें योजनापर प्रकाश डाला गया तथा अधिकसे अधिक निधि एकत्रित कर देनेकी अपील की गई। परिणामस्वरूप चालीस हजारके करीब रुपयोंके अभिवचन एक सप्ताहके कार्यकालमें ही प्राप्त हो गये।

परिशिष्ट : १ :

विहारके मध्यवर्ती ग्राम नगरों का संक्षिप्त परिचय

(देहलीसे कलकत्ते तकके मार्गवर्ती ग्राम-नगरोंका परिचय पूर्व प्रकाशित बंगाल व विहार पथ-प्रदर्शक पुस्तकमें दिया जा चुका है अतः यहांपर उन ग्रामों तथा वहां किये गये लोकोपकारी कार्योंका दिग्दर्शन नहीं कराया गया है, यहां मात्र कलकत्ता चातुर्मासके पश्चात् विहार-मध्य आनेवाले ग्राम-नगरोंका परिचय दिया गया है)

हिन्द मोटर— **११ फरवरी**

लिलुआसे पांच मीलका विहार कर सर्व मुनिगण हिन्द मोटर फेक्ट्रीमें श्री गोपीचन्दजी धाडीवालके बंगलेपर पधारे। श्री गोपीचन्दजी कलकत्तेके सुपरिचित कार्यकर्ता तथा इस मिल के जनरल मैनेजर हैं। जैनधर्मके प्रति आपकी आस्था तथा कुछ करनेकी भावना प्रशंसनीय है। यहां कानजी पानाचंद (प्रमुख, कलकत्ता गुजराती संघ) आदि कई सज्जन दर्शनार्थ आये।

श्रीरामपुर— **१२ फरवरी**

हिन्द मोटर फेक्ट्रीसे ४ मीलका विहार कर श्री रामपुरिया मिलमें पधारे। मिल मालिक श्री जयचंद्रलालजी रामपुरियाने सार्वजनिक व्याख्यान तथा प्रीतिभोजका पूर्ववत् आयोजन किया। श्री रामपुरिया उत्साही नवयुवक कार्यकर्ता है। समृद्ध तथा सर्वसाधन सम्पन्न होनेपर भी आप विनम्र तथा धर्मप्रेमी हैं। यहां मुनिगण चार दिनतक विराजित रहे।

सेवड़ाफूली— **१६ फरवरी**

श्रीरामपुरसे चार मीलका विहार कर महासुखराम रामरिछपालजी अग्रवालके भवन पर ठहरे। यह कुटुम्ब भक्तिमान तथा श्रद्धालु है।

चन्द्रनगर— **१७ फरवरी**

नौ मीलका विहार कर सेठ रामेश्वरलालजी बंशीलालजी अग्रवालके आनन्दभवनमें विराजमान हुए। यह कुटुम्ब श्रद्धाशील तथा भक्तिमान् है।

मगरा— **१८ फरवरी**

नौ मीलका विहार कर मुनिगण मंगलचंडीके मंडपमें ठहरे।

पांडुवा— **१९ फरवरी**

नौ मील चलकर स्थानीय मुकुल सिनेमामें विश्राम लिया। कुछ समय विश्राम करनेके पश्चात् पुनः आगे बढ़े तथा पांच मील पर शिमलागढ स्कूलमें रात्रि निवास किया।

मेमारी—शिमलागढसे नौ मीलका विहार कर मारवाडी राइस मिलमें उतरे। मिलके कार्यकर्ता भक्तिमान् तथा श्रद्धालु हैं।

शक्तिगढ— २० फरवरी

आठ मीलका विहार कर बंगाल राइस मिलमें उतरे।

वर्धमान— २१ फरवरी

आठ मीलका विहार कर सर्व मुनिगण वर्धमान पधारे। वर्धमानका वर्णन पूर्व पर्याप्त दिया जा चुका है। अतः पुनः पिष्ट-पेशणकी आवश्यकता नहीं। यहां गुजराती, मारवाड़ी, जैन संघोंकी भक्ति सराहनीय है। यह क्षेत्र मुनियोंके चातुर्मास-योग्य है।

खाना जंकशन— २४ फरवरी

वर्धमानसे २३ फ़रवरीको विहार कर मुनिगणने तीन मील-के अनन्तर एक शिव मन्दिरमें रात्रि निवास किया। द्वितीय दिवस प्रातः आगेकी ओर विहार किया। पांच मीलके विहारके पश्चात् खाना जंकशन पर कुछ समयके लिये मुसाफिर खानेमें विश्राम लिया। यहां गुजराती एवं मारवाड़ी भाइयोंसे आहार-का योग मिला। पुनः यहांसे छः मीलका विहार कर वोनपास स्टेशन पर रात्रि निवास कियो।

गुमकरा— २५ फरवरी

छः मीलका विहार कर सेठ मूलचंदजी प्रतापमलजी मरोठी

श्रीरामपुर— १२ फरवरी

हिन्द मोटर फेक्ट्रीसे ४ मीलका विहार कर श्री रामपुरिया मिलमें पधारे। मिल मालिक श्री जयचंद्रलालजी रामपुरियाने सार्वजनिक व्याख्यान तथा प्रीतिभोजका पूर्ववत् आयोजन किया। श्री रामपुरिया उत्साही नवयुवक कार्यकर्ता है। समृद्ध तथा सर्वसाधन सम्पन्न होनेपर भी आप विनम्र तथा धर्मप्रेमी है। यहां मुनिगण चार दिनतक विराजित रहे।

सेवड़ाफूली— १६ फरवरी

श्रीरामपुरसे चार मीलका विहार कर महासुखराम रामरिछपालजी अग्रवालके भवन पर ठहरे। यह कुटुम्ब भक्तिमान तथा श्रद्धालु है।

चन्द्रनगर— १७ फरवरी

नौ मीलका विहार कर सेठ रामेश्वरलालजी बंशीलालजी अग्रवालके आनन्दभवनमें विराजमान हुए। यह कुटुम्ब श्रद्धाशील तथा भक्तिमान् है।

मगरा— १८ फरवरी

नौ मीलका विहार कर मुनिगण मंगलचंडीके मंडपमें ठहरे।

पांडुवा— १९ फरवरी

नौ मील चलकर स्थानीय मुकुल सिनेमामें विश्राम लिया। कुछ समय विश्राम करनेके पश्चात् पुनः आगे बढ़े तथा पांच मील पर शिमलागढ स्कूलमें रात्रि निवास किया।

मेमारी—शिमलागढसे नौ मीलका विहार कर मारवाड़ी राइस मिलमें उतरे। मिलके कार्यकर्ता भक्तिमान तथा श्रद्धालु हैं।

शक्तिगढ— २० फरवरी

आठ मीलका विहार कर बंगाल राइस मिलमें उतरे।

वर्धमान— २१ फरवरी

आठ मीलका विहार कर सर्व मुनिगण वर्धमान पधारे। वर्धमानका वर्णन पूर्व पर्याप्त दिया जा चुका है। अतः पुनः पिष्ट-पेशणकी आवश्यकता नहीं। यहां गुजराती, मारवाड़ी, जैन संघोंकी भक्ति सराहनीय है। यह क्षेत्र मुनियोंके चातुर्मास-योग्य है।

खाना जंकशन— २४ फरवरी

वर्धमानसे २३ फरवरीको विहार कर मुनिगणने तीन मीलके अनन्तर एक शिव मन्दिरमें रात्रि निवास किया। द्वितीय दिवस प्रातः आगेकी ओर विहार किया। पांच मीलके विहारके पश्चात् खाना जंकशन पर कुछ समयके लिये मुसाफिर खानेमें विश्राम लिया। यहां गुजराती एवं मारवाड़ी भाइयोंसे आहार-का योग मिला। पुनः यहांसे छः मीलका विहार कर बोनपास स्टेशन पर रात्रि निवास किया।

गुमकरा— २५ फरवरी

छः मीलका विहार कर सेठ मूलचंदजी प्रतापमलजी मरोठी

के भवन पर उतरे। यहां निम्न स्वधर्मी बंधुओंके भक्तिमान घर हैं।

गणेशमलजी देवीचंदजी मरोठी

रतनलालजी गोलछा

सायंकाल सात मीलका विहार कर भेदिया स्टेशन पर रात्रि व्यतीत की। यहां एक बंगाली संभ्रान्त व्यक्ति श्री पशुपतिजीने सपरिवार सेवा-भक्तिका लाभ लिया।

बोलपुर— २६ फरवरी

कोपाई— २८ फरवरी

पांच मीलका विहार कर कोपाई स्टेशन पर रात्रि निवास किया।

अहमदपुर— १ मार्च

पांच मीलका विहार कर कुचिघाटा राइस मिलमे उतरे। सेठ तोलारामजी जेठमलजी बोथरा आदि सज्जनोंने सेवाभक्ति का लाभ लिया। सायंकाल चार मीलका विहार कर बतासपुर स्टेशनपर रात्रि निवास किया।

सैंथिया— २ मार्च

सैंथियासे झरिया

गधाधर— १९ मार्च

छः मील चलकर स्टेशन पर रात रहे। यहां 'सैंथिया', 'जैन संघ' सेवामें साथ था।

मलारपुर— **२० मार्च**

छः मील चलकर 'राज्य भवन' में उतरे। यहां भक्तिमान् ओसवाल सज्जनोंके निम्न घर हैं:—

सेठ कन्हैयालालजी मानमलजी छाजेड़
,, मुन्नीलालजी भादाणी
,, मंगलचन्दजी छाजेड़
,, लाभुरामजी भादाणी
,, घेवरचन्दजी बोथरा

रामपुरहाट **२१ मार्च**

आठ मीलका विहार कर सेठ भेरूदानजी तोलारामजीके कोठी पर ठहरे। यहां एक ही बोथरा परिवारके छः भक्तिमान् घर हैं। यह गांव अजीमगंज भागलपुर रोड पर है।

सूड़ी-चूवा— **२२ मार्च**

दोपहरको छः मीलका विहार कर हवाई अड्डे पर रात रहे।

सरस डंगाल— **२३ मार्च**

सात मील चलकर पुलिस थानेमें उतरे। यहां सैंथियासे सेठ भोजराजजी पारख दर्शनार्थ आये। यहीं बंगालकी सीमा समाप्त होकर विहारकी सीमा प्रारंभ होती है।

दोपहरको आठ मीलका विहार कर शिकारीपाड़ा रात रहे।

बरमसीया— २४ मार्च

चार मील चलकर 'स्कूल' में उतरे। अग्रवाल सज्जन भक्तिमान् है। दोपहरको पांच मीलका विहार कर काठी जोड़ीया रात्रि निवास किया।

दूमका— २५ मार्च

सात मीलका विहार कर अग्रवाल धर्मशालामें ठहरे। यहाँ अशोक कुमारजी किरन कुमारजी नाहर, आनरेरी मजिस्ट्रेट, एक घर ओसवालका एवं सौ घर अग्रवाल भाइयोंके हैं। धार्मिक भावना अच्छी है।

रात्रिमें जाहिर व्याख्यान हुआ, जिसका जनता पर बहुत असर हुआ। अनेकों त्याग हुए। तपस्वी श्री जगजीवनजी म० ठा० ३ भी सिवड़ी होकर यहा पधार गये थे।

कलकत्ता, सैंथिया आदिके अनेक श्रावकोंने दर्शन किये।

मारू मोड़— २६ मार्च

चार मील चलकर रान रहे। यहाँ अग्रवाल भाईका घर है। यहाँ मुनियोंने यह निश्चय किया कि वैरागी रत्नलालजी कोठारीकी दीक्षाकी तैयारीके लिए जल्दी ही शिखरजी पहुंचना चाहिए। यहांसे भागलपुर (चंपापुरी) नजदीक है। इसलिए इस क्षेत्रका भी विहार कर लेना चाहिए। अतः पं० मु० श्री प्रतापमलजी म० ठा० ३ ने शिखरजीकी ओर एवं पं० मु० श्री हीरालालजी म० ठा० ३ ने चंपापुरीकी ओर विहार किया।

जरमुंडी— २७ मार्च

ग्यारह मीलका विहार कर पं० मु० श्री प्रतापमलजी म० ठा० ३ एवं वैरागी रतनलालजी कोठारी यहांकी ठाकुरवाडीमें ठहरे। अग्रवाल सज्जनोंकी भक्ति अच्छी है। दोपहरको छः मील चलकर सेहरा रात रहे।

घोरमारा— २८ मार्च

आठ मीलका विहार कर 'स्कूल' में ठहरे। यहांके अध्यापक साधुभक्त हैं। वहांसे दो मील चलकर 'बसडीया' रात रहे।

वैद्यनाथ धाम— २९ मार्च

संग्राम लोडीया-- १ अप्रेल

पाच मीलका विहार कर नई स्कूलमें रात रहे। जनता पहले भयभीत हुई, निकट आनेसे समभी और उपदेश श्रवण किया। बादमें अनेकों त्याग हुए।

बुढ़े— २ अप्रेल

दस मीलका विहार कर शिवरो मंडपमें ठहरे। यह रास्ता पहाड़ी है।

दोपहरको सात मील चलकर जगदीशपुर स्टेशन पर रहे।

महेश मुंडा — ३ अप्रेल

नौ मीलका विहार कर स्टेशन पर ठहरे। गीरीडिह जैन संघने दर्शन एवं सेवाका लाभ लिया—

वहांसे छः मील चलकर 'गीरीडिह' जैन श्वे० धर्मशालामें उतरे। यहां दो घर गुजराती जैन एवं चार घर तेरापन्थी जैन ओसवाल एवं अनेकों दिगम्बर जैन भाइयोंके घर है।

यहां शिखरजी जानेवाले अनेक यात्रियोंने दर्शन एवं सेवा का लाभ लिया। वेरमा संघ तथा सैंथियाके सेठ हरखचन्दजी पारख एवं उनकी माताजी आदि पूरा परिवार भी साथ था।

बराकर— ४ अप्रेल

आठ मील चलकर यहां पहुंचे। जैन मन्दिरमे ठहरे।

मधुवन (शिखरजी) ५ अप्रेल

आठ मील चलकर श्वे० कोठीमें उतरे।

ईशरी— १७ अप्रेल

छः मील सीधे पहाड़ी रास्तेसे चलकर श्वे० जैन धर्मशाला में ठहरे।

नीमिया घाट— १९ अप्रेल

तीन मील चलकर रात रहे।

तोपचांची— २० अप्रेल

आठ मीलका विहार कर स्कूलमें उतरे। पाठक महोदयके भाव अच्छे हैं। वहांसे तीन मील चलकर चिरूड़ी स्कूलमें रात्रि निवास किया।

कतरासगढ़— २१ अप्रेल

सात मील चलकर जैन उपाश्रयमें विराजमान हुए। यहांका क्षेत्र भक्तिमान् है। क्षेत्र चातुर्मास करने योग्य है।

करकेन्द— २२ अप्रेल

छः मीलका विहार कर यहाँ पधारे। मारवाड़ी एवं गुजराती जैन संघके अनेकों भक्तिमान् घर हैं।

झरिया— २३ अप्रेल

चार मील चलकर मय सुस्वागतके प्राचीन उपाश्रयमें उतरे।

झरियासे सथिया

धनबाद— ११ जून

पाँच मीलका विहार कर पं० मुनि श्री प्रतापमलजी म० ठा० ४ महेता हाउसमें पधारे। वहांसे छः मीलका विहार कर लक्ष्मी नगर रात्रि रहे।

गोविन्दपुर— १२ जून

दो मीलका विहार कर राम मन्दिरमें उतरे। सेठ नवनीतलाल अमृतलाल पारीख एवं अनेक सज्जन भक्तिमान् हैं।

यहांतक पं० मुनि श्री लाभचन्दजी म० पहुंचाने पधारे थे। वहांसे वे पुनः झरियाकी तरफ विहार कर गये।

वड़वा डाक बंगला— १३ जून

आठ मील चलकर यहां विश्राम लिया। पुनः छः मील चल कर निरसा स्कूलमें रात्रि व्यतीत की।

प्योर श्यामपुर कोलियारी— १४ जून

दो मीलका विहार कर सेठ शंकरभाई, सेठ जगजीवनभाई, सेठ मणिभाईकी संयुक्त कोलियारीमें विराजमान हुए। सेठ शंकर भाई, बचुभाईने सप्रेम सेवाका लाभ लिया। वहांसे सात मील का विहार कर बराकर रतनसी एण्ड कम्पनीमे रात्रि-निवास किया।

नियामतपुर— १५ जून

पांच मीलका विहार कर शान्तिलाल एण्ड कंपनीमें विराजे।

श्री शिवदत्त राय गोयनकाके भवनमे प्रवचन हुआ। आस-पासके भाई बहिनोंने दर्शनोंका लाभ लिया।

बर्नपुर— १६ जून

छः मीलका विहार कर धनजी भाईके बोम्बे स्टोर पर उतरें। यहां गुजराती जैन संघके भक्तिमान् पांच घर है। व्याख्यान एवं त्याग हुए। यहां एक लोहेका बडा कारखाना है।

आसनसोल— १८ जून

चार मील चल कर गुजराती स्कूलमें विराजे। यहां आठ दस गुजराती जैन घर है। मारवाड़ी अग्रवालोंके बहुत घर हैं।

इण्टसाथ कोलियारी— २१ जून

सात मील चल कर यहां विराजमान हुए। यहां अनेक गुजराती कार्यकर्ता हैं।

गनीगंज— २२ जून

प्योर केन्दा कोलियरी— २५ जून

नौ मील चल कर सेठ रामनारायणजीकी कोठीमें ठहरे। कोठीके कर्मचारी गण श्रद्धालु है।

पाण्डेश्वर— २६ जून

८ मीलका विहार कर हाटतल्लामें एक अग्रवाल भाईके यहां विश्राम लिया। दोपहरको १० मील चल कर डुबराजपुर स्टेशन पर पहुंचे।

रंजन वाजारमें रामकुंवारजी आँचलियाके मकान पर ठहरे। व्याख्यान हुआ।

यहा श्री पूनमचन्दजी सुराना, श्री चौथमलजी चौरडिया, श्री केशवजी कम्पनी वाले आदि सज्जनोंकी भक्ति सराहनीय थी।

छिनपाई— २८ जून

छः मीलका विहार कर सेठ चंपालालजीके भवनमें उतरे। यहां सैंथियासे अनेक सज्जन सेवार्थ आये। दोपहरको ६ मील चल कर एक स्कूलमें रात रहे।

भिवडी— २९ जून

चार मीलका विहार कर भगवान भाईके भवनमें ठहरे। यहां

गुजराती वंधुओंके छः घर है। ग्राम विशाल है।

(कुनुरी) रंगाईपुर— ३० जून

७ मील चल कर स्कूलमें रात्रि निवास किया। सैंथियाके सज्जन विहारमे साथ थे।

सैंथिया – जैन धर्मशाला १ जुलाई

सैंथियासे झरिया

अहमदपुर— १२ नवम्बर

छ मीलका विहार कर सर्व मुनिगण वोथरा राइस मिलमे ठहरे। रामपुर हाटसे सेठ तोलारामजी वोथरा सपरिवार आये थे। व्याख्यान हुआ। अनेकों त्याग-प्रत्याख्यान हुए। दोपहरको छः मीलका विहार कर कोपाई ग्राममे एक मारवाडी सज्जनके यहां रात्रि-निवास किया।

बोलपुर— १३ नवम्बर

छः मीलका विहार कर सेठ हीरालालजी देवकरणजी आंच-लियाके भवन पर उतरे।

शान्तिनिकेतन— १४-१५ नवम्बर

रामनगर— १६ नवम्बर

सात मीलका विहार कर एक बंगाली सज्जनके घर विश्राम

लिया। बोलपुरके भाई बहिन साथ थे। दोपहरको पाँच मीलका विहार कर एलम बाजार डाक बंगलेमें रात्रि-निवास किया। रात्रिमें एक अंग्रेज सज्जनने दर्शन किये।

जयदेव— १७ नवम्बर

८ मीलका विहार कर यहाँ ठाकुरवाड़ीमें ठहरे। यहाँ अजेय नदीके इस किनारे बीरभूम जिला समाप्त होता है। उस पार वर्धवान जिला शुरू होता है। रास्तेमें सुगड गाँवमें विश्राम लिया। यहाँ एक कास्तकार विभूषण गोडाईने इक्षुरस वहराया तथा अनेक त्याग किये।

काटावेडिया -पाँच मील चलकर शान्ति आश्रममें ठहरे।

ग्राम—	स्थान—	मील—	तारीख
ऊखरा—	महन्त आश्रम	११	१८

निर्वाक सम्प्रदायी आचार्य सुखदेवजी सरलदेवजी म० ने आदरभाव प्रदर्शित किये। आप भावुक हैं। आश्रम प्रगति पथ पर है। रास्तेमें इष्ट शीतलपुर कोल्यारी मैनेजर लक्ष्मीशंकर भाई मिले। अतिथि सत्कार किया।

सेंट्रल जामवाद--	कोल्यारी	४	१८

दोपहरको यहाँ पधारे। मैनेजर महादेव भाई तथा मोहन-भाईने सेवा भक्तिका लाभ लिया। व्याख्यान एवं त्याग हुए।

रानीगंज—	अग्रवाल धर्मशाला	८	१९

गुजराती समाजके छः स्थाकवासी घर है एवं सैकड़ों अग्रवाल भाइयोंके घर है। दूसरे दिन सेठ माणकचन्दजी छाजेड़ एवं श्रीमती सरस्वती बाई तथा राजेन्द्र कुमारजी जैन सैंथिया वालों ने दर्शनोंका लाभ लिया।

आसनसोल— गुजराती स्कूल १० २१

स्थानकवासी समाजके दस भक्तिमान घर है।

न्यामतपुर शान्तीलाल एण्ड कं. ७ २२

बराकर— अग्रवाल धर्मशाला ५ २२

शामको मुनिश्री यहां पधारे। साध्वी श्री मनोहरश्रीजी आदि ठाणा ६ कलकत्ता पधारते हुए मिले। सुख-संदेश पूछा। नये मुनिजीके ज्ञान ध्यानपर हर्ष एवं संतोष प्रकट किया, क्योंकि आप दीक्षा-प्रसंग पर झरिया विराजमान थीं।

प्योर श्यामपुर-- कोल्यारी ७ २३

संयुक्त कोल्यारी (सेठ शंकरभाई, सेठ मणिभाई, सेठ जगजीवनभाई) के मैनेजर बच्चुभाईने पूर्ण सेवाका लाभ लिया।

बड़वा— डाक बंगला ६ २३

गोविन्दपुर— पारीख भवन ८ २४

धनबाद— महेता हाउस ७ २५

झरिया— नूतन उपाश्रय ३ २६

झरियासे टाटानगर

ग्राम—	स्थान—	मील -	तारीख
करकेन्द—	आजाद हिन्द क्लब	४	१० दि०

मुनि श्री बसन्तीलालजी म० के आराम होनेपर पं० मु० श्री प्रतापमलजी म० ठा० ४ विहार कर यहाँ पधारे। विहारमें अनेक भाई बहिन साथ थे। यहाँ दो महत्वपूर्ण व्याख्यान हुए, जिससे प्रेरित होकर यहाँके श्रीसंघने उपाश्रय बनानेका विचार-विनिमय किया।

कतरास—	उपाश्रय	६	१२

यहाँ भी विशाल उपाश्रयकी बातचीत चली। श्रीसंघ अधिक भक्तिमान है।

खरखरी कोल्यारी—	बेबी कीच	५	१४
तेल मिरचु—	शंकर भवन	४	१६
चास—	मोड़पर 'स्कूल'	८	१७

यहाँसे कुछ दूरी पर चास बाजारमें अनेक अग्रवाल भाइयों के भक्तिमान् घर है। कुछ प्रमुख नाम नीचे दिये जाते हैं:—

सेठ गोरधनदास शकरलाल

सेठ दुर्गादत्त महावीर प्रसाद

पीडरा जाड़ा—	स्कूल	५	१८

गुजराती समाजके छः स्थाकवासी घर है एवं सैकड़ों अग्र-वाल भाइयोंके घर है। दूसरे दिन सेठ माणकचन्दजी छाजेड़ एवं श्रीमती सरस्वती वाई तथा राजेन्द्र कुमारजी जैन सैंथिया वाले ने दर्शनोंका लाभ लिया।

आसनसोल—— गुजराती स्कूल १० २१

स्थानकवासी समाजके दस भक्तिमान घर है।

न्यामतपुर शान्तीलाल एण्ड कं. ७ २२

बराकर—— अग्रवाल धर्मशाला ५ २२

शामको मुनि श्री यहां पधारे। साध्वी श्री मनोहरश्रीजी आदि ठाणा ६ कलकत्ता पधारते हुए मिले। सुख-संदेश पूछा नये मुनिजीके ज्ञान ध्यानपर हर्ष एवं संतोष प्रकट किया, क्योंकि आप दीक्षा-प्रसंग पर झरिया विराजमान थी।

प्योर श्यामपुर-- कोल्यारी ७ २३

संयुक्त कोल्यारी (सेठ शंकरभाई, सेठ मणिभाई, सेठ जग-जीवनभाई) के मैनेजर बच्चुभाईने पूर्ण सेवाका लाभ लिया।

बड़वा—— डाक बंगला ६ २३

गोविन्दपुर— पारीख भवन ८ २४

धनबाद—— महेता हाउस ७ २५

झरिया—— नूतन उपाश्रय ३ २६

झरियासे टाटानगर

ग्राम—	स्थान—	मील -	तारीख
करकेन्द—	आजाद हिन्द क्लब	४	१० दि०

मुनि श्री वसन्तीलालजी म० के आगम होनेपर पं० मु० श्री प्रतापमलजी म० ठा० ४ विहार कर यहां पधारे। विहारमें अनेक भाई बहिन साथ थे। यहाँ दो महत्वपूर्ण व्याख्यान हुए, जिससे प्रेरित होकर यहांके श्रीसंघने उपाश्रय बनानेका विचार-विनिमय किया।

कतरास—	उपाश्रय	६	१२

यहां भी विशाल उपाश्रयकी बातचीत चली। श्रीसंघ अधिक भक्तिमान है।

खरखरी कोल्यारी—	बेबी क्रीच	५	१४
तेल मिरचु—	शंकर भवन	४	१६
चास—	मोड़पर 'स्कूल'	८	१७

यहांसे कुछ दूरी पर चास बाजारमें अनेक अग्रवाल भाइयो के भक्तिमान् घर है। कुछ प्रमुख नाम नीचे दिये जाते हैं:—

सेठ गोरधनदास शंकरलाल

सेठ दुर्गादत्त महावीर प्रसाद

पीडरा जाडा—	स्कूल	९	१८

ग्राम—	स्थान—	मील—	तारीख
कटाटार—	स्कूल	५	१८
आइमन्डी—	स्टेशन	५	१९

पुरुलिया श्री संघने दर्शनोंका लाभ लिया।

दोपहरको ५ मीलका विहार कर सेठ रणछोड दासजीके बगीचोंमें रात्रि निवास किया। यहां पुरूलिया श्रीसंघ एवं कलकत्ता निवासी सेठ ईश्वरदासजी छल्लाणीने सपुत्र दर्शन किये।

पुरूलिया—	करणी धर्मशाला	४	२०
कांटाडी—	स्टेशन	९	२५

पुरूलिया एवं झरियाके भाई-बहिन पैदल यात्रामे साथ थे। व्याख्यान एवं अनेक त्याग हुए।

बलरामपुर—	सर्राफ धर्मशाला	१०	२६

यहां अनेक भक्तिमान वैष्णव समाजके घर है। रात्रिमें जाहीर व्याख्यान हुआ। अनेकों त्याग हुए।

ओसवाल घर सेठ लक्ष्मीचन्दजी पूनमचन्दजी लुगावत।

यहां निम्नलिखित सज्जनोंने दर्शनोंका लाभ लियाः—

सेठ नरभेराम हंसराज कामाणी प्रमुख, जमशेदपुर

श्रीसंघ पुरूलिया एवं बलरामपुर,

सेठ झवेरचन्द वल्लभजी दोशी

सेठ उत्तमचन्द नरभेराम देसाई

ग्राम —	स्थान —	मील —	तारीख
आदरडीह—	मिडिल स्कूल	७	२७

टाटानगर, वलरामपुर और पुरुलियाके धर्मप्रेमी भाइयोंने सेवाभक्तिका लाभ लिया।

चाण्डील —	अग्रवाल धर्मशाला	९	२८

भक्तिमान अग्रवाल भाइयोंने सेवाभक्ति एवं व्याख्यानका लाभ लिया। सेठ चुन्नीलालजी अग्रवाल उत्साही एवं धर्म-प्रेमी हैं।

कान्दरबेड़ा—	स्कूल	९	२९

यह पहाडी प्रदेश है। यहाके सघन जगलोंमें सिंह आदि जंगली जानवर पाये जाते है।

यहां निम्न वधु सपरिवार दर्शनार्थ आये.—

सेठ झवेरचन्द भाई सपरिवार

सेठ भीखाभाई „

टाटानगर—	जैन उपाश्रय		३०

टाटानगरसे कलकत्ता

संयुक्त प्रवचन

१५ जनवरीको स्थानीय उपाश्रयमें प० मु० श्री प्रतापमलजी म०, पं० मु० श्री हीरालालजी म० एवं सवेगी मुनि श्री जयप्रभ

विजयजी म० श्री जयकीर्ति विजयजी म० का संयुक्त प्रवचन हुआ। इस प्रकारका प्रसंग यहां पर प्रथम ही था। इसलिये जनतामे उत्साह था। सुन्दर प्रभाव रहा।

ग्राम—	स्थान—	मील—	तारीख
साक्ची—	बाजार	१॥	१९

पं० मु० श्री हीरालालजी म० ठा० ७ गुजराती संघके आग्रहसे पधारे। यहां आपके व अन्य मुनियोंके व्याख्यान हुए। यह स्थान जमशेदपुरका उपनगर है तथा साक्ची बाजारके नामसे प्रसिद्ध है। यहां भी गुजराती जैन संघके करीब चालीस घर है। धर्म स्कूल है। स्थानककी लगन लग रही है। स्थानक का चन्दा इकट्ठा हो गया है। भक्ति सुन्दर है। यहांसे पं० मुनि श्री हीरालालजी म० व दीपचंदजी म० ने सैंथिया की ओर विहार किया।

जुगसलाई –	बाजार	२	२४

जुगसलाई भी टाटाका उपनगर है। यहां ओसवाल जैन सज्जनोंके लगभग १५ भक्तिमान घर है। अग्रवाल आदि वैष्णव समाज अधिक संख्यामे है। यहां स्थानक एवं जैन मन्दिर बनानेका प्रयत्न चालू है। कुछ आहार ग्रहण कर मुनिगण गन्तव्य मार्गकी ओर बढ़े।

गोविन्दपुर--	स्कूल	५	२४

ग्राम—	स्थान—	मील—	तारीख
नरसिंहगढ़—	मारवाड़ी धर्मशाला	६	२६

यहां रात्रि निवास किया। अग्रवाल सज्जनोंके घर है।

चकोलिया—	मारवाड़ी धर्मशाला	१३	२७

कोकपारा स्टेशन पर विश्राम लेकर यहां पहुंचे। अग्रवाल भाइयोंके बहुत घर है तथा भक्ति सराहनीय है। यहां भारत सेवा-संघकी एक सन्यासी मंडली मिली, जो आर्य-धर्मका प्रचार कर रही है।

पड़ीहटी—	डाक बंगला	८	२८

रास्तेमें डुलू नदी पार की। यह नदी बंगाल-विहारकी सीमा बनाती है।

अमलातोड़ा—	स्कूल	४	२८

रात्रि निवास किया। रातको व्याख्यान हुआ। अनेकों त्याग हुए।

झाड़ग्राम —	कमला भवन	९	२९

अग्रवाल आदि मारवाड़ी सज्जनोंके १५ भक्तिमान घर है।

यहांसे विहार कर राज्य भवन पर मुनिवर पहुंचे। वहां राजा एन० एम० डेव साहबके प्राइवेट सेक्रेटरी श्रीमान नसुर सिंहजी सा० ने दर्शन किये और भावभरे शब्दोंमे अर्ज की कि इस ग्रामकी आवहवा अति उत्तम है। यह ग्राम उन्नति पर भी

है। कृपा कर आप यहां एक जैन भवनका आयोजन करें। इस संस्थाके लिये जमीन सरकार भेंट देगी।

लोधासली—	डाक बंगला	१०	२९
खेमासोली—	स्कूल	९	३०

वंगाली जनताने प्रेमपूर्वक वार्तालाप किया।

कलाइ कुंडा—	मारवाड़ी पंप	४	३०

रात्रि निवास किया। खरीदा (खडगपुर) जैन संघने दर्शनों का लाभ लिया।

खरीदाबाजार—		४	३१

यहां सेठ श्री दीपचन्दजी वोहराके भवनपर उतरे। यह ग्राम खडगपुरका उपनगर है। वर्कस मेन वस्तीके कारण ग्राम उन्नति पर है। अत दि० जैनोंके ५०, श्वे० जैनोंके १५ मारवाडी ओसवालोंके घर हैं। जनता भक्तिमान् एवं उत्साही है। दि० मन्दिर है। श्वे० मन्दिर एवं उपाश्रय बनानेकी कोशिश चालू है। व्याख्यानमें जनताने प्रेमपूर्वक भाग लिया। कुछ प्रमुख ओसवाल सज्जनोंके नाम:—

सेठ धनरूपमलजी भन्डारी, भन्डारी एण्ड संस, गोलवाजार खड़गपुर

सेठ गुलावचन्दजी संचेती ,, ,,

सेठ दीपचन्दजी पुखराजजी वोरा, ठि० मलीचारोड, खरीदा

सेठ भंवरलालजी बाफण
,, मोतीलालजी मालू
,, सुखलालजी मालू
,, तेजमलजी बच्छावत
,, चांदमलजी गोलेच्छा
,, शिवलालजी झाबक
,, पृथ्वीराजजी इन्दरचन्दजी
,, मानकचन्दजी पारख
,, चम्पालालजी गोलेच्छा
,, देवीचन्दजी पीचा
,, नथमलजी कोचर
,, अनराजजी झाबक
,, घेवरचन्दजी गोलेच्छा

यहां सेठ पातीरामजी झरिया वाले सपरिवार दर्शनार्थ आये।

खड़गपुर— मु० गेस्ट हाउस २ २ फ०

यहां टेकनिकल इंजीनियरिंग कालेज एवं रैलवे इंजन बनाने का एक बड़ा भारी कारखाना है। मद्रास, पुरी, बम्बई, गोमा व कलकत्ता आदि जानेवाली गाड़ियोंका बड़ा भारी जंक्शन है। अतः यह ग्राम उन्नति पर है। यहीसे उड़ीसा जानेका मोटर मार्ग भी है।

गुजराती स्कूलमे जाहीर व्याख्यान हुए।

यहां अभी २ जैन उपाश्रय भी खरीद लिया गया है।

कुछ भक्तिमान गुजराती भाइयोंकी नामावली नीचे दी जो रही है:—

सेठ जादवजी भाई ठाकरसी
,, दुलीचन्द पानाचन्द
,, शान्तिलाल पानाचन्द
,, कान्तीलाल हरगोविन्द
,, चन्दुलाल जेठालाल
,, तुलसीदास हेमचन्द
,, छबीलदास चुन्नीलाल दोशी
,, माधोजी पनजी
,, भूपतभाई

ग्राम—	स्थान —	मील —	तारीख
मोहनपुर—	डाक बंगला	५	४

खड़गपुरसे जयनादके साथ विहार कर यहां पधारे। भक्ति-वश अनेक भाई बहिन साथ थे। यहां कंसावतीका पुल है। पहले किनारे पर मिदनापुर शहर है, जो पहले विराटपुरके नाम से प्रसिद्ध था, जहां पांच पांडव एक वर्ष गुप्त रहे थे। पुल पार वाली सडक वाकुड़ा होकर आसनसोल जाती है।

ग्राम—	स्थान —	मील —	तारीख
लक्ष्मणपुर—	डाक बंगला	५	४
हरीना —	स्कूल	६	५

ग्राम—	स्थान—	मील—	तारीख
डेबरा—	डाक बंगला	५	५
पांसकुड़ा—	हाई स्कूल	१०	६

यहां कंसावती नदीका पुल है। यातायातकी व्यवस्था बना रखी है। खड़गपुर वाले भाइयोंने दर्शन किये।

कोलाघाट—	बाजार	१०	७

यहां मुनिवर श्री श्रीचन्दजी बोथराकी मेडी पर उतरे। यहां दिगम्बर एवं वैष्णव समाजके अनेक घर है।

ओसवाल सज्जनोंके नामः—

सेठ श्रीचन्दजी हुलासचन्दजी बोथरा

,, डालचन्दजी बोथरा

,, प्रतापमलजी वैद

बागनान—	स्टेशन	७	८

मुनिवर ब्रिज इंसपेक्टर श्री किशोर बाबूके प्रबन्धसे रूपनारायण नदीको विशाल रेल्वे पुल उतर कर यहां पहुंचे।

उलूबेडिया—	कालीवाड़ी	९	८

रात्रि निवास किया। गंगा नदी (हुगली) के यातायातके कारण गांव बडा है। निकट ही वजवजमें वर्मा सेलका कारखाना है।

ग्राम—	स्थान—	मील—	तारीख
नलपुर—	स्टेशन	९	९
सांकरेल—	स्टेशन	३	९
हावड़ा—	सत्यनारायण धर्मशाला	१०	१०
कलकत्ता--	जैन उपाश्रय, २७ पोलक स्ट्रीट	२	११

सुस्वागतके साथ शहरमें पदार्पण किया।

परिशिष्ट : २ :

पंजाब-विहार

[वंग विहार पुस्तकमें पंजाब और सौराष्ट्र-विहारका वर्णन देना यद्यपि अप्रासंगिक है परन्तु प्रस्तुत ग्रन्थमें उत्तरी भारत का एक प्रकारसे इतिवृत्तात्मक वर्णन है अतः पंजाब व सौराष्ट्र जैसे मुख्य प्रान्तोंका वर्णन न होना, एक कमी ही होगी अतः पं० मुनिश्री हीरालालजी म० सा० द्वारा किये गये पंजाब व सौराष्ट्र-विहारका संक्षिप्त वर्णन इस परिशिष्टमें दिया जा रहा है जिससे नवागत मुनिवरोंका पथ-प्रदर्शन हो सके। अपरिचित क्षेत्रोंमें विहार करना अत्यन्त कठिन कार्य है। मारवाड़ी—राजस्थानी मुनियोंका इन प्रान्तोंमें बहुत कम विहार होता है अतः स्थल २ पर कठिनाइयाँ व परिषह आते ही है। मालवा, मेवाड़, राजस्थान व मध्यप्रदेश आदिके प्रत्येक मार्ग व गांवसे राजस्थानी जैन मुनि परिचित ही है अतः इन प्रान्तोंमें मुनिवरों द्वारा किये गये धर्म-कार्योंका वर्णन इसमें नहीं दिया गया है। अपरिचित क्षेत्रोंमें किये गये धर्म-प्रचारके आधार पर ही परिचित क्षेत्रोंमें किये जानेवाले धर्म-प्रचारका अनुमान किया जा सकता है।]

वि० संवत् १९९४ में आचार्य श्री खूबचन्दजी म० के साथ मुनि श्री का चातुर्मास देहलीमें हुआ था। देहली भारतकी राजधानी है अतः देश-विदेशके प्रमुख व्यक्तियोंका आवागमन बना ही रहता है। मुनिवरोंके सम्पर्कमें अनेक व्यक्ति आये और अनेक धर्म-कार्य सम्पन्न हुए।

चातुर्मास समाप्त हो गया था। विहार किधर, करना यह प्रश्न था। सलाहकार पं० मुनिश्री केशरीमलजी म० सा० का भी देहली चातुर्मास था। वे राजस्थानकी ओर लौटना चाहते थे और मुनि श्री अपरिचित क्षेत्रमें। मुनिश्री ने पूज्य श्री से पंजाब-विहारकी आज्ञा मांगी। पूज्य श्री खूबचन्द्रजी म० सा० ने सहर्ष आज्ञा प्रदान की।

मिगसर शुक्ला ११, सोमवारको देहलीसे विहार कर पं० मुनि श्री केसरीमलजी म० ठाणा ८ के साथ विहार किया। देहली संघके प्रमुख व्यक्ति तथा सैकड़ों स्त्री-पुरुष विहारमें साथ थे। चार मील विहारके पश्चात् लाला फूलचंदजी चोरड़ियाके बागमें रात्रि-निवास किया।

देहलीसे रोहतक—४५ मील

ग्राम—	मील—
मुण्डका	८
बहादुरगढ़	६
भाकोदा	४

सायलामंडी	८
रोहतक	१५

रोहतक - यह पंजाबकका एक प्रमुख जीला है। यहाँ जैनियोंके ३० व अग्रवालोंके ५० घर है। यहा मुनिवरोंके आगमनसे खूब धर्म-जागृति हुई। तीन सार्वजनिक प्रवचन हुए। रात्रि-भोजन, मद्य-निषेध, विदेशी वस्त्र आदि पर प्रभावशाली व्याख्यान हुए, परिणामस्वरूप अनेकों व्यक्तियोंने रात्रि-भोजन, मद्य त्याग व विदेशी वस्त्रका परित्याग किया तथा अनेकोंने नियम लिये।

यहींसे पं० मुनिश्री हीरालालजी, नानकरामजी व दीपचंदजी म० ने पजाबकी ओर विहार किया। विहार करते हुए आपने खौंचा व उससे निर्मित होनेवाली मिठाइयोंको पूज्य श्री खूबचंदजी म० सा० के दर्शन तक न खानेकी प्रतिज्ञा की।

रोहतकसे जीन्द—३२ मील

ग्राम—	मील—
सामटी भोपालगढ़	५
खरैटी	५
जुलाहामंडी	८
जीन्द	१४

जीन्द --यह पंजाबकी एक देशी रियासत थी। सम्प्रति इसका विलय हो गया है और पंजाबकी विविध देशी रियासतों की एक इकाई पेप्सु राज्यके नामसे हो गई है। उस समय

जीन्द् एक अलग राज्य था। यहाँ जैनियोंकी अच्छी वस्ती है तथा अपनी जैन-सभा भी है। यहाँ तपस्वी मुनिश्री निहालचदजी म० सा०, कस्तूरचन्दजी आदि ठाणा ५ से मिलना हुआ। सब एक स्थान पर ठहरे। वहुत मधुर व प्रेमपूर्ण समागम रहा। विविध विषयों पर ८ सार्वजनिक प्रवचन हुए तथा जनताने उनका खूब स्वागत किया।

जीन्दसे लुधियाना—८४ मील

ग्राम—	मील-
जाखोदा मंडी	७
मूणक	५
नंगला	६
छाजली	४
सनाम	६
संगरूर	८
धुरी	६
मालेरकोटला	११
अहमदगढ मंडी	११
गिल्लापिण्ड	१२
लुधियाना	५

जीन्दसे लुधियानाके इस लम्बे विहारमे पंजाबमें विहार करनेवाले पूज्य श्री काशीरामजी म० सा० के सम्प्रदायके अनेक मुनिवरोंसे मिलना हुआ तथा काफी प्रेमपूर्ण संबंध रहा। अनेक

मुनिवर दूर तक पहुंचाने भी आये थे। मूणकमें मुनिश्री गणेशीलालजी व वनवारीलोलजी म० ठाणा ६, मालेरकोटलामें नारायणदासजी म० ठाणा ६, अहमदगढमें छोटेलालजी म० आदिसे मिलना हुआ। मार्गवर्ती ग्राम-नगरोंमें काफी धर्म-प्रचार हुआ। अनेक जैनेतरोंमें मांस-मदिराका परित्याग किया।

लुधियाना —यह पंजावका प्रमुख कुटीरोद्योगका नगर है। यहां जैनोंकी अच्छी वस्ती हैं तथा जो समृद्ध व सुखी हैं। यहां वावा जयरामदासजी म० और उपाध्याय आत्मारामजी म० सा० (वर्तमानमें श्रमण संघीय आचार्य पूज्य श्री आत्मारामजी म० सा०) विराजते थे। मुनिगण उन्हींके पास जैन सभामें ठहरे, जो पुरानी कोतवालीके नामसे प्रसिद्ध है। यहां मुनिश्री के छ' प्रवचन हुए। यहां जालंधर और जगरावां संघके प्रमुख व्यक्ति सघकी ओरसे विनति करने आये। मुनिवरोंने दोनों संघोंको जालंधर व जगरावां आनेकी स्वीकृति प्रदान की।

लुधियानासे जालंधर—३७ मील

ग्राम—	मील--
फ्लोर	९
फगवाड़ा	१४
जालंधर छावनी	१०
जालंधर शहर	४

मार्गमें फगवाडा व जालंधर छावनीमें तीन २ व्याख्यान हुए।'

जालंधर—मुनिवरोंके आगमनके संवादसे स्थानीय संघ अत्यन्त प्रसन्न था। स्वागतके लिये स्त्री पुरुष बहुत दूर तक सम्मुख आये थे। जालंधरमें उस समय प्रवर्तनीजी श्री पार्वतीजी म० ठाणा ८ से विराजित थी। आगमनके साथ ही मुनिश्री उन्हें दर्शन देने गये। सतीजीने आदर-सत्कार करते हुए सुख-शाता पूछी व अनेक तात्त्विक विषयोंपर वार्तालाप हुआ। लाला दौलतरामजी व भूमरमलजी उपस्थित थे। मुनिगण चार दिन विराजमान रहे। चार सार्वजनिक प्रवचन हुए।

यहांसे मुनिवरोंने पुनः लुधियाना विहार किया।

लुधियानासे जगरावां—२७ मील

ग्राम—	मील
गुजरखान	११
ताजपुर	८
रायकोट	४
बशी	४
रूमी	५
जगरावां	५

जगरावां—यहां तपस्वी रूपचंदजी म० की दीक्षा शताब्दी का भव्य आयोजन था। उसमें सम्मिलित होनेके लिये करीब पांच हजार स्त्री-पुरुष आये थे। चारों संघ विद्यमान थे। मुनि-वरोंका साधु-जीवन और जैनधर्म पर बहुत प्रभावशाली व्याख्यान हुआ।

जगरावांसे लाहोर—९५ मील

ग्राम—	मील—
अजीतवाल	८
मेणा	५
मोगामंडी	६
चूड़चक	६
जीरा	६
मेरसिंग वाडा	४
मट्टाणा	६
फिरोजपुर	७
कसूर	६
लुलवानी	१०
काना	८
अमरसिंध्र	८
अच्छरा	८
लाहोर	४

लाहोर—पंजाबकी राजधानी होनेसे यहां पंजाबका सार्वभौमिक रूप देखनेको मिला।

फैशनपरस्त होते हुए भी यहांकी जनतामें धर्म-जागृति खूब है। जैन सभा आदि सब कुछ है। यहां मुनिवरोंका अल्पकाल तक ही विराजना रहा परन्तु इस अल्पकालमें भी काफी धर्म-

जागृति हुई। विविध विषयों पर आठ व्याख्यान हुए। सिक्ख व मुसलमान व्याख्यानमे उपस्थित होते थे।

लाहोरसे गुजरानवाला—४४ मील

ग्राम	मील—
सरदारकी बावली	७
मुरीद	१०
खोरी	५
साधोकी	३
कामोकी	६
चन्द का कीला	६
गुजरानवाला	४

गुजरानवाला– सम्प्रति यह पाकिस्तान में है। विभाजनके पूर्व यहां जैनियोंकी अच्छी वस्ती थी। सर्व सम्प्रदायोंके घर थे। अनेक धर्म-संस्थायें थी। मुनिवरोंके आगमनसे यहांका श्रीसंघ बहुत प्रसन्न एवं हर्षित था। चन्द का कीला तक अनेक भाई-बहिन स्वागतार्थ आये थे। चार व्याख्यान हुए। खूब धर्म-प्रभावना हुई। यही जम्मू (काश्मीर) श्री संघके २१ अग्रगण्य श्रावक चातुर्मासकी विनतीके लिये आये। उनका अत्यन्त आग्रह तथा धर्म-प्रचारका अच्छा क्षेत्र समझ कर मुनिवरोंने चातुर्मास का आश्वासन दिया तथा पूज्य श्री से स्वीकृति मंगवानेके लिये कहा। मुनि श्री यहांसे विहार कर वजीराबाद पहुंचे ही थे कि

पन्द्रह दिन विराजना रहा। प्रतिदिन व्याख्यान होते थे। स्यालकोटमें गोकुलचन्दजी म० सा० ठाणो ५ से विराजित थे। मुनिगण उन्हींके समीप ठहरे थे। स्यालकोटमें बहुत धर्म-ध्यान हुआ तथा अनेकों व्यक्तियोंने अनेक व्रतोपनियम लिये।

जम्मू चातुर्मास

जम्मू—यह काश्मीरका मुख्य जीला है। पंजाबकी सीमापर होनेसे व्यापारका केन्द्र है। अतः यहाँके निवासी काश्मीरके अन्य हिस्सोंकी अपेक्षा सुखी व समृद्ध हैं। मुनिवरोंके आगमन के समाचारसे स्थानीय जैन समाजमें एक हर्षकी लहर सी दौड गई। जनता बहुत दूर तक स्वागतार्थ आई।

मुनिवरोंके चातुर्माससे यहाँ धर्म ध्यानका ज्वार सा आ गया। त्याग व तपकी अग्नि प्रज्वलित हो उठी। घर २ में बच्चे और बुढ़े, युवक व प्रौढ, सब स्वेच्छासे तप करने लगे। मुनियों द्वारा की गई तपस्याओंने इस तपाग्निको प्रज्वलित करनेमें वायुका ही कार्य किया। भजनानन्दी मुनि श्री नानकरामजीने १३ तेले व १२ बेले किये। सेवाभावी मुनि श्री दीपचंदजीने एक साथ १५ दिनकी तपस्या की। प्रतिदिनके प्रवचनोंमें जैन व जैनेतर आशासे अधिक संख्यामें एकत्रित होते थे। सैकड़ोंने मांस व मदिराका त्याग किया। सैकड़ोंने अनेक दूसरी बुराइयों से बचनेके सौगन्ध लिये।

पर्यूषण पर्वके अवसर पर अनेक सार्वजनिक कार्य हुए।

स्वर्गीय पूज्य मुनिश्री मन्नालालजी म० के उपदेशसे पूर्व संवत् १९९८ में एक जीव-दयाका पट्टा हुआ था; वह कई कारणोंसे बन्द हो गया था। मुनिश्री के सदुपदेशसे वह कार्य पुनः प्रारंभ हुआ और परिणाम स्वरूप अनेक जीवोंको अभयदान प्राप्त हुआ। संवत्सरीके पुण्य दिवस पर प्रायः सारा व्यापार बन्द रहा। कसाइयोंने भी अपनी दुकानें बन्द रखी।

कार्तिक शुक्ला प्रतिपदाके दिन जम्मूकी विविध सार्वजनिक संस्थाओंकी ओरसे एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमें मुनिश्री का ओजस्वी प्रवचन हुआ। आपके प्रवचनका मुख्य विषय था जीव-दया। उपस्थित जनता पर आपके भाषणका इतना प्रभाव पड़ा कि तत्क्षण जीवदया-मंडल नामक एक संस्थाकी स्थापना की गई। अनेक व्यक्तियोंने चंदा दिया तथा इसके सक्रिय सदस्य बने। जीवदया-फंडसे महावीर जैन औषधालय खोला गया जो अभी भी पीड़ितोंकी सेवा कर रहा है।

चातुर्मासके इस संक्षिप्त कालमें जम्मू एवं काश्मीर राज्यके प्रमुख राज्यकर्मचारी, सेनापति, मंत्री आदि मुनिवरोंके सम्पर्कमें आये और दर्शन कर अपनेको कृतकृत्य समझा।

चातुर्मासके उपलक्षमें स्थानीय संघने प्रतिदिन आयंबिल करनेका निश्चय किया। यह पद्धति आज भी सुचारु रूपसे चालू है।

जम्मूका यह चातुर्मास ऐतिहासिक था। आज भी जम्मूकी जनता इस चातुर्मासको सम्मानके साथ स्मरण करती है।

मृगसिर कृष्णा १ को मुनिवरोंने आकुलित जनताको धर्म-संदेश देते हुए तथा धर्मनिष्ठ बने रहनेकी प्रेरणा करते हुए रावलपिण्डीकी ओर विहार किया।

जम्मूसे रावलपिण्डी—१७८ मील

ग्राम—	मील—
नवानगर	१३
स्यालकोट	१३
जामकी	११
वजीराबाद	१६
गुजरात	६
लालामूसा	११
खारिया	१०
जेलम	११
रोंतास	८
म्यूचूड़	६
सुहावा	१०
गुज्जरखान	११
काजिया	१४
कल्लर	६
भट्टा का मोड़	६
कोठा	८
रावलपिण्डी	६

जम्मूसे रावलपिण्डी तक इस लम्बे मार्गमें मुनिवरोंके सम्पर्कमें सहस्रों व्यक्ति आये तथा आपके प्रेरणादायी प्रवचनोंसे प्रभावित हुए। लालकोटमें आप ग्यारह दिन विराजे। प्रतिदिन सार्वजनिक प्रवचन होते थे। जेलम, रोतास आदि ग्रामोंमें भी मुनियोंका विराजना रहा तथा प्रतिदिन व्याख्यान हुए।

रावलपिण्डी—यह पंजाबका प्रमुख नगर था। सम्प्रति यह पाकिस्तानमें है। पंजाबके श्रीसंघों में रावलपिण्डीका श्रीसंघ सर्वाधिक सुखी व सम्पन्न था। श्रीसंघ द्वारा अनेक सार्वजनिक संस्थायें चलती थीं महावीर जैन हाईस्कूल, कन्या हाईस्कूल, गौशाला, पुस्तकालय जैनमण्डल, जीवदया मंडल और सार्वजनिक औषधालय आदि। विभाजनसे आज वहांके निवासी अस्तव्यस्त हो गये हैं। उनका समस्त वैभव वहीं रह गया तथा खाली हाथ यहां अपना काम कर रहे है।

मुनिवर यहां २८ दिवस तक विराजित रहे। आपके पधारनेसे यहा तपस्यायें हुई तथा अनेक जनहितकारी कार्य हुए।

रावलपिण्डीसे लाहोर

खात, बांठा, गुजरखान, बकराला, म्यूचूड, दिना, जेलम, लालामूसा, गुजरात, कुंजा वजीराबाद, हीजरीकोट, धरघड़, गुजरानवाला, चन्द का कीला, कानो, सादो और मुड़ीद होते हुए मुनिगण पुनः लाहोर पधारे। इस लम्बे विहारमें मुनिश्रीके सम्पर्कमें अनेक जैन-जैनेतर व्यक्ति आये। गुजरखानमें आपके

साथ सृष्टि कर्तृत्वके सबंधमें बहुत सुन्दर चर्चा रही। जैनधर्म ईश्वरको सृष्टिका कर्ता नहीं मानता है, यह बात सुनकर अनेक जिज्ञासुओंको आश्चर्य हुआ, अनेक लोगोंने समझा कि जैन-धर्म तो नास्तिकोंका धर्म है, क्योंकि वह ईश्वरको इस दुनिया का बनाने वाला नही मानता है। मुनिश्री ने तर्क एवं उदाहरणों के साथ उपस्थित जनताको समझाया। परिणामस्वरूप लोगों के हृदयोंमें जैनधर्मके प्रति अटूट विश्वास हुआ और कर्मवादके संबंधमें उनकी मान्यता दृढ़ हुई। हीजरीकोट जाते हुए मुनियों को मार्गमें शिकारार्थ जाता हुआ एक मुसलमान बंधु मिला। उसके साथ एक विकराल शिकारी कुत्ता भी था। मुनिवरोंकी विचित्र वेशभूषा देखकर उसे कुतूहल हुआ। उसने उनका परि-चय जानना चाहा। परिचयके पश्चात् मुनिश्रीने उसको उपदेश दिया। परिणामस्वरूप उसने मास नही खाने तथा शिकार नहीं करनेकी प्रतिज्ञायें ली तथा पैरो पर नतमस्तक होकर तोबा-तोबा किया। गुजरानवाला आदि तो परिचित क्षेत्र थे ही। मुनियोंके आगमनसे जनताको अधिकाधिक धर्मध्यानका अवसर प्राप्त हुआ।

लाहोरमें मुनिगण सात दिन तक विराजे। इस अल्पनिवास कालमे लाहोरके प्रमुख व्यक्ति आपके सम्पर्कमें आये। मुनिवरोंने अमर जैन होस्टलका निरीक्षण किया। लाहोर श्रीसंघने चातुर्मास के लिये अत्यन्त भावभरी विनती की।

लाहोरसे अमृतसर—३२ मील

ग्राम -	मील—
रामपुरा	११
अटा	७
खासा	६
अमृतसर	८

अमृतसर—मुनियोंके आगमनके समाचारसे अनेक स्त्री-पुरुष स्वागतार्थ उपस्थित थे। जैन सभा भवनमें तपस्वी ईश्वर-दासजी म० ठाणा ५ विराजित थे। मुनिगण वही पधारे। पड़ोसके मकानमें विराजना रहा। चैत्र शुक्ला १३ को श्रावकों के आग्रहसे सोहनलाल जैन पाठशालामें भगवान महावीरके जीवन पर प्रभावशाली व्याख्यान हुआ। जैनसभामें आठ व्याख्यान हुए। अमृतसरका यह अल्प विहार काल काफी आनन्दमय रहा।

अमृतसरसे अम्बाला—१८५ मील

ग्राम—	मील—
दुभूरजी	५
झंडियाला	६
रवात	१२
कपूरथला	१५
जालंधर	११

ग्राम -	मील—
झंडुसिगा	६
श्याम चौरासी	६
होशियारपुर	१०
जेज्जु	१६
गढशंकर	७
घुमाई	६
बलाचोर	६
रोपड़	१३
कराली	१०
खरड़	८
मणि मांजरा	११
पंचकूला गुरुकुल	२
डेरावासी	६
बनूड़	६
अम्बाला शहर	११

इस लम्बे विहारमें झंडियाला, जालंधर, होंशियारपुर, रोपड़, पंचकूला गुरुकुल, बनूड आदि प्रमुख ग्राम-नगरोमें मुनिवरोंका कहीं दो दिवस, कही पांच दिवस और कही ८ दिवस तक विराजना रहा। सर्वत्र प्रतिदिन व्याख्यान होते रहे। गुरुकुल पंचकूलाके विद्यार्थियों तथा अध्यापकोंने खूब सेवा-भक्तिका लाभ लिया। विविध तात्त्विक विषयों पर वार्तालाप हुआ।

अम्बाला चातुर्मास

चातुर्मासके दिवस निकट थे। अपने ही घरके प्रांगणमें आई हुई गंगा फिर दूसरी जगह जाकर बहे, यह बात अम्बाला नगर के श्रावकोंको स्वीकृत न थी। उन्होंने पूज्य श्री खूबचंदजी म० के पास चातुर्मासकी स्वीकृतिके लिये निवेदन किया। आचार्य श्री ने महती कृपा कर चातुर्मासकी आज्ञा प्रदान की। चातुर्मास की आज्ञा आते ही अम्बालाका स्थानकवासी जैन श्रीसंघ प्रसन्नतासे विभोर हो उठा। जम्मू चातुर्मासकी तरह ही यहां भी धर्मध्यानका ठाठ लगा रहता था। पर्यूषण पर्वमेंव्याख्यान समाप्तिके पूर्व दुकानें न खोलनेका श्रावकोंने निश्चय किया था। दर्शनार्थ बाहरसे हजारों व्यक्ति आये थे। अम्बाला संघने सबों का योग्य सत्कार किया।

अत्यन्त आनन्द, उत्साह व धर्मध्यानके साथ यह चातुर्मास समाप्त हुआ। तप-त्यागके साथ अनेक सार्वजनिक कार्योंमें लोगोंने चंदा दिया।

अम्बालासे पटियाला नाभा कंथल होते हुये देहली—२०० मील

ग्राम—	मील—
राजपुरा	१३
बहादुरगढ	११

ग्राम—	मील—
पटियाला	५
घमाणो	६
नाभा	५
बलूची	१२
समाणा	६
ज़ुलों	११
सीवण	४
कैंथल	६
पुण्डरी	१०
बसंतली	११
काछवा	११
करनाल	७
कटेल	६
बरसत	७
राजाखेड़ी	७
देहरा	६
पीपलखेड़ा	७
खेखड़ा	१०
सोनीपत	८
पुण्डरी	१२
सब्जीमंडी (देहली)	१५

अम्बालासे देहली तकके इस विहारमें पटियाला, नाभा और समाणा आदि प्रमुख स्थानों पर विराजना रहा। समाणाके श्रावकोंने तो अत्यन्त भक्ति प्रदर्शित की। नाभामें श्री रामस्वरूपजी म०, अमरचंदजी म०, ज्ञानचंदजी म०, विमलचंदजी म०, प्रचार मंत्री प्रेमचंदजी म०, बनवारीलालजी म०, मगतरामजी म०, शान्तिलालजी म० आदि ठाणा ८ से मिलना हुआ। एक साथ ही विराजे। देहाती जनता भी मुनिवरोंके सम्पर्कमें आई। मुनिवरोंके उपदेशसे लोगोंने अनेक बुराइयोंका परित्याग किया।

उपसंहार

पंजाब विहारका यह संक्षिप्त विहंगावलोकन है। दो वर्षके अल्पकालमें पंजाब जैसे विशाल प्रान्तका पैदल विहार करते हुए दौरा कर लेना कठिन कार्य है। प्रस्तुत वर्णनमें तो मुख्य २ स्थानों व विहारवर्ती ग्राम-नगरोंका ही नाम निर्देश किया गया है, अन्यथा पुस्तकका कलेवर अधिक बढ जाता। मुनियोंको सर्वत्र योग्य स्थान नहीं मिलते। इस विहारमें मुनियोंको कुछ स्थानों पर वृक्षोंके नीचे ही रात्रियां व्यतीत करनी पडी हैं। कहीं अशिष्ट व्यक्तियोंसे भी पाला पड़ा है, जिन्होंने मुनियोंके साथ अत्यन्त दुर्व्यवहार किया था। क्रोध और प्रतिक्रियाकी बिना भावनाके ही मुनिगण सर्व परिषहोंको सहन करते गये। इसी कष्टसहिष्णुता और क्षमा गुणने पंजाबका यह विहार सफल बनाया।

द्वितीय पंजाब-यात्रा

मुनिश्री की द्वितीय पंजाब यात्रा ऐसे समयमें हुई जब कि श्रमणसंघ (संघ ऐक्य) की योजना चल रही थी। कुछ सम्प्रदायों का विलय भी हो गया था और एक लघु श्रमणसंघका निर्माण हो चुका था। समाज उस दिवसकी प्रतीक्षामें था, जिस दिन सर्व सम्प्रदायोंके रूपमें बिखरे हुए सुमन एक मालाके रूपमें गुथे जाकर समाजके गलहार हो सकें। मुनिश्री की इस बार पंजाब यात्रा विशेष प्रयोजनसे हुई वयोवृद्ध महासति श्री चंदाजीको दर्शन देने तथा संघ ऐक्यकी योजना पूज्य श्री आत्मारामजी म० के सामने प्रस्तुत करने। आप अपने प्रयोजनमें सफल भी हुए। आपने पंजाबकी सर्व सम्प्रदायोंके मुनिवरोंको वास्तविक स्थितिसे परिचित किया तथा श्रमणसंघमें मिल जानेके लिये बलवती प्रेरणा की। परिणामस्वरूप अनेक मुनियोंकी भ्रान्ति दूर हुई।

नई देहलीसे अम्बाला

ग्राम—	मील—
दरियागंज	२
शाहदरा	५

ग्राम—	मील
खोमी	५
खेकडा	८
टीरी	६
बडौत मंडी) बडौत)	१०
बिनोली	६
बामनोली	६
बिराल	६
एलम	६
कांधला	३
गंजेस	३
तितरवाडा	३
जमालपुर	७
राजाखेडी	७
बरसत	८
घरोडा	५
करनाल	११
काछवा	७
तरावड़ी	६
अमीन	७
थानेश्वर	७

ग्राम—	मील—
खातपुर	६
शाहबाद	७
मोडी	६
अम्बाला छावनी	६
अम्बाला शहर	६

देहलीसे अम्बाला तकके इस नवीन लंबे मार्गमें बहुत धर्मोपकार हुआ। प्रत्येक ग्राममें प्रायः मुनिश्री के ओजस्वो प्रवचन हुए। पंजाबी जनता प्रवचनोंमें अच्छी संख्यामे उपस्थित होती थी। बडौतमे मुनिश्री के दो व्याख्यान हुए। आपके व्याख्यानोंसे प्रभावित होकर स्थानीय श्रावकोंने "जय अरिहिहंताणं" की प्रार्थना सामूहिक रूपसे प्रतिदिन उपाश्रयमें करने का निश्चय किया। आपके विहारके बाद भी एक वर्ष तक इस नियमका पूर्ण रूपसे पालन किया गया। कांधलामें दो प्रवचन हुए। एक व्याख्यान स्थानीय राष्ट्रीय विद्यालयमें हुआ। इस विद्यालयमें ५०० शिक्षणार्थी अध्ययन करते है। व्याख्यानका प्रभाव बहुत अच्छा रहा। थानेश्वर जिसे कुरुक्षेत्र भी कहते हैं, यहां मुनिश्री के दो सार्वजनिक प्रवचन हुए। प्रवचनमे राज्य कर्मचारी तथा नगरके सर्व संभ्रान्त व्यक्ति उपस्थित होते थे। थानेश्वर एक ऐतिहासिक स्थान है। भारत-यात्रा पर आनेवाला प्रत्येक यात्री यहां एक बार अवश्य ही आता है।

अम्बाला मुनिश्री के आगमनने स्थानीय समाजमें नव

चेतनाका संचार किया। आसपासके ग्रामोंके श्रावक भी दर्शनार्थ आने लगे। अम्बालामें मुनिवर्यके पांच व्याख्यान हुए जिनमें दो सार्वजनिक प्रवचन थे। यहांकी प्रमुख शिक्षण संस्थाओंमें भी मुनिश्री के प्रवचन हुए। यहां कविश्री हरखचंदजी म० ठाणो ३ से मिलना हुआ।

मुनिश्री जहां भी गये, वहां अपना पंजाब आनेका लक्ष्य नहीं भूले। सर्वत्र आपने संघ-ऐक्यकी अपील की तथा योजनाको सफलीभूत करनेकी प्रेरणा की। मार्गमें जितने भी मुनिगण मिले, उनसे भी यही बात कही।

अम्बालासे लुधियाना ६५॥ मील

ग्राम --	मील—
शंभू	६
राजपुरा	६
सरायवजारा	६
शहीदपुर	६
गोविन्दगढ	३॥
खन्ना	५॥
विजा	७
सानेवाल	३॥
ठठारीकला	४
लुधियाना	३

अम्बालासे लुधियानाके विहारमें खन्नामें युवाचार्य श्री

शुक्लचन्द्जी म० ठा० ६ से मिलना हुआ। एक ही स्थान पर ठहरना हुआ था। आपसे भी श्रमणसंघमें सम्मिलित होनेके लिये बातचीत हुई। मुनिश्री छगनलालजी म० ठाणा २ से मिलना हुआ।

लुधियाना—जिस कार्यके लिये पंजाब आना हुआ था, उसका केन्द्रबिन्दु लुधियाना ही था। लुधियाना पहुँच कर मुनिश्री को आत्म संतोष हुआ। मस्तिष्कमें जो विविध विचार प्रश्न बन रहे थे उनका वहाँ पूर्ण समाधान हो गया। यहाँ पूज्य श्री आत्मारामजी म० व पं० मुनिश्री हेमचंद्जी म० ठाणा २१ से तथा महासती श्री चंदाजी व लज्जावती म० ठा० ६ से विराजमान थीं। मुनिश्री का पूज्य श्री आत्मारामजी म० सा० के समीप ही विराजना रहा। श्रमण-संघ तथा उसके निर्माणके संबंधमें पूज्य श्री से पं० मदनलालजी म०, श्री हेमचंद्जी म० और श्रीज्ञानचंद्जी म० की उपस्थितिमें अन्तरंग रूपसे वार्तालाप हुआ। मुनिश्रीने आचार्य श्री के सम्मुख श्रमण-संघकी पूर्व भूमिका और वर्तमान वातावरण प्रस्तुत किया। वार्तालाप खूब प्रेमपूर्ण रहा तथा इससे अनेक बातोंका समाधान हो गया। पं० मदनलालजी म० भी वस्तुस्थिति स्पष्ट हो जानेसे अत्यन्त प्रसन्न थे। उन्होंने मुनिश्री से देहलीमें मिलनेके लिये कहा।

मुनिश्री का सतीजी श्री चंदाजीके अनुरोधसे १ महीना तक आचार्य श्री के निकट रहना हुआ, क्योंकि आप उनकी वृद्धावस्थाके कारण उन्हें दर्शन देने पधारे थे। लुधियानामें पंजाबके

मुख्य मंत्री लाला भीनसेन सच्चरने आचार्य श्री व मुनिश्री के दो बार दर्शन किये। एक मासके स्थिरवासके पश्चात मुनिश्री ने पुनः लुधियानासे देहलीकी ओर विहार किया। इस बार आप मेरठ, मोदीनगर गाजियाबाद होते हुए देहली पधारे।

लुधियाना से देहली २५४ मील

ग्राम—	मील—
सानेवाल	११
दोहरायामेडा	५
खन्ना	१२
गोविन्दगढ	५॥
शहीद्पुर	१०
राजपुर	१२
शंभू	६।
अम्बालो शहर	७
अम्बाला केन्ट	७
खूडा	३
मलाना	१०
साढोरा	१३
विलासपुर	८
जगाधरी	६
माटा टाउन	२

ग्राम —	मील —
जमना नगर	१॥
सरसावा	१०
सहारनपुर	१०
नागल	१०
देवबंद	१०
रोहणाकलां	७
मुजफ्फरनगर	८
मंसुरपुर	८॥
खतोली	६
दौराला	११
मेरठ	१०
मोदीनगर	१४
मुरादनगर	५
गाजियाबाद	१०
शहादरा	८
देहली	४

लुधियानासे देहलीके इस दीर्घ विहारमें मुनिवरोंका अनेकों स्थानों पर जनताने अत्यन्त भावभरा स्वागत किया। साढोरामें मध्यभारतके शिक्षा सचिव तथा सुप्रसिद्ध विद्वान डा० बूलचन्द्र ने खूब सेवा की। एक जाहिर प्रवचन हुआ जिसमें जैन-जैनेतर तथा राज्य कर्मचारियोंने भाग लिया। सहारनपुरमें दि० जैन

हाई स्कूलमें दो सार्वजनिक प्रवचन हुए। मेरठमें भी मुनिश्री का तीन दिनतक विराजना रहा।

देहली पहुंचकर मुनिश्री छः दिन विराजे। विविध सम्प्रदायोंके अनेक प्रतिष्ठित मुनि देहली पधारे हुए थे अतः वातावरण बहुत अच्छा था तथा संघ-ऐक्य हो; यह भावना सबमें बलवती थी। देहलीसे पंजाबी प्रतिनिधियोंके बिदा होनेपर मुनिश्री ने आगरेकी ओर विहार किया।

सौराष्ट्र-विहार

गुजरात और सौराष्ट्र प्रान्तमें विहार करनेकी मुनिश्री हीरालालजी म० सा० की बहुत दिनोंसे भावना थी। परन्तु अनुकूल अवसर नहीं मिलता था। संवत् २००२ में वह अवसर भी आया। पालनपुर श्रीसंघने विनती की और जैन दिवाकरजी म० ने पालनपुर चातुर्मासकी आज्ञा भी प्रदान कर दी। अतः वैशाख शुक्ला ६ गुरुवारको व्यावरसे आपने मुनिश्री लाभचंदजी म०, मुनिश्री दीपचंदजी व मुनिश्री राजमलजीके साथ पालनपुर चातुर्मासार्थ विहार किया। पालनपुर चातुर्मास ही सौराष्ट्र-विहारकी भूमिका बन गया।

सोजतरोड, मारवाड़ जंकशन, नाडोल, सादड़ी, शिवगंज, सिरोही, आबू माउन्ट, अमीरगढ, इकबालगढ आदि अनेक मार्गवर्ती ग्रामनगरोंमें धर्म-संदेश देते हुए सर्व मुनिगण पालनपुर पधारे। सेठ मणिभाई मेहताके बंगले पर तीन दिन विराजित रहे। प्रतिदिन व्याख्यान हुआ जिसमें सैकड़ों स्त्री-पुरुषोंने सुनने का लाभ लिया।

आषाढ़ शुक्ला ८ को चातुर्मासार्थ शहरमें पदार्पण किया। जीवनवाड़ीमें ठहरना हुआ

पालनपुर—यह पूर्व एक देशी रियासत थी। राजस्थानकी सीमापर स्थित होनेसे यहाँ राजस्थानी और गुजराती दोनों संस्कृतियोंका समन्वय है। राजस्थानमें प्रवाहित होनेवाली बनास नदी इस ओर होकर बही है अतः इस प्रान्तका नाम ही बनासकांठा है। एक रियासतकी राजधानी होनेके कारण पालनपुर शहर आधुनिक सर्व सुविधाओंसे युक्त है। यहाँ जैन समाजका काफी प्रभाव है तथा पर्याप्त धर्म-जागृति है।

मुनिवरोंके चातुर्माससे स्थानीय संघके हर्षका पार न था। खूब धर्म-ध्यान हुआ। अनेक अट्ठाइयाँ, आयंबिल व उपवास हुए। चातुर्मासके उपलक्षमें अनेक संस्थाओंको आर्थिक सहायता दी गई। आयंबिल व ज्ञान-खातेमें भी सैकड़ों रुपये व्यय किये गये।

अनेक उच्च अधिकारी नित्यप्रति व्याख्यानमें उपस्थित होते थे। विशेषोल्लेखनीय बात यह है कि उस समयके स्थानीय मजिस्ट्रेट श्री अकबर अलि खाँ नियमित रूपसे प्रतिदिन व्याख्यानमें उपस्थित होते थे।

इस प्रकार चातुर्मासके चारों मास खूब धर्मोद्योतके साथ व्यतीत हुए। मृगसर कृष्णा प्रतिपदाको आपने राजकोटकी ओर लक्ष्य कर विहार किया। कुछ दिनोंतक आप पालनपुर नगरके बाहर मानसरोवर रोड पर स्थित मेहता ईश्वरलाल मणिलालके बंगले पर विराजते रहे। यहां नित्यप्रति व्याख्यान होते थे, जिसमें नगरकी जनता भी अच्छी संख्यामें एकत्रित

होती थी। मार्गशीर्ष शुक्ला ३ को पालनपुर निवासिनी मणि-बाईका दीक्षासमारोह मुनिश्री के सानिध्यमें हुआ। जनता काफी संख्यामें उपस्थित थी। दीक्षोत्सव पर राजकवि रामदानने मुनिश्री हीरालालजी म० का गुणगान करते हुए अपनी भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित की। कवितासे प्रसन्न होकर श्रीसघने राज-कविको स्वर्णपदक प्रदान किया। इस प्रसंगपर अनेकों व्यक्तियों ने ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया।

संवत् २००२ के मार्गशीर्ष शुक्ला ५ को सर्व मुनिवर्गोंने अपने गन्तव्य मार्गकी ओर विहार किया। दुखित एवं व्यथित हृदयसे पालनपुरकी जनताने विदाई दी।

पालनपुरसे वीरमगांव ८१॥ मील

ग्राम—	मील --
जगाड़ा	४
छापी	६॥
धारेवाडा	४॥
सिद्धपुर	४
कामली स्टेशन	४
ऊँझा	५
डाऊ	६
महेसाणा	५
लीच स्टेशन	५
जोटाणा	५॥

ग्राम—	मील—
कटोसणरोड	६
दत्रोय	६
रामपुरा	५
वीरमगांव	१२

पालनपुरसे वीरमगांवके इस लंबे विहारमें सिद्धपुर, ऊँझा, महेसाणा आदि मुख्य नगर हैं जहां जैनियोंकी अच्छी वस्ती है। सिद्धपुरमें तो अनेक दर्शनीय स्थान हैं।

वीरमगांव यहां मुनिगण आठ कोटि स्थानकवासी उपाश्रयमें विराजित हुए। यहीं मुनि संतबालजीसे भी समागम हुआ। मुनिश्री के आगमनसे स्थानीय संघ अत्यन्त प्रसन्न हुआ। अनेकों प्रकारके त्यागप्रत्याख्यान हुए। नरनारियोंकी धर्मके प्रति आस्था अच्छी है।

वीरमगांवसे लिम्बड़ी—५६ मील

ग्राम—	मील—
वणी	६
लीलापुर रोड	१२
लखतर	७
वालारोड	८
सुरेन्द्रनगर	६
जोरावरनगर	१
वढ़वाण शहर	२

अंकेवालिया	१०
लिम्बड़ी	४

लखतर, सुरेन्द्रनगर, जोरावरनगर व वढवाण शहरमें क्रमशः २, ३; ४, ५ व्याख्यान हुए। सुरेन्द्र नगरमे रत्नचन्द्र ज्ञान-मन्दिर है जहांसे रत्नज्योत पत्र निकलता है। बोर्डिंग आदि देखने योग्य है। जोरावर नगर व वढवाण शहरके संघोंकी भक्ति सराहनीय रही। वढवाणमें महासती झबकबाई ठाणा ६ से मिली।

लिम्बडी—स्थानकवासी सम्प्रदायमे लिम्बड़ीका महत्त्व-पूर्ण स्थान है। अतः लिम्बडीका पहुंच कर मुनिवरोंको अत्यन्त प्रसन्नता हुई। पू० गुलाबचंदजी म०ठाणा६, पू० त्रिभुवनजी म० ठाणा ३, पंडित मुनिश्री घासीलालजी म० ठाणा ६ ने व सैकड़ों स्त्रीपुरुषोंने मुनिवरोंका भावभीना स्वागत किया। पूज्य लाधाजी स्वामी पुस्तकालयमें ठहरना हुआ। यहां मुनिश्री के १३ व्याख्यान हुए। सर्व मुनियोंने खूब प्रेम प्रदर्शित किया। यहां अनेक जैन संस्थायें है। पंडित मुनिश्री घासीलालजी म० द्वारा शास्त्रोद्धारका कार्य चल रहा था। आचारांग सूत्रकी टीका समाप्त हो गई थी।

लिम्बड़ीसे राजकोट—१४२ मील

ग्राम—	मील—
बलदाणा	७
रामपुरा	१०

ग्राम —	मील—
सोयला	७
मूली	७
उमरड़ा	७
चोरविडा	३
थानागढ	१०
दलड़ी	६
वांकानेर	८
जड़ेश्वर वड़ा	७
लजाई	७
मोरवी	८
सोनाला	३
लजाई	५
टंकारा	५
मिताणा	७
वेड़ी	८
नेकनाम	५
वेडी	५
गवरीद	६
वेडी	४
राजकोट	४

लिम्वड़ीसे राजकोटके इस लम्वे विहारमें वहुत धर्मोद्योत

अंकेवालिया	१०
लिम्बड़ी	४

लखतर, सुरेन्द्रनगर, जोरावरनगर व वढवाण शहरमें क्रमशः २, ३; ४, ५ व्याख्यान हुए। सुरेन्द्र नगरमें रत्नचन्द्र ज्ञान-मन्दिर है जहांसे रत्नज्योत पत्र निकलता है। बोर्डिंग आदि देखने योग्य है। जोरावर नगर व वढवाण शहरके संघोंकी भक्ति सराहनीय रही। वढवाणमें महासती झबकबाई ठाणा ६ से मिली।

लिम्बड़ी—स्थानकवासी सम्प्रदायमे लिम्बड़ीका महत्त्व-पूर्ण स्थान है। अतः लिम्बडीका पहुंच कर मुनिवरोंको अत्यन्त प्रसन्नता हुई। पू० गुलाबचंदजी म०ठाणा६, पू० त्रिभुवनजी म० ठाणा ३, पंडित मुनिश्री घासीलालजी म० ठाणा ६ ने व सैकड़ों स्त्रीपुरुषोंने मुनिवरोंका भावभीना स्वागत किया। पूज्य लाधाजी स्वामी पुस्तकालयमें ठहरना हुआ। यहां मुनिश्री के १३ व्याख्यान हुए। सर्व मुनियोंने खूब प्रेम प्रदर्शित किया। यहां अनेक जैन संस्थायें है। पंडित मुनिश्री घासीलालजी म० द्वारा शास्त्रोद्धारका कार्य चल रहा था। आचारांग सूत्रकी टीका समाप्त हो गई थी।

लिम्बड़ीसे राजकोट—१४२ मील

ग्राम—	मील—
बलदाणा	७
रामपुरा	१०

ग्राम —	मील—
सोयला	७
मूली	७
उमरड़ा	७
चोरविडा	३
थानागढ	१०
दलड़ी	६
वांकानेर	८
जड़ेश्वर वड़ा	७
लजाई	७
मोरवी	८
सोनाला	३
लजाई	५
टंकारा	५
मिताणा	७
वेडी	८
नेकनाम	५
वेडी	५
गवरीद	६
वेड़ी	४
राजकोट	४

लिम्बड़ीसे राजकोटके इस लम्बे विहारमें बहुत धर्मोद्योत

हुआ। सायलामे आठकोटिके उपाश्रयमें जीवनजी म० व भगवान जी म० के साथ ठहरना हुआ। छ. कोटिके उपाश्रयमें कविवर्य नानचन्द्र म० के साथ तीन व्याख्यान हुए।· यहीं कानजी म० से भी मिलना हुआ। मूलीमें तीन, थानागढमें दो, वांकानेरमें ६, मोरवीमें वीस व्याख्यान हुए। वांकानेर नरेशने जड़ेश्वर वडामें दर्शन किये तथा अपनी श्रद्धांजली अर्पित की।

मोरवी—यह सौराष्ट्रकी प्रमुख रियासत थी। अव तो काठियावाड़की इन विविध रियासतोंका विलय हो गया है तथा एक सौराष्ट्र राज्यका निर्माण हो चुका है परन्तु स्वतंत्रता के पूर्व ये विविध रियासते अलग २ ईकाइयोंके रूपमें थी तथा प्रत्येक ईकाई एक २ सल्तनत थी। मोरवी श्रीसंघने मुनिवरोंका हार्दिक स्वागत किया। पदार्पणके साथ ही स्थानीय हाईस्कूल में युवराज महेन्द्र सिहजीकी प्रमुखतामें ता० १२-२-४६ को ॐ शान्तिकी प्रार्थना हुई। मनुष्य जिन कारणोंसे मनुष्यता प्राप्त करता है उनपर पूर्ण प्रकाश डाला गया। व्याख्यान काफी प्रभावशाली रहा तथा युवराज व सर्व उपस्थित जनसमुदाय पूर्ण प्रभावित हुआ। हमारा 'वर्तमान कर्त्तव्य' विषय पर एक सार्वजनिक प्रवचन हुआ। मुनिवरोंके आगमनसे धर्म-ध्यान भी खूब हुआ। ५०० आयंबिल हुए। विहारका दृश्य वहुत दर्शनीय था। टंकारामें दो व्याख्यान हुए। टंकारा दयानन्द सरस्वतीका जन्म स्थान है। नेकनाममें एक व्याख्यान हुआ। स्थानीय डाक्टर, प्रधानोध्यापक तथा राज्यकर्मचारी उपस्थित थे।

यहाँ सौराष्ट्रमें विहार करनेवाली महासतियोंसे मिलना हुआ। गघरीदमें दरवार लक्ष्मण सिंहजी प्रतिदिन दर्शनार्थ आते थे।

राजकोट सैकड़ों स्त्री-पुरुषोंने भावभरा स्वागत किया स्था० वड़े जैन सघके उपाश्रयमें ठहरना हुआ। व्याख्यानमें प्रतिदिन वहुसंख्यामें जनता उपस्थित होती थी। राजकोट सौराष्ट्रका प्रमुख नगर है तथा वर्तमानमें सौराष्ट्रकी राजधानी भी है। यहाँ स्थानीय संघ वहुत व्यवस्थित है तथा जैन समाज का काफी प्रभाव है। अनेक सार्वजनिक प्रवृत्तियाँ चलती हैं। जनता जागृत तथा सुशिक्षित है। संवत् २००२ चैत्र कृष्ण ५ वडी सादडी (मेवाड़) में साम्प्रदायिक सम्मेलन हुआ था जिसमें पूज्य, युवराज, उपाध्याय, प्रवर्तक, गणी व गणा-वच्छेदकके पद दिये गये थे। उक्त सम्मेलनमें मुनिश्री हीरालाल जी म० को प्रवर्त्तक पद प्रदान किया गया। यह समाचार जव राजकोट पहुँचा तो राजकोट श्रीसंघने वहुत हर्ष प्रकट किया तथा मुनिश्रीका अभिनन्दन किया। इस प्रकार मुनिगण यहां २५ दिवस विराजित रहे। आपके विराजनेसे वहुत धर्मोद्योत हुआ तथा तप-त्याग भी हुए।

यहीं मोरवीसे हीराचंद लक्ष्मीचंद कापड़ियाके जैनदर्शन संवंधी कुछ लिखित प्रश्न आये, जिनका लिखित प्रत्युत्तर दिया गया। उक्त प्रत्युत्तरोंसे वे मुनिश्री के शास्त्रीय ज्ञानसे वहुत प्रभावित हुए। यहां नीचे वे प्रश्न व उत्तर सर्वसाधारणके ज्ञान के लिये दिये जा रहे हैं।

प्रश्न—गणधरोंके नाम आगमसे कहें ?

उत्तर—१४५२ गणधर इस चौवीसी के हैं। उनके नाम आगमोंमें नहीं मिलते।

प्रश्न—शुक्ल पक्ष कबसे होता है ?

उत्तर—अनादि मिथ्यादृष्टिको जब प्रथम सम्यक्त्वका स्पर्श होता है।

प्रश्न—ऐसे कितने जीव है जो गृहस्थावासमें व साधु अवस्थामें बराबर वर्ष जीवित रहे ?

उत्तर—भगवान् महावीरके पांचवें गणधर सुधर्मास्वामीजी ५० वर्ष गृहस्थावासमें रहे और ५० वर्ष संयमका पालन किया।

प्रश्न—२७ वर्षका संयम किसने पाला ? आगमसे बतायें।

उत्तर अंतगडसूत्रमे सुपईठ गाथापति २७ वर्षका संयम पालन कर मोक्ष गये है, ऐसा वर्णन है।

प्रश्न—६ वर्ष पर्यन्त संयम-पालन कर मोक्ष जाने वालेका नाम बताओ ?

उत्तर—अंतगडसूत्रमें सुकाली आर्याजी ६ वर्षका संयम पालन कर मोक्ष गई है।

प्रश्न—कालिकसूत्र व उत्कालिक सूत्र क्यों कहना चाहिये ?

उत्तर—कालिक सूत्र गणधर महाराजके रचे जाते है। उत्कालिक सूत्र बहुसूत्री आचार्यों द्वारा रचित होते है। विशेष खुलासा नंदीसूत्रमें है।

प्रश्न—किस तीर्थंकर व गणधरका आयुष्य तुल्य था ?

उत्तर—महावीर तीर्थंकर और अचलभ्राता नामके गणधर का आयुष्य ७२ वर्षका था। समवायांग सूत्रमें कहा है।

प्रश्न—जिस गाथामें पहिले और पीछे 'सा' आवे वह गाथा बताइये।

उत्तर—उत्तराध्ययन सूत्रके चौदहवें अध्ययनकी ४६ वी गाथा है। वह गाथा इस प्रकार है—

सामिस कुललं दिस्स, बज्झमाणं निरामिसं।

आमिसं सव्वमुज्झित्ता, विरहिस्सामि निरामिसा ॥४६॥

प्रश्न—चौरासी लाख पूर्वका आयुष होना चाहिये और चौरासी लाख वर्षका संयम भी -इस व्यक्तिका नाम बताइये।

उत्तर—मल्लिनाथ तीर्थंकरका ७ मित्रोंके साथ पूर्व भवमें चौरासी लाख पूर्वका आयुष्य था और उन्होंने चौरासी लाख वर्षका संयम पाला था। ज्ञातासूत्रके आठवें अध्ययनमें कहा है।

प्रश्न—घटे घटे ने घटे क्या जीवों?

उत्तर—चार गतिका जीवों।

प्रश्न—वधे वधे ने वधे क्या जीवो?

उत्तर—सिद्ध जीव।

प्रश्न—वढ़े भी नहीं और घटे भी नहीं?

उत्तर—अभवी जीव।

प्रश्न—वढ़नेवाले भी और घटनेवाले भी।

उत्तर—गुणस्थान आश्रयी जीव।

प्रश्न—एक लाख वर्ष पूर्वके कितने वर्ष होते हैं?

उत्तर—७०५० सतर ऊपर पचासके ऊपर पन्द्रह शून्य लगानेसे उतने वर्ष होते हैं।

७०५,००००००००००००००० इतने वर्ष होते हैं।

प्रश्न—खारे समुद्र कितने हैं ?

उत्तर—मात्र एक लवण समुद्र है।

प्रश्न—समुद्‌घात की उदीरणा कब होती है ?

उत्तर—समुद्‌घात स्वयं उदीरणरूप है।

प्रश्न—वर्तमान कालके चौवीस तीर्थंकरोंने कौनसी तपस्या करके दीक्षा अंगीकार की ?

उत्तर—सुमतिनाथ ५ पांचवें तीर्थंकरने एकासन करके दीक्षा ली। वासुपूज्य बारहवे तीर्थंकरने उपवास करके दीक्षा ली। मल्लीनाथ उन्नीसवें और पार्श्वनाथ तेईसवे ने तेलेकी तपस्या करके दीक्षा ली। शेष सर्व तीर्थंकरोंने वेले वेलेकी तपस्या करके दीक्षा ली।

प्रश्न—महावीर स्वामीको आहार वहरा कर कितने जीवोंने संसार परित किया ? उनके नाम वताइये।

उत्तर—भगवतीसूत्र-शतक १५ मे, दूसरा चातुर्मास राजगृहीमें महावीर स्वामीने किया। इस चौमासेमें महीने महीनेके चार पारणे महावीर स्वामीने किये। पहिला पारण विजय सेठके द्वारा, दूसरा पारण सुदर्शन सेठके द्वारा, तीसरा पारण आनंद गाथापतिके द्वारा, चौथा पारण गोवहुल ब्राह्मणके द्वारा हुआ। इन चारोंने संसार परित किया। इन पांच जीवोंका जिक्र सूत्रमे है।

प्रश्न—वेदनीयकर्मकी स्थिति अन्तर मुहूर्तकी क्यों है ?

उत्तर—सकषायी आत्माको सातावेदनीयका बंधन जघन्य १२ मुहूर्तका होता है और अकषायी आत्माका साता वेदनीय का जघन्य बंधन दो समयका होता है। इस कारणसे वेदनीय कर्मकी स्थिति अन्तर मुहूर्तकी कही है, ऐसा मालूम होता है।

२५ दिवस पर्यन्त राजकोट विराज कर मुनिश्रीने जामनगर की ओर विहार किया।

राजकोटसे जामनगर—५३ मील

ग्राम—	मील
घंटेश्वर	५
रामपाड़ा	८
पडधरी	४
हडमतिया	८
जालिया	५॥
वनस्थली	६
अलियवाडा	७
हापा	४॥
जामनगर	५

जामनगर—पूर्व यह एक देशी रियासत थी। अब आधुनिक सर्वसाधनोंसे सम्पन्न नगर है। यहां श्रीसंघने अत्यन्त उत्साहके साथ स्वागत किया। १६ व्याख्यान दिये। मुनिश्रीके

शास्त्रीय ज्ञान प्रभावपूर्ण व्याख्यानोंसे प्रभावित होकर जाम-नगर श्रीसंघने चातुर्मासार्थ विनती की। मुनिश्रीने धर्मध्यानकी योग्य स्थली समझ कर स्वीकृति प्रदान की।

वर्षावासके दिवस दूर थे अत: मुनिश्रीने पोरबन्दरकी ओर विहार किया। पोरबन्दर काठियावाड़का बंदरगाह है।

जामनगरसे पोरबन्दर—८७ मील

ग्राम—	मील—
चेला	८
हरिपुर	६
लालपुर	६
नानुखडबु	६
बटाला	६
धापा	४
जामजोधपुर	६
बालवा	५
काठकोरा	५
तलसाई	६
बोरडी	४
राणावास	६
वनाणा	४
पोरबन्दर	६

जामनगरसे पोरबन्दरके इस लंबे विहारमें ग्रामीण जनताने मुनिवरोंके उपदेशसे अनेकों बुराइयों तथा व्यसनोंका परित्याग किया। पोरबन्दर श्रीसंघने भी मुनिश्री के आगमनके समाचार से प्रसन्नता व्यक्त की। अनेक स्त्री-पुरुष बहुत दूरतक स्वागतार्थ उपस्थित थे। पोरबन्दरमें मुनिवरोंके सोलह व्याख्यान हुए। आषाढ़ कृष्ण ६ शुक्रवारको आपने पुनः चातुर्मासार्थ जामनगर की ओर विहार किया। पोरबन्दर महात्मा गांधीका जन्मस्थान होनेसे समग्र भारतमें प्रसिद्ध है।

पोरबन्दरसे जामनगर—८३ मील

ग्राम—	मील—
वरवरला	८
नागकू	६
पाछतर	५
भाणवड़	८
वेरार	६
गोप	८
नवो टिम्बो	१०
लालपुर	५
हरिपुर	७
चेला	६
जामनगर	८

जामनगर चातुर्मास

मुनिवरोंके आगमनके समाचारसे जामनगर संघ बहुत हर्षित हुआ। सैकड़ों स्त्रीपुरुष स्वागतार्थ उपस्थित थे। मुनिगण ओम रोड पर स्थित जैन उपाश्रयमे विराजे। उपाश्रय छोटा था और जनता बहुत अधिक उपस्थित होती थी अतः जनताको खडा ही रहना पडता था। लोंकागच्छका उपाश्रय काफी विशाल था परन्तु उसके लिये स्थानीय संघमें झगडा चल रहा था। मुनिश्रीने लोगोंको बहुत समझाया, परन्तु वे समझते ही न थे। अत' आपको सत्याग्रहका रास्ता अपनाना पड़ा। आपने प्रवचन देना बन्द कर दिया। परिणामतः सारे संघमें हलचल मच गई। बहुत वादविवादके पश्चात् उनमें एकता स्थापित हो गई और श्रीसंघमें सर्वत्र आनन्द ही आनन्द व्याप्त हो गया। दूसरे दिन से लोंकागच्छके उपाश्रयमें प्रवचन होने लगे। पर्यूषण पर्वके प्रसंग पर बहुत धर्मध्यान हुआ। व्याख्यानोंमें प्रतिदिन तीन हजारसे अधिक स्त्रीपुरुष एकत्रित होते थे। स्थानीय संस्थाओं तथा बाह्य संस्थाओंके लिये अच्छी मात्रामें चंदा एकत्रित हुआ।

ता० ५-९-१९४९ भाद्रपद शुक्ला ९ गुरुवारसे ११-९-१९४९ भाद्रपद शुक्ला १५ तक शान्ति-सप्ताहका आयोजन किया गया जिसमें नरनारियोंने अखण्ड शान्तिका जाप किया। सप्ताह पूर्ति के दिवस चार सौ आयंबिल, १०० उपवास, ५० तेले हुए। जामनगरमें इस प्रकारका यह प्रथम उत्सव था।

आनन्द, प्रेम तथा तपत्यागके साथ यह चातुर्मास समाप्त हुआ और मुनिश्रीने गोंडलकी ओर विहार किया।

जामनगरसे गोंडल—१३०॥ मील

ग्राम –	मील—
हापा	५
अलियवाडा	२
झामोला	४
खिलोस	८
वेगाजा	४
हरियाणा	४
बालाचडी	४
जोडिया बंदर	८
लखतर	७
ध्रोल	५
सहियारा	६
देवालिया	६
पडधरी	३
सरपदड	६
नगरपिपल्या	८
वडाला	६
कालावड़	६

ग्राम—	मील —
शीशाणा	७
नीकावा	३
वडाला	६
हडमताला	१०
कोहीथल	१॥
ऊनीड़ा	६
गोंडल	५

जामनगरसे गोंडल तक इस दूरवर्ती विहारमें कालावड़, नीकावा, पडधरी आदिमे मुनिवरोंके अनेक व्याख्यान हुए तथा बहुत धर्मोद्योत हुआ। ग्रामीण जनता आपके उपदेशोंसे बहुत प्रभावित हुई। गोंडलमें मुनिश्री ११ दिवस तक विराजित रहे तथा ग्यारह व्याख्यान दिये। पूज्य पुरुषोत्तमजी म० ठाणा ३ से पधार गये थे। खूब ठाठ रहा।

गोंडलसे जूनागढ—४१ मील

ग्राम —	मील—
जामवाड़ी	३
वीरपुर	७
जेतपुर	८
जेतलसर जंकशन	४
गुदाला	४

ग्राम—	मील —
धोराजी	४
तोरणिया	५
वडाला	७
जूनागढ	७

जूनागढ—प्रसिद्ध श्वेताम्बर तीर्थ है। जैन संघका अच्छा प्रभाव है। मुनिश्री के पधारनेसे बहुत त्याग-प्रत्याख्यान हुए। यहाँ वकील जेठालाल प्रागजीकी भक्ति बहुत सराहनीय थी। उन्होंने होली चातुर्मासके अवसर समस्त तपस्वी बंधुओंको अपने घर पारण करवाया तथा बहुत लाभ लिया। इस अवसर पर ७०० आयंबिल हुए थे।

जूनागढसे वेरावल—७३ मील

ग्राम—	मील—
जोशीपुरा	१
प्रासवो	४
वगडु	८
मेंदरडा	६
अजाब	७
केशोद	६
सिंगरोली	८
मांगरोल बंदर	८

ग्राम—	मील—
अरण्या	५
चोवाड़	५
आदरड़ी	६
वेरावल	६

मांगरोल यह काठियावाड़का बन्दरगाह है। मुनिश्री यहां यहां १५ दिवस पर्यन्त विराजित रहे। बहुत धर्मोद्योत तथा त्याग-तपस्या हुई। यहां मुनिश्रीके तत्त्वावधानमें महावीर जयन्ती उत्सव खूब धूमधामसे मनाया गया। उसी दिन सर्व-संघका संयुक्त प्रीतिभोज हुआ।

वेरावल--वेरावल आगमनसे स्थानीय संघ बहुत हर्षित एवं प्रसन्न था। वैशाख कृष्णा अमावस्याको संघने वेरावल चातुर्मास करनेकी बहुत आग्रह भरी विनती की। मुनिश्रीने कृपा करके द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावके अनुसार चातुर्मासकी स्वीकृति प्रदान की।

चातुर्मासके दिन अभी दूर थे। अतः मुनिश्रीने कुछ समयके लिये वेरावलके आसपासके क्षेत्रकी ओर विहार किया।

वेरावलसे दीव और दीवसे वेरावल—४९ मील

ग्राम—	मील—
प्रभास पाटण	२
आजोरा	४
गोरखमंडी	५

ग्राम—	मील—
प्राची	५
अरणोज	६
घाटवड	५
हडमतिया	६
उना	४
प्रागतीर्थ	४
घोघला	६
दीव	१

प्रभास पाटण—सौराष्ट्रका प्रसिद्ध वैभवशाली नगर था राजा जयसिंहके समयमें यह नगर अपनी सम्पदा और वैभवके लिये समस्त देशमें प्रसिद्ध था।

घोघला और दीव आदि पोर्चुगीज वस्तियाँ है। दीवमें मुनिगण २८ दिन विराजित रहे। बहुत धर्मोद्योत हुआ। चातुर्मासके दिवस निकट थे अत मुनिश्रीने पुनः वेरावलकी ओर उसी मार्गसे विहार किया।

वेरावल चातुर्मास

संवत् २००४ का यह चातुर्मास जामनगर चातुर्मासके सदृश ही बहुत सफल रहा। यहा भी शान्ति सप्ताहका आयोजन कियो गया था जिसमें सहस्रों व्यक्तियोंने भाग लिया। पर्यूषणके अवसरपर अनेक पारमार्थिक सस्थाओंके लिये चंदा एकत्रित

ग्राम—	मील—
वडाल	६
चेतलसर	१०
जेतपुर स्टेशन	४॥
वावडी	८
वडिया	५

वडिया —मुनिवरोंके वडिया आगमनके समाचारसे वडिया निवासी वहुत प्रसन्न हुए। मुनिगण भाद्र शुक्ला १५ को घडिया पहुँचे। सैंकड़ों व्यक्ति स्वागतार्थ सम्मुख आये थे। वडिया नरेशकी भक्ति वहुत सराहनीय रही। उन्होंने अपने महल भी आहारार्थ आनेके लिये निवेदन किया था। वडियामें जैन हाई स्कूलके लिये चन्दा एकत्रित हुआ था जिसमें सेठ केशवजी मौनजी खेताणीने ५१ हजार रुपये प्रदान किये और वडिया नरेशने दो लाख रुपये। चातुर्मास समाप्त हुआ। भींगे नयनोंसे संघने मुनिवरोंको भावनगरकी ओर विदा किया।

वडियासे भावनगर—२२४ मील

ग्राम—	मील—
देवली	४
सुल्तानपुर	४
देवडी	६
हडाला	७

ग्राम—	मील—
हामापुर	६
धारी	८
जर	६
चलाला	४
देवराजी	६
अमरेली	८
माछीयाला	६
चितल	५
खिजडियो जंकशन	५
लाठी	८
भुरकिया	६
दामनगर	४
भेसाणा	८
लीलिया	४
भैजलडी	३
सावर कुंडला	७
बाढडा	६
गोरडका	६
चिजपडी	४
वडाल	५
उमडिया बंदर	८

ग्राम—	मील—
महुआवदर	२
भाद्रोड	७
ओथा	४
बोरडा	७
पहवी	४
तलाजो	६
त्रापज	८
तणासा	६
भडास्या	५
बुधेल	८
भावनगर	६

वडियासे भावनगरके इस लंबे विहारमें मुनिवरोंके कहीं २ २. ३. ४, ५ व्याख्यान हुए तथा अनेकों प्रतिष्ठित व्यक्ति संपर्क में आये। अमरेली, लाठी दामनगर आदिके श्रावकोंकी भक्ति सराहनीय रही।

सावरकुडलामें पूज्य प्राणलालजी म०, तपस्वी रतीलालजी म०. तपस्वी जगजीवनजी म०, जयन्तीलालजी म० ठाणा ५ से तथा महासती श्री उजमबाई ठाणा १४ से विराजमान थीं। माघ शुक्ला १३ को यहाँ तीन बहिनोंने भागवती दीक्षा अंगीकार की थी। पूज्यश्रीके आग्रहसे मुनिगण २३ दिन तक वहीं रहे। अत्यन्त प्रेम रहा।

भावनगर चातुर्मास

फाल्गुन शुक्ला ११ रविवारको मुनिगण भावनगर पहुंचे। मुनिश्रीको बवासीरसे बहुत वर्षोंसे कष्ट हो रहा था अतः उसका आपरेशन करवाया गया। आपरेशनके दोषका प्रायश्चित चार मासका लिया। चातुर्मासके दिवस निकट थे अतः श्रीसंघ ने भावनगर ही चातुर्मास करनेकी विनती की। भावनगर संघ मे बहुत वर्षोंसे आपसमे वैमनस्य हो रहा था। मुनिश्रीके उपदेशसे उनका वैमनस्य मिट गया और सब एक सूत्रमे आबद्ध हो गये।

पर्यूषण पर्वके अवसर पर बहुत तपस्या हुई तथा अनेक संस्थाओंको आर्थिक सहायता दी गई।

यहांके संघके इतिहासमे यह चातुर्मास बहुत महत्त्वपूर्ण रहा। इसी चातुर्मासमें मुनिश्रीको सम्प्रदायकी ओरसे गणावच्छेदकका पद दिया गया।

चातुर्मास समाप्तिके पश्चात् मुनिश्री ने अहमदाबादकी ओर विहार किया।

भावनगरसे अहमदाबाद—२२३ मील

ग्राम —	मील—
वडवा	१
वरतेज	६
खोडियारमाता	४

ग्राम—	मील—
सिहोर जंकशन	५
सोनगढ	८
कुम्भण	१०
पालीताणा	४
घेटी	७
मानगढ	३
पखडी	३
धामेल	५
दामनगर	४
ढसा जंकशन	६
ढसा	२
गुदाला	६
उगामेडी	६
टाटम	५
बोटाद	१०
हलधर	४
पालीयाद	८
सरवा	६
विछिया	७
सरवा	७
पालीयाद	६

ग्राम —	मील—
उमराला	६
राणपुर	७
नागनेश	४
बागड	७
धंधुका	७
खडोल	४
फेदर	६
गुंदी	१०
कोरगागड	८
भायला	१०
बावला	६
मोरैया	८
सरखैज	७
अहमदाबाद	७

भावनगरसे अहमदाबाद तकके इस लंबे विहार-मार्गमें मुनिवरोंके अनेकों प्रवचन हुए जिससे बहुत धर्मोद्योत हुआ। कही दो, कही तीन और कही चार-पांच दिनतक रहना हुआ। जहां भी मुनिश्री पधारे वहां आपके त्यागमय जीवनकी जनता पर छाप पडी। इस विहार मार्गमें सोनागढ, पालिताणा व दामनगर के नाम उल्लेखनीय है। सोनागढमें मुनिश्री कानजीने अपना आश्रम खोल रखा है तथा अपनी विविध प्रवृत्तियां प्रारंभ कर

रवी है। पालिताणा तो समस्त जैन संसारमें प्रसिद्ध है। प्रति
वर्ष लाखों व्यक्ति शत्रुंजय तीर्थके यात्रार्थ आते है। रामनगर
श्रावक श्रद्धालु तथा अपने धर्ममे दृढ है।

अहमदाबाद

अहमदाबाद- भारतका प्रमुख औद्योगिक नगर होनेसे य
समस्त देशमें प्रसिद्ध है। वस्त्र-व्यवसायमें इस नगरके समा
अन्य कोई औद्योगिक शहर नहीं है। यह तो इसका एक रूप
परन्तु दूसरे रूपमें यह जैन नगर है। यहा जैनोंकी सख्या तथ
जैन चैत्यालय जितनी मात्रामे हैं उतने समस्त भारतमें नहीं है
प्रमुख उद्योगपति भी प्राय जैन ही है।

मुनिश्रीके आगमनके समाचार पूर्व ही पहुच चुके थे। आ
मदाबाद पहुचकर मुनिश्री पू० ईश्वरलालजी म० तथा प० मुनिश्र
प्रतापमलजी म० सा० से मिले।

चातुर्मासके दिन निकट थे अत अहमदाबाद सघने अहमद
बाद ही चातुर्मास करनेकी विनती की। मुनिश्रीने द्रव्य, क्षेत्र
काल, भावके अनुसार स्वीकृति प्रदान की। चातुर्मासमें कुछ
दिन शेष थे अत मुनिश्री छिपापोल, शाहीबाग, मणिनग
एलिसब्रिज, शाहपुर आदि उपनगरोंमें कल्पानुसार विचरते रहे

आषाढ कृष्णा ८ को मुनिश्री चातुर्मासार्थ देहली दरवाजे
बाहर सुबोध पुस्तकालयमे पधारे। श्रीसघने जैसिंग भाईमनस
के सम्मुख एक विशाल पाडाल निर्मित करवाया। जिसमे साहू

व्यक्ति आरामसे बैठ सकते थे। पर्यूषण पर्व पर हजारों स्त्रीपुरुष व्याख्यान श्रवणार्थ उपस्थित होते थे। तप-त्याग, धर्मध्यानके साथ यह चातुर्मास आनन्दपूर्वक व्यतीत हुआ। अनेक परमार्थिक संस्थाओंके लिये अच्छा चंदा एकत्रित हुआ।

चातुर्मासमें मुनिश्रीके सम्पर्कमें नगरके प्रमुख व्यक्ति आये। श्री कस्तूरभाई लालभाई, मणिभाई आदि बहुधा आते जाते थे। अहमदाबादके दैनिक संदेश पत्रमें समय २ पर समाचार प्रकट होते ही रहते थे। जैन दिवाकर पूज्य मुनिश्री चोथमलजी म० की आज्ञासे मुनिश्रीने अपना सौराष्ट्र-विहार जनकल्याणके साथ समाप्त कर राजस्थानकी ओर किया।

निःस्वार्थ भावसे पैदल विहार करते हुए इन मुनियोंने जो सेवा की वह जैन मुनियोंके कल्याणमय जीवनको गौरवान्वित करनेवाली है।

पत्र-व्यवहारके पते

(यु० पी०)

महावीर भवन—चांदनी चौक	देहली
सन्मति ज्ञान पीठ—लोहामण्डी	आगरा
जैन स्थानक—मानपाडा	,,
जैन श्वे० स्था० संघ (जैन स्थानक रुक्मणी भवन)	कानपुर
जगजीवन शिवलाल—तिलियाना	,,
बुधसेन जी जैन, प्रेम नगर शिशामउ पोस्ट आफिस के पास	,,
बजीरचन्द जी जैन १०६।३७४ बी रोड गांधी नगर	,,
लाला मुन्नालाल जी जैन —पेट्रोल पंप	उन्नाव
अतरसेन जैन (विक्रम कॉटन मिल्स) गनेशगंज	लखनऊ
प्रवीण एण्ड कम्पनी - अमीनाबाद	,,
इन्द्र चन्द्र कम्पनी गोल दरवाजा चौक	,,
ओरना मेण्ट हाउस - चौक	इलाहाबाद
पार्श्वनाथ विद्याश्रम—हिन्दी यूनिवर्सिटी	बनारस
जगजीवन एम पटेल खुला नाला	,,
मोहन लाल लल्लु भाई चौक	

बिहार : जिला पटना

मुल्तान मल जी ओसवाल (डहरी ओनसोन)	डालमिया नगर
चिमन लाल जे० देसाई (जैन मन्दिर) चौक	पटना सीटी
शान्ति लाल एण्ड कम्पनी—मीठापुर	पटना

कन्हैया लाल जी श्री श्री माल—श्वे० धर्मशाला राजगिर
लक्ष्मी चन्द जी संचेती बिहार शरीफ
पावापुरी तीर्थ (श्री जैन श्वेताम्बर भण्डार) पो० पावापुरी
धीरज लाल भाई नागरदास साह—ओटो मोवाइल कं० राँची

जि० हजारीबाग

सेठ रवजी भाई काली दास भाई बरका काना
जयन्तीलाल एण्ड को० टुन्डी रोड गिरिडीह
श्वे० सोसायटी—श्वे० कोठी, पो० पारसनाथ मधुवन
श्वे० कोठी - पारसनाथ इसरी
दि० जैन धर्मशाला पारसनाथ „
रतीलाल हीराचन्द—झूमरी तलैया कोडरमा
हिम्मतलाल बाबालाल मेहता रामगढ़
सेठमणी लाल राघव जी भाई वेरमो
नवलचन्द हुकम चन्द „
अमृतलाल मोहन जी „

जि० मानभूम

वी० पी० जैन खरखरी कोल्यारी
देवचन्द अमोलखचन्द मेहतो-मेहता हाउस कतरासगढ़
मुरारजी आर० दोसी „
नवीनचन्द रेवा शंकर मेहता फार्म-उमिया शंकर केशव जी
मेहता—मु० करकेन्द बाजार--पो० कुसुन्डा
सेठ उमिया शंकर केशव जी झरिया

मगनलाल प्राग जी डोसी — झरिया
सेठ धीर जी रतनसी संघवी — ,,
सेठ परतीराम सतीशचन्द्र जैन अग्रवाल मेन रोड — ,,
कांतीलाल कोठारी—गौशाला बाजार — पो० सीन्दरी
सेठ दुलीचन्द भाई जैन--लकडचाल — भागा
खोखाणी जया शंकर कालीदास - मेहता हाउस — धनबाद
सेठ रायचन्द गोविन्दजी संघवी — भजूडीह
मेहता जवेरचन्द भाई — महोदा
सेठ वाडीलाल उत्तम चन्द भाई कच्छी जोगटा कोलियरी
पो० सीजवा
सेठ नवनीत लाल अमृतलाल पारेख कोलडिपो — गोविन्दपुर
सोमचन्द कुंवर जी — पाथरडी
छगनलाल दामोदर पारेख—राँची मार्केट — अनाडा
सेठ श्रीचन्द छगनमलजी भुरा सुगनचन्द दत्तस्ट्रीट — पुरुलिया
पन्नालाल मोहनलाल डांगा — ,,
दुर्लीचन्द डाह्या भाई गाधी — चक्रधरपुर
पटेल दीपचन्द भाई वाला चन्द — चाईबासा
लक्ष्मीचन्द पुनमचन्द लूणावत--पो० रागाडिह मु — रांगाडिह

संथाल परगना

मगनलालजी सरावगी सेठ नन्दलाल कानन--चौमपास टाउन
देवघर — वैजनाथ धाम

कन्हैया लाल जी श्री श्री माल--श्वे० धर्मशाला राजगिर

लक्ष्मी चन्द जी संचेती विहार शरीफ

पावापुरी तीर्थ (श्री जैन श्वेताम्बर भण्डार) पो० पावापुरी

धीरज लाल भाई नागरदास साह—ओटो मोवाइल कं० राँची

जि० हजारीबाग

सेठ रवजी भाई काली दास भाई वरका काना

जयन्तीलाल एण्ड को० टुन्डी रोड गिरिडीह

श्वे० सोसायटी—श्वे० कोठी, पो० पारसनाथ मधुवन

श्वे० कोठी - पारसनाथ इसरी

दि० जैन धर्मशाला पारसनाथ ,,

रतीलाल हीराचन्द—झूमरी तलैया कोडरमा

हिम्मतलाल वाबालाल मेहता रामगढ

सेठमणी लाल राघव जी भाई वेरमो

नवलचन्द हुकम चन्द ,,

अमृतलाल मोहन जी ,,

जि० मानभूम

वी० पी० जैन खरखरी कोल्यारी

देवचन्द अमोलखचन्द मेहता-मेहता हाउस कतरासगढ़

मुरारजी आर० दोसी ,,

नवीनचन्द रेवा शंकर मेहता फार्म-उमिया शंकर केशव जी मेहता—मु० करकेन्द बाजार--पो० कुसुन्डा

सेठ उमिया शंकर केशव जी झरिया

मगनलाल प्राग जी डोसी — झरिया
सेठ वीर जी रतनसी संघवी — ,,
सेठ परतीराम सतीशचन्द्र जैन अग्रवाल मेन रोड — ,,
कातीलाल कोठारी—गोशाला बाजार — पो० सीन्दरी
सेठ दुलीचन्द भाई जैन--लकडचाल — भागा
खोखाणी जया शकर कालीदास - मेहता हाउस — धनवाद
सेठ रायचन्द गोविन्दजी संघवी — भजूडीह
मेहता जवेरचन्द भाई — महोदा
सेठ वाडीलाल उत्तम चन्द भाई कच्छी जोगटा कोलियरी — पो० सीजवा
सेठ नवनीत लाल अमृतलाल पारेख कोलडिपो — गोविन्दपुर
सोमचन्द कुंवर जी — पाथरडी
छगनलाल दामोदर पारेख—रांची मार्केट — अनाडा
सेठ श्रीचन्द छगनमलजी भुरा सुगनचन्द दत्तस्ट्रीट — पुरुलिया
पन्नालाल मोहनलाल डांगा — .
दलीचन्द डाह्या भाई गाधी — चक्रधरपुर
पटेल दीपचन्द भाई वाला चन्द — चाईबासा
लक्ष्मीचन्द पुनमचन्द लूणावत--पो० रांगाडिह मु — रांगाडिह

संथाल परगना

मगनलालजी सरावगी सेठ नन्दलाल कानन--चोमपास टाउन
देवघर — वैजनाथ धाम

ओनरेरी मजिस्ट्रेट (अशोककुमार किरणकुमार जैन) नाहार पार्क दुमका

जिला— (भागलपुर)

सेठ जगजीवन विट्ठलजी मावाणी (एम के ब्रादर्स) भागलपुर

जमशेदपुर : जि० सिंहभूम

सेठ नरभयराम हंसराज कामाणी—ठि कामाणी मेन्सन् पो
भाईचन्द गोपालजी पंचमिया (न्यू बाम्बे स्टोर मेन रोड)
उत्तमचन्द कालीदास—ठि साकची बाजार पो० साकची
मदनचन्द मोहनलाल गोलछा पो जुगसलाई बाजार
जेठमल हणूत मल वोहरा ,,

बंगाल : जिला वर्द्धवान

अमृतलाल भाई (फार्म—रतनसी एन्ड सन्स कं०) बराकर
शान्तिलाल एन्ड कं०—कोटकोला नियामतपुर
तुलसीदास भाई गोकुलदास—बाजार सीतारामपुर
धनजीभाई भाईचन्दभाई—बोम्बे स्टोर बर्नपुर
मगनलाल एस० डोसी इंजीनियर ,,
वर्द्धमान गोकुलदास (पंडित ब्रादर्स) आसनसोल
आर० डी० मेहता एन्ड को० जी० टी० रोड ,,
निहालचन्द शामजीभाई (आर० सी० मेहता—बडाबाजार) रानीगंज
हिम्मतलाल गोपालजी पतीरा (राधारमण रोड) ,,

दलपतराम प्रभुदास (रामजीयानी ब्रादर्स--विजयतोरण) वर्द्धमान
जगजीवनदास अग्रवाल जवेरी-वड़ाबाजार ,,
जीवनमलजी भूतोडिया-वड़ाबाजार ,,
मोहनलाल के० दलाल-पो बहुला मु० जामदाबाद कोल्यारी

जि० हावड़ा

श्री रामपुरिया काटन मिल मेनेजर श्रीरामपुर
आर सी एस जैन रवर मील (ज्वालाप्रसाद लेन) लिलुआ

कलकत्ता

श्वेताम्बर गुजराती स्थानकवासी जैन सभा २७ पोलोक स्ट्रीट
श्री फूसराजजी वच्छावत २० वालमुकुन्द मक्कर रोड
श्वे० स्थानकवासी जैन सभा १८६ क्रास स्ट्रीट
मुल्तानमल किशनलाल कांकरिया ७१२ वाबुलाल लेन

(जि० वीरभूम)

चन्द्रसिंहजी कोठारी वोलपुर
सूरजमलजी सुराणा (वस्त्र भंडार) ,,
उमरावमलजी कानमलजी लूणावत ,,
मूलचन्दजी प्रतापमलजी सरोठी गुसकरा
भैरुदान तोलाराम चोथरा (राईस कुर्ची घाटा मिल) अहमदपुर
हीरालाल रामकुंवार आंचलिया सैंथिया
मेघराज लालचन्द पारख ,,
भोजराज हरखचन्द पारख ,,

शोभाग चन्द कपुर चन्द सचेती — सैंथिया

धरमचन्द रैचतमल (जनरल मर्चेन्ट्स एन्ड कमीशन एजेन्ट्स) — मल्हारपुर

मंगलचन्दजी छाजेड — ,,

खेवरचन्दजी तोलारामजी बोथरा — रामपुरहाट

वनेचन्द धनराज — मोराडोई

भगवानजी मोतीचन्द भाई (तमाखु व्यापारी) — सींवडी

छोटुलालजी सुराणा — लोहापुर

पूनमचन्दजी सुराणा, रंजन बाजार — दुवराजपुर

रूपचन्दजी इन्द्रमलजी बरडिया — नलेट्टी

अमोलकचन्द रतनचन्द कुम्मठ — सागर दिघी

(जि० मुर्शिदाबाद)

उदयचन्दजी रिखबचन्दजी गेलड़ा — जियागंज

सुरपत सिंहजी दूगड़ — ,,

चुनीलालजी भंवरलालजी सीनेमावाला — खगड़ा

खुमानचन्दजी मरोठी — खगडा

प्रेमराज खटोड (अमर सील्क स्टोर) — ,,

दीपचन्दजी पारसमलजी सूराणा — वेलडांगा

जि० मिदनापुर

मोतीलालजी मालू फाटक बाजार — खड़गपुर

दीपचंदजी पुखराजजी बोहरा मलीचा रोड, खरीदाबाजार — ,,

छबीलदास भाई चादनी चौक — खडगपुर

हुलाशचदजी बोथरा — मु० कोलाघाट,

विहार मार्ग प्रदर्शन

देहली से आगरा—१३० मील

——:o:——

मील	गांव का नाम	स्थान	घर
	दिल्ली	चांदनी चौक	
५	मोगल	धर्मशाला	१०—१५
६	वेदरपुर	स्कूल	
७	अजरोंदा	धर्मशाला	
४	वल्लभगढ	जैन मन्दिर	१०—१५
८	प्रथला	धर्मशाला	
६	पलवल	जैन मन्दिर	१०—१५
६	मित्राई	राम द्वारा	
१०	होड़ल	अग्रवालों की धर्मशाला	
८	कोशीकलां	जैन धर्मशाला	१०—१५
६	छत्ता	धर्मशाला	
७	अकवरपुर	स्कूल	
६	जेता		
६	वृन्दा वन	चांदमल जी मारवाड़ी	१

६	बिड़ला मन्दिर	धर्मशाला
२	मथुरा	श्वेताम्बर धर्मशाला
५	औरंगाबाद	धर्मशाला
१०॥	फरह	स्कूल
५	रहपुरा	स्कूल
१०	सिकन्दरा	जैन मन्दिर
५	आगरा	लोहामण्डी

आगरा से कानपुर—१८० मील

	आगरा		
१४	एतमादपुर	जैन धर्मशाला	१४—१५
१४	फिरोज़ाबाद	छदामल प्यारेलाल जैन धर्मशाला	
६	मक्खनपुर	बगीची	
७	सिकोहाबाद	जैन मन्दिर	१० १२
४॥	मंटाई	उपाध्यायजी का मकान	
६॥	सिरोंज	जैन मन्दिर के पास	१०—१५
६	माटौली	धर्मशाला	
१०	मैनपुरी	दिगम्बर जैन धर्मशाला	
१०	भोंगांव	,, ,, मन्दिर	
१४	नबीगंज	पी० डब्ल्यू० डी० का बङ्गला	
८	छिबरामऊ	धर्मशाला	

६	सोहरामऊ	ब्राह्मण के घर
६	नवाबगंज	धर्मशाला
१२॥	उन्नाव	धर्मशाला
५	विश्रांति भवन	,,
६	कानपुर	लाटीमुहाल

कानपुर से इलाहाबाद—१२१ मील

	कानपुर	लाठीमुहाल
६	चकेरी	एरोड्रोम (लाला दुर्गा प्रसाद जी जैन) ५-६
६॥	महाराजपुर	डाक बङ्गला
४	सरसौल	हाई स्कूल
११	औंग	,,
१०	रेवारी	,,
३	मलवा	,,
६	फतेहरपुर	ठाकुर का मन्दिर
१	बग़ीची	कृष्णानन्दजी सरस्वती
६	उसरेन्ना	चक्कीवालों की
३	थरीयाव थाना	थाना में
८	खागा-कटोधन	ओइल मिल (सेठ रामदास)
४	रायबरेरी वालों की बग़ीची	
७	अजूहा	मन्दिर

५	सेनी	मन्दिर	
६	ककोड़ा	,,	
७	मुरतगंज	धर्मशाला	
५॥	महागाम	,,	
१०	मुडेरा	धर्मशाला(सेठ वंशीलालजी)	
११॥	सलम सराह	महारानी भवन	
४	इलाहावाद	दिगम्बर धर्मशाला	६

इलाहाबाद से बनारस— ८० मील

	इलाहावाद	दिगम्बर धर्मशाला
६	झूसी	व्रह्मचारी आश्रम
७	हनुमानगज	धर्मशाला
२	जगतपुरा	स्कूल
६	हडिया	शिवमन्दिर
५	वगोद	थाना
११	गोपीगज	धर्मशाला
६	माधोसिंह	,,
८॥	वावू सराई	स्कूल
५	रूपा पुरा	,,
१०	सहायावाद	,,
५	कमछा	मोहन भाई का बङ्गला
२१	वनारस	वीवीहटिया

बनारस से ससराम—७० मील

	बनारस	बीबीहटिया	
३	तेल की टाकी	"	
५	मुगलसराय	प्रेमजी कच्छी का मकान	४—५
६॥	चन्दौली	स्कूल	
१०॥	कर्मनाशा	शिवमन्दिर	
६	दुर्गावती नदी	डाक बङ्गला	
६	मोहनिया	"	
६	पुरी बाबा की झोपड़ी आश्रय		
८	कुदरा-सहाजाबाद	डाक बङ्गला	
८	शिवसागर	मन्दिर	
६	ससराम	धर्मशाला	४ ५

ससराम से झरिया १७० मील

	ससराम	धर्मशाला	
४॥	करौंदिया	स्कूल	
७	डालमिया नगर	जैन मन्दिर	३०
४	बारून	स्कूल	
७	प्रीतम नगर	मन्दिर	
७	औरङ्गाबाद	धर्मशाला	३—४
८	शिवगंज	बाबा की बग़ीची	
७	मदनपुर	स्कूल	

५	आमास	डाक बंगला	
१०	शेरघाटी	थाना	
५	पत्थरगटी	मन्दिर	
३	डोभी	महंत जी के आश्रम	
२	घसडी	मन्दिर	
६	बाराचट्टी	धर्मशाला	
१॥	काहूदाग	डाक बंगला	
७	भलुआचट्टी	हाथीखाना	
१॥	दनुआ	स्कूल	
७	चौपारण	जैन धर्मशाला	१०—१२
६	,,	स्कूल	
६	बरही	डाक बंगला	
६	फरियादपुर	स्कूल	
१०॥	बरकट्टा	डाक बंगला	
५	गोरहर	स्कूल	
१०	बगोदर	डाक बगला	
१३	डुमरी	,,	
२	इसरी	जैन धर्मशाला	८—६
७	मधुवन	मन्दिर	
३	गधर्वनाला	धर्मशाला	
४	जलमन्दिर	,,	
१०	तोपचांची	डाक बंगला	

३	चीरुडी	स्कूल	
७	कतरासगढ़	उपाश्रय	३०—३५
५	करकेन्द	स्कूल	४—५
४	झरिया	उपाश्रय	१६०

झरिया से कलकत्ता १८० मील

३	धनसार	सागर भवन	५
१	धनबाद	मेहता हाउस	८
५	लक्ष्मी नगर	बंगला कोठी	
२	गोविन्दपुर	बनारसीदास भवन	२०
८	चड़वा	डाक बंगला	
८	मुगमा	इस्टकपारा कोलायरी	२
५	बराकर	मारवाड़ी स्कूल	३००
३	न्यामतपुर	शान्ति (भवन) एण्ड कं०	५
७	आसनसोल	गुजराती स्कूल	४०
६	न्युसत ग्राम	शिवजी धर्मसी कोलयारी	२
६	रानीगंज	अग्रवाल धर्मशाला	६-४००
५	कजोड़ा	पेटरोल पंप	१
८	फरीदपुर स्थान थाना		
४	खरासोल	स्कूल	
६	पानागढ़	पंजाबी कपूरचंदजी का भवन	१
४	मिल्ट्री केन्टीन	नानकचंदजी अग्रवाल की कोठी	३
१३	गलसी	सरकारी स्कूल	१

५	अहमदपुर	राइस कुचिघाटा मिल	
४	बतासपुर	स्टेशन	
५	सैंथिया	जैन मन्दिर	५

सैंथिया से दुमका—१७ मील

६	गदाधर	स्टेशन	
६	मलारपुर	राज भवन	
८	रामपुर हाट	बोथरा भवन	
६	सुडीचुहा	एरोड्राम	
७	सरस डंगाल	पुलिस चौकी	
८	शिकारीपाड़ा	बरामदा	
४	बरमसिया	स्कूल	
५	काठीजोड़िया	बरामदा	
७	दुमका	अग्रवाल धर्मशाला	१०

दुमका से देवघर—४० मील

४	मारूमोड़	अग्रवाल भवन	
११	जरमुण्डी	ठाकुरवाड़ी	
६	शहरा	बरामदा	
८	घोरमारा	स्कूल	
३	बसडिया	बरामदा	
८	देवघर (वैद्यनाथधाम)	कच्ची धर्मशाला	११

देवघर से शिखरजी—५६ मील

५	संग्राम लोडिया	नई स्कूल	

१०	बुढ़े	शिखरा मण्डप
७	जगदीशपुर	स्टेशन
६	महेश मुण्डा	,,
६	गिरिडीह	श्वे० धर्मशाला
८	बराकर	जैन मन्दिर
८	मधुवन (शिखरजी)	श्वे० कोठी

दुमका से चम्पापुरी—७३ मील

४	मारुमोड	अग्रवाल भवन
१२	नोनीहार	दुर्गा प्रसाद धर्मशाला
६	हसडिया	लायब्रेरी
७	राजापोखर	डाक बंगला
७	बोसो	अग्रवाल भवन
६	बाराहाट	बाजार
५	पुसिया	स्कूल
११	जगदीशपुर	धर्मशाला
४	फूलजोडिया	स्कूल
५	भागलपुर	दि० धर्मशाला
२	नाथनगर	कॉच मन्दिर
१	चम्पापुरी	श्वे० धर्मशाला

चम्पापुरी से पावापुरी—१३२ मील

१२	सुलतान गंज	नथमल भवन
५	घनघनिया	शिव मन्दिर

७	वरियादपुर	धर्मशाला
५	श्यामपुर	दुर्गा मन्दिर
६	खड़गपुर	राम मन्दिर
२	हमदाबाद	स्कूल
६	गयगट	डाक बंगला
७	लक्ष्मीनगर	बाजार
१०	मलयपुर	ठाकुरबाड़ी
७	काकन्दी	जैन धर्मशाला
७	सांवरिया महादेव	धर्मशाला
७	लछुवाण	जैन धर्मशाला
६	अलीगज	ठाकुरबाड़ी
६	आडाह	स्कूल
६	पकरी वराया	स्कूल
७	वार्गा वड़ीया	ठाकुरबाड़ी
७	नवादा	भवन
२	गुणीयाजी	श्वे० धर्मशाला
५	अमृत विघा	वट वृक्ष
६	पावापुरी	श्वे० धर्मशाला

पावापुरी से राजगृही—२३ मील

८	विहार शरीफ	श्वे० धर्मशाला
७	कुण्डलपुर	,,
२	नालन्दा	विश्व विद्यालय

७	राजगृह	श्वे० धर्मशाला	३

राजगृह से शिखरजी—१२८ मील

७	गीरीयक	स्कूल	
४	अमृत विघा	वट वृक्ष	
५	गुणियाजी	श्वे० धर्मशाला	
६	फूलमा	झाड तले	
५	फतेहपुर	कचहरी	
२	अकबरपुर	वाडी	
४	अन्दरवाडी	झाड तले	
५	रजोली	रजोली सगत	
७	विवार	डाक बगला	
४	ताराघाटी	बरामदा	
६	वन विभाग	बगला	
६	कोडरमा (झूमरीतिलैया)	मारवाडी धर्मशाला	६६
७	उरमा	चौकी	
७	बरही चट्टी	डाक बंगला	
६	करियादपुर	स्कूल	
११	बरकट्टा	डाक बगला	
५	गोरहर	स्कूल	
१०	बगोदर	शिव मन्दिर	
६	हसेला	स्कूल	

६	डूँगरी	डाक बंगला	
२	इसरी (पार्श्वनाथ)	श्वे० धर्मशाला	१
-	शिखरजी (मधुवन)	श्वे० कोठी	

इसरी से बेरमा—४६ मील

२	डूमरी	डाक बंगला	
१२	नवाडीह	,,	
१३	बेरमा	जैन उपाश्रय	२
३	फुसरी	अमृत भवन	
६	चन्द्रपुरा	भवन	
७	तेलमरचू	भवन	

झरिया से तेलमरचू—१९ मील

४	फरकेन्द	स्कूल	
६	कतरासगढ़	उपाश्रय	३
५	खरखरी	बी० पी० जैन मन्दिर	१
४	तेलमरचू	शंकर भवन	

तेलमरचू से पुरुलिया—३७ मील

८	चास	स्कूल	
१०	पिंडरा झाड़ा	टीचर स्कूल	
५	फटाटर	बरामदा	
५	आई मड़ी	स्टेशन	
५	रगलोट	बगीचा	
४	पुरुलिया	करणी धर्मशाला	५

पुरुलिया से जमशेदपुर—५६ मील

६	कांटाडी	स्टेशन
१०	बलरामपुर	मारवाडी धर्मशाला
७	आदरडीह	स्कूल
८	चांडिल	मारवाडी धर्मशाला
६	कान्दर वेड़ा	स्कूल जंगली
७	अलीरवां का	वंगला
५	जमशेदपुर	जैन उपाश्रय

पुरुलिया से आसनसोल—५१ मील

६	केटार	स्टेशन
६	अनाडा	छगनभाई भवन
६	रुगनाथपुर	धर्मशाला
८	रामकानाली	स्टेशन
३	मुराडी	स्टेशन
१०	चरणपुर	बोम्बे स्टोर
३	आसनसोल	गुजराती स्कूल

रानीगंज से सैंथिया—४५ मील

८	प्योर केन्दा	कोल्यारी
८	पाडेश्वर	हाटतला
६	डुवराजपुर	आचलिया भवन
६	छिनपाई	चम्पालाल भवन

४	सिवड़ी	भगवानभाई भवन
७	रंगाईपुर	स्कूल
३	सैंथिया	जैन मन्दिर

सैंथिया से कलकत्ता—१९१ मील

१	चावल मिल	पन्नालाल बगीचा
८	मलारपुर	भादाणी भवन
८	रामपुरा हाट	बोथरा भवन
६	नलहट्टी	मारवाड़ी भवन
८	लोहापुर	भक्त भवन
८	सागर दिघी	मारवाड़ी हाउस
११	अजीमगंज	जैन धर्मशाला
१	जियागंज	जैन उपाश्रय
३	काठ गोला	जगतसेठ कोठी
१०	खगडा	सरोठी भवन
१४	वेलडागा	मारवाड़ी भवन
४	देहात	बरामदा
८	पलासी	आसुघोष दुकान
४	पनियाघाट	बरामदा
१०	वथवाडहरी	स्कूल
६	वाटेश्वर	,,
७	बहादुरपुर	सरकारी मकान मे
३	कृष्णनगर	सरकारी भवन मे

६	दीवनगर	स्कूल
६	शान्तिपुर	हाई स्कूल
१०	राणाघाटा	ठाकुरवाडी
७	चागदा	स्कूल
७	बीजना	स्कूल
८	जुट मील	गौरी शंकर मिल
६	सौदपुद	बेगुदिया काटन मिल
४	मोहमिया मिल	ओफिस
७	बेलगाछिया	दि० जैन मन्दिर
३	कलकत्ता	जैन उपाश्रय न० २७ }

जैन

टाटा (जमशेदपुर) से कलकत्ता—१७५ म

२	जुगसलाई बाजार	मारवाडी धर्मशाला
५	गोविन्दपुर	स्कूल
६	आसन वनि	स्टेशन
७	गालुड़ी	कच्छी कोठा
७	ग्राट शीला	मारवाडी धर्मशाला
६	नरसिंहगढ़	,,
१३	चुकोलिया	,,
८	पडिहाटी	डाक बगला
४	अमला तोला	स्कूल
६	झाड ग्राग	कमला स्टोर

१०	लोधा सूली	डाक बंगला
९	खेमा सोली	स्कूल
४	कलाई कुण्डा	मारवाड़ी पम्प
४	खरीदा बाजार	बोहरा भवन
२	खड़गपुर	अतिथि भवन
५	मोहनपुर	डाक बंगला
५	लक्ष्मणपुर	,,
६	हरीनो	स्कूल
५	डेवरा	डाक बंगला
१०	पांस कूडा	हाई स्कूल
१०	कोला घाट	बोथरा मेडी
७	वाग नान्द	स्टेशन
९	उलुबेड़िया	काली मन्दिर
९	नलपुर	स्टेशन
३	साकरैल	,,
१०	हावड़ा	सत्यनारायण धर्मशाला